

वैदिक ज्योतिष संस्थान (२७.)

VEDIC JYOTISH SANSTHAN (REGD.)

Reg. No. Bombay Public Trust Act

Vide Registration No. E-26475 (Mumbai)

121/44-D, Vishwakunj CHS., Sector-1, Charkop, Kandivali (W), Mumbai - 400 067.

Email : vjtvv1@gmail.com • www.vedicjyotishsansthan.com



गुरु पूर्णिमा महोत्सव

GURU PURNIMA MAHOTSAV

On Sunday, 21st July - 2019

Classes in Gujarati & Hindi Medium

Our Centers : Borivali (Sat.) • Malad (Sun.) • Borivali (Mon.)



भगवान श्री राम दरवार



रामायण के १०८ मनके



रघुपति राघव राजाराम । पतित पावन सीताराम ॥
 जय रघुनन्दन जय घनश्याम । पतित पावन सीताराम ॥
 भीड़ पड़ी जब भक्त पुकारे । दूर करो प्रभु दुःख हमारे ॥
 दशरथ के घर जन्मे राम । पतित पावन सीताराम ॥१॥
 विश्वामित्र मुनीश्वर आये । दशरथ भूप से वचन सुनाये ॥
 संग में भेजे लक्ष्मण राम । पतित पावन सीताराम ॥२॥
 वन में जाय ताड़का नारी । चरण छुआए अहिल्या तारी ॥
 ऋषियों के दुःख हरते राम । पतित पावन सीताराम ॥३॥
 जनक पुरी रघुनन्दन आये । नगर निवासी दर्शन पाये ॥
 सीता के मन भाये राम । पतित पावन सीताराम ॥४॥
 रघुनन्दन ने धनुष चढाया । सब राजों का मान घटाया ॥
 सीता ने वर पाये राम । पतित पावन सीताराम ॥५॥
 परशुराम क्रोधित हो आये । दूट भूप मन में हरषाये ॥
 जनक राय ने किया प्रणाम । पतित पावन सीताराम ॥६॥
 बोले लखन सुनो मुनि ज्ञानी । संत नहीं होते अभिमानी ॥
 मीठी वाणी बोले राम । पतित पावन सीताराम ॥७॥
 लक्ष्मण वचन ध्यान मत दीजो । जो कछु दण्ड दास को दीजो ॥
 धनुष तोड्य्या मैं हूँ राम । पतित पावन सीताराम ॥८॥
 लेकर के यह धनुष चढाओ । अपनी शक्ति मुझे दिखलाओ ॥
 छूवत चाप चढाये राम । पतित पावन सीताराम ॥९॥
 हुई उर्मिला लखन की नारी । श्रुतिकीर्ति रिपुसूदन प्यारी ॥
 हुई माण्डवी भरत के वाम । पतित पावन सीताराम ॥१०॥
 अवधपुरी रघुनन्दन आये । घर-घर नारी मंगल गाये ॥
 बारह वर्ष बिताये राम । पतित पावन सीताराम ॥११॥
 गुरु वशिष्ठ से आज्ञा लीनी । राजतिलक तैयारी कीनी ॥
 कल को होंगे राजा राम । पतित पावन सीताराम ॥१२॥
 कुटिल मंथरा ने बहकायी । कैकई ने यह बात सुनाई ॥
 दे दो मेरे दो बरदान । पतित पावन सीताराम ॥१३॥
 मेरी विनती तुम सुन लीजो । भरत पुत्र को गद्दी दीजो ॥
 होत प्रातःवन भेजो राम । पतित पावन सीताराम ॥१४॥
 धरनी गिरे भूप तत्काल । लागा दिल में शूल विशाल ॥
 तब सुमंत बुलवाये राम । पतित पावन सीताराम ॥१५॥
 राम पिता को शीश नवाये । मुख से वचन कहा नहीं जाये ॥
 कैकयी वचन सुनयो राम । पतित पावन सीताराम ॥१६॥
 राजा के तुम प्राण प्यारे । इनके दुःख हरोगे सारे ॥
 अब तुम वन में जाओ राम । पतित पावन सीताराम ॥१७॥
 वन में चौदह वर्ष बिताओ । रघुकुल रीति-नीति अपनाओ ॥
 आगे इच्छा तेरी राम । पतित पावन सीताराम ॥१८॥

सुनत वचन राघव हर्षाए । माता जी के मन्दिर आये ॥
 चरण कमल में किया प्रणाम । पतित पावन सीताराम ॥१९॥
 माता जी मैं तो वन जाऊं । चौदह वर्ष बाद फिर आऊं ॥
 चरण कमल देखूँ सुख धाम । पतित पावन सीताराम ॥२०॥
 सुनी शूलसम जब यह बानी । भू पर गिरी कौशल्यारानी ॥
 धीरज बंधा रहे श्रीराम । पतित पावन सीताराम ॥२१॥
 समाचार सुनि लक्ष्मण आये । धनुष बाण संग परम सुहाये ॥
 बोले संग चलूंगा राम । पतित पावन सीताराम ॥२२॥
 सीताजी जब यह सुन पाई । रंग महल से नीचे आई ॥
 कौशल्या को किया प्रणाम । पतित पावन सीताराम ॥२३॥
 मेरी चूक क्षमा कर दीजो । वन जाने की आज्ञा दीजो ॥
 सीता को समझाते राम । पतित पावन सीताराम ॥२४॥
 मेरी सीख सिया सुन लीजो । सास ससुर की सेवा कीजो ॥
 मुझको भी होगा विश्राम । पतित पावन सीताराम ॥२५॥
 मेरा दोष बता प्रभु दीजो । संग मुझे सेवा में लीजो ॥
 अर्धांगिनी तुम्हारी राम । पतित पावन सीताराम ॥२६॥
 राम लखन मिथिलेशकुमारी । वन जाने की करी तैयारी ॥
 रथ में बैठ गये सुख धाम । पतित पावन सीताराम ॥२७॥
 अवधपुरी के सब नर नारी । समाचार सुन व्याकुल भारी ॥
 मवा अवध में अति कोहराम । पतित पावन सीताराम ॥२८॥
 शृंगवेरपुर रघुवर आये । रथ को अवधपुरी लौटाये ॥
 गंगा तट पर आये राम । पतित पावन सीताराम ॥२९॥
 केवट कहे चरण धुलवाओ । पीछे नौका में चढ जाओ ॥
 पत्थर कर दी नारी राम । पतित पावन सीताराम ॥३०॥
 लाया एक कऊँता भारी । चरण कमल धोये सुखकारी ॥
 नाव चढाये लक्ष्मण राम । पतित पावन सीताराम ॥३१॥
 उतराई में मुदरी दीनी । केवट ने यह विनती कीनी ॥
 उतराई नहीं लूंगा राम । पतित पावन सीताराम ॥३२॥
 तुम आये हम घाट उतारे । हम आर्येगे घाट तुम्हारे ॥
 तब तुम पार लगायो राम । पतित पावन सीताराम ॥३३॥
 भरद्वाज आश्रम पर आए । राम लखन ने शीष नवाए ॥
 एक रात कीन्हां विश्राम । पतित पावन सीताराम ॥३४॥
 भाई भरत अयोध्या आये । कैकई को कटु वचन सुनाये ॥
 क्यों तुमने वन भेजे राम । पतित पावन सीताराम ॥३५॥
 चित्रकूट रघुनंदन आये । वन को देख सिया सुख पाये ॥
 मिले भरत से भाई राम । पतित पावन सीताराम ॥३६॥

वक्त सबको मिलता है जिन्दगी बदलने के लिए, पर जिन्दगी दोबारा नहीं मिलती वक्त बदलने के लिए ।

अवधपुरी को चलिए भाई । ये सब कैकई की कुटिलाई ॥
 तनिक दोष नहीं मेरा राम । पतित पावन सीताराम ॥३७॥
 चरण पादुका तुम ले लीजो । दर्शन करके पूजा कीजो ॥
 भरत ने कंठ लगाये राम । पतित पावन सीताराम ॥३८॥
 आगे चले राम रघुराया । निशाचरों का वंश मिटाया ॥
 ऋषियों के हुऐ पूरन काम । पतित पावन सीताराम ॥३९॥
 जनस्थान आए रघुराई । शूर्पनखा की नाक कटाई ॥
 खरदूषन को मारे राम । पतित पावन सीताराम ॥४०॥
 पंचवटी रघुनन्दन आए । कनक मृग 'मारीच' संग धाये ॥
 लक्ष्मण तुम्हें बुलाते राम । पतित पावन सीताराम ॥४१॥
 रावण साधु वेष में आया । भूख ने मुझको बहुत सताया ॥
 भिक्षा दो यह धर्म का काम । पतित पावन सीताराम ॥४२॥
 भिक्षा लेकर सीता आई । हाथ पकड़ रथ में बैठाई ॥
 सूनी कुटिया देखी राम । पतित पावन सीताराम ॥४३॥
 धरनी गिरे राम रघुराई । सीता के बिन व्याकुलताई ॥
 हे प्रिय सीते, चीखे राम । पतित पावन सीताराम ॥४४॥
 लक्ष्मण, सीता छोड़ नहीं तुम आते । जनक दुलारी नहीं गंवाते ॥
 तुमने सभी बिगाड़े काम । पतित पावन सीताराम ॥४५॥
 कोमल बदन सुहासिनी सीते । तुम बिन व्यर्थ रहेंगे जीते ॥
 लगे चाँदनी जैसे-धाम । पतित पावन सीताराम ॥४६॥
 सुन री मैना, सुन रे तोता । मैं भी पंखों वाला होता ॥
 वन-वन लेता दूँड तमाम । पतित पावन सीताराम ॥४७॥
 सुन रे गुलाब, चमेली, जूही । चम्पा मुझे बता दे तू ही ॥
 सीता कहाँ, पुकारे राम । पतित पावन सीताराम ॥४८॥
 हे नाग, सुनो मेरे मन हारी । कहीं देखी हो जनक दुलारी ॥
 तेरी जैसी चोटी श्याम । पतित पावन सीताराम ॥४९॥
 श्यामा हिरनी तू ही बता दे । जनक नन्दनी मुझे मिला दे ॥
 तेरे जैसी आँखे श्याम । पतित पावन सीताराम ॥५०॥
 हे अशोक, मम शोक मिटा दे । चन्द्रमुखी से मुझे मिला दे ॥
 होगा तेरा सच्चा नाम । पतित पावन सीताराम ॥५१॥
 वन-वन दूँड रहे रघुराई । जनक दुलारी कहीं न पाई ॥
 गिद्धराज ने किया प्रणाम । पतित पावन सीताराम ॥५२॥
 चख चख कर फल शबरी लाई । प्रेम सहित पाये रघुराई ॥
 ऐसे मीठे नहीं हैं आम । पतित पावन सीताराम ॥५३॥
 विप्र रूप धरि हनुमत आए । चरण कमल में शीश नवाये ॥
 कन्धे पर बैठाये राम । पतित पावन सीताराम ॥५४॥
 सुग्रीव से करी मिलाई । अपनी सारी कथा सुनाई ॥
 वाली पहुँचाया निज धाम । पतित पावन सीताराम ॥५५॥

सिंहासन सुग्रीव बिठाया । मन में वह भारी पछिताया ॥
 वर्षा ऋतु आई हे राम । पतित पावन सीताराम ॥५६॥
 हे भाई लक्ष्मण तुम जाओ । वानरपति को यूँ समझाओ ॥
 सीता बिन व्याकुल हैं राम । पतित पावन सीताराम ॥५७॥
 देश देश वानर भिजवाए । सागर के तट पर सब आए ॥
 सहते भूख प्यास और घाम । पतित पावन सीताराम ॥५८॥
 सम्पाती ने पता बताया । सीता को रावण ले आया ॥
 सागर कूद गए हनुमान । पतित पावन सीताराम ॥५९॥
 कोने कोने पता लगाया । भगत विभीषण का घर पाया ॥
 हनुमान ने किया प्रणाम । पतित पावन सीताराम ॥६०॥
 हनुमान उपवन में आए । वृक्ष तले सीता को पाये ॥
 आँसू बरसे आठों याम । पतित पावन सीताराम ॥६१॥
 रावण संग निशाचरी ला के । सीता को बोला समझा के ॥
 मेरी ओर तुम देखो याम । पतित पावन सीताराम ॥६२॥
 मन्दोदरी बना दूँ दासी । सब सेवा में लंका वासी ॥
 करो भवन चलकर विश्राम । पतित पावन सीताराम ॥६३॥
 चाहे मस्तक कटे हमारा । मैं नहीं देखूँ बदन तुम्हारा ॥
 मेरे तन मन धन हैं राम । पतित पावन सीताराम ॥६४॥
 ऊपर से मुद्रिका गिराई । सीत जी ने कण्ठ लगाई ॥
 हनुमान ने किया प्रणाम । पतित पावन सीताराम ॥६५॥
 मुझको भेजा है रघुराया । सागर कूद यहां मैं आया ॥
 मैं हूँ राम दास हनुमान । पतित पावन सीताराम ॥६६॥
 माता की आज्ञा मैं पाऊँ । भूख लगी मीठे फल खाऊँ ॥
 पीछे मैं लूँगा विश्राम । पतित पावन सीताराम ॥६७॥
 वृक्षों को मत हाथ लगाना । भूमि गिरे मधुर फल खाना ॥
 निशाचरों का है यह धाम । पतित पावन सीताराम ॥६८॥
 हनुमान ने वृक्ष उखाड़े । देख देख माली ललकारे ॥
 मार-मार पहुँचाये धाम । पतित पावन सीताराम ॥६९॥
 अक्षय कुमार को स्वर्ग पहुँचाया । इन्द्रजीत फाँसी ले आया ॥
 ब्रह्मफाँस से बंधे हनुमान । पतित पावन सीताराम ॥७०॥
 सीता को तुम लौटा दीजो । उन से क्षमा याचना कीजो ॥
 तीन लोक के स्वामी राम । पतित पावन सीताराम ॥७१॥
 भगत विभीषण ने समझाया । रावण ने उसको धमकाया ॥
 सनमुख देख रहे हनुमान । पतित पावन सीताराम ॥७२॥
 रुई, तेल, घृत, बसन मंगाई । पूँछ बाँध कर आग लगाई ॥
 पूँछ घुमाई है हनुमान । पतित पावन सीताराम ॥७३॥
 सब लंका में आग लगाई । सागर में जा पूँछ बुझाई ॥
 हृदय कमल में राखे राम । पतित पावन सीताराम ॥७४॥

सागर कूद लौट कर आये । समाचार रघुवर ने पाये ॥
जो मांगा सो दिया इनाम । पतित पावन सीताराम ॥७५॥
वानर रीछ संग में लाए । लक्ष्मण सहित सिंधु तट आए ॥
लगे सुखाने सागर राम । पतित पावन सीताराम ॥७६॥
सेतू कपि नल नील बनायें । राम-राम लिख शिला तैरायें ॥
लंका पहुँचे राजा राम । पतित पावन सीताराम ॥७७॥
निशाचरों की सेना आई । गरज-तरज कर हुई लड़ाई ॥
वानर बोले जय सिया राम । पतित पावन सीताराम ॥७८॥
इन्द्रजीत ने शक्ति चलाई । धरनी गिरे लखन मुरझाई ॥
चिन्ता करके रोये राम । पतित पावन सीताराम ॥७९॥
जब मैं अवधपुरी से आया । हाय पिता ने प्राण गंवाया ॥
वन में गई चुराई वाम । पतित पावन सीताराम ॥८०॥
भाई तुमने भी छिटकाया । जीवन में कुछ सुख नहीं पाया ॥
सेना में भारी कोहराम । पतित पावन सीताराम ॥८१॥
जो संजीवनी बूटी को लाए । तो भाई जीवित हो जाये ॥
बूटी लायेगा हनुमान । पतित पावन सीताराम ॥८२॥
जब बूटी का पता न पाया । पर्वत ही लेकर के आया ॥
कालनेम पहुँचाया धाम । पतित पावन सीताराम ॥८३॥
भक्त भरत ने बाण चलाया । चोट लगी हनुमत लंगड़ाया ॥
मुख से बोले 'जय सिया राम' । पतित पावन सीताराम ॥८४॥
बोले भरत बहुत पछताकर । पर्वत सहित बाण बैठाकर ॥
तुम्हे मिला दूँ राजा राम । पतित पावन सीताराम ॥८५॥
बूटी लेकर हनुमत आया । लखन लाल उठ शीघ्र नवाया ॥
हनुमत कण्ठ लगाये राम । पतित पावन सीताराम ॥८६॥
कुम्भकरण उठकर तब आया । एक बाण से उसे गिराया ॥
इन्द्रजीत पहुँचाया धाम । पतित पावन सीताराम ॥८७॥
दुर्गापूजन रावण कीनो । नौ दिन तक आहार न लीनो ॥
आसन बैठ किया है ध्यान । पतित पावन सीताराम ॥८८॥
रावण का व्रत खंडित कीना । परम धाम पहुँचा ही दीना ॥
वानर बोले जय सिया राम । पतित पावन सीताराम ॥८९॥
सीता ने हरि दर्शन कीना । चिन्ता शोक सभी तज दीना ॥
हँस कर बोले राजा राम । पतित पावन सीताराम ॥९०॥
पहले अग्नि परीक्षा पाओ । पीछे निकट हमारे आओ ॥
तुम हो पतिव्रता हे वाम । पतित पावन सीताराम ॥९१॥
करी परीक्षा कण्ठ लगाई । सब वानर सेना हरषाई ॥
राज्य विभीषण दीन्हा राम । पतित पावन सीताराम ॥९२॥
फिर पुष्पक विमान मंगाया । सीता सहित बैठे रघुराया ॥
किष्किन्धा को लौटे राम । पतित पावन सीताराम ॥९३॥

ऋषि पत्नी दर्शन को आई । दीन्हीं उनको सुन्दरताई ॥
गंगा तट पर आये राम । पतित पावन सीताराम ॥९४॥
नन्दी ग्राम पवन सुत आये । भगत भरत को वचन सुनाए ॥
लंका से आए है राम । पतित पावन सीताराम ॥९५॥
कहो विप्र तुम कहां से आए । ऐसे मीठे वचन सुनाए ॥
मुझे मिला दो भैया राम । पतित पावन सीताराम ॥९६॥
अवधपुरी रघुनन्दन आये । मन्दिर-मन्दिर मंगल छाये ॥
माताओं को किया प्रणाम । पतित पावन सीताराम ॥९७॥
भाई भरत को गले लगाया । सिंहासन बैठे रघुराया ॥
जग ने कहा, हैं राजा राम । पतित पावन सीताराम ॥९८॥
सब भूमि विप्रों को दीनी । विप्रों ने वापस दे दीनी ॥
हम तो भजन करेंगे राम । पतित पावन सीताराम ॥९९॥
धोबी ने धोवन धमकाई । रामचन्द्र ने यह सुन पाई ॥
वन में सीता भेजी राम । पतित पावन सीताराम ॥१००॥
बाल्मीकि आश्रम में आई । लव व कुश हुए दो भाई ॥
धीर वीर ज्ञानी बलवान । पतित पावन सीताराम ॥१०१॥
अश्वमेध फिर कीन्हो राम । सीता बिनु सब सूने काम ॥
लव कुश वहाँ दियो पहचान । पतित पावन सीताराम ॥१०२॥
सीता राम बिना अकुलाई । भूमि से यह विनय सुनाई ॥
मुझको अब दीजो विश्राम । पतित पावन सीताराम ॥१०३॥
सीता भूमि माहीं समाई । सुनकर चिन्ता करी रघुराई ॥
ब्रह्मचारी बन गए हैं राम । पतित पावन सीताराम ॥१०४॥
राम राज्य में सब सुख पावें । प्रेम मन्म हो हरि गुन गावें ॥
चोरी जारी का नहीं काम । पतित पावन सीताराम ॥१०५॥
ग्यारह हजार वर्ष परयन्ता । राज कीन्ह श्री लक्ष्मी कंता ॥
फिर बैकुण्ठ पधारे राम । पतित पावन सीताराम ॥१०६॥
अवधपुरी बैकुण्ठ सिधाई । नर नारी सबने गति पाई ॥
शरणागत प्रतिपालक राम । पतित पावन सीताराम ॥१०७॥
"श्याम सुन्दर" ने लीला गाई । मेरी विनय सुनो रघुराई ॥
भूलूँ नहीं तुम्हारा नाम । पतित पावन सीताराम ॥१०८॥
यह माला पूरी हुई, मनका एक सौ आठ ।
मनोकामना पूर्ण हो, नित्य करे जो पाठ ॥

श्री एक श्लोकी रामायण

आदो राम तपोवनादि गमनं हत्वा मृगम कांचनम् ।
वैदेही हरणं जटायु मरणं सुग्रीव सम्भाषणम् ॥
बाली निग्रहणं समद्र तरणं लंकापुरी दाहनम् ।
पश्चात् रावण कुम्भकर्ण हननं एतद्वि रामायणम् ॥

अगर आप सही हो तो कुछ भी साबित करने की कोशिश मत करो, बस सही बने रहो गवाही वक्त खुद दे देगा ।

गुरु वंदना

सद्गुरु सवां न कोई सगा...



भारतीय दर्शन में गुरु-शिष्य के संबंध का एक अपना ही महत्त्व है । “कृष्णं वंदे जगद्गुरुम्” - श्री कृष्ण भगवान् जगद्गुरु माने जाते हैं । उन्होंने भी सांदिपनि ऋषि का शिष्यत्व स्वीकार करके गुरु की महिमा बढ़ाई है ।

गुरु यानि मूर्तिमंत ज्ञानपिपासा ! अनंत ज्ञान की खोज के प्रति लगन !! गुरु खुद में एक चलता-फिरता मंदिर हैं । गुरु सार्थक ही महान होते हैं ।

‘वेदिक ज्योतिष संस्थान (रजि.) सन २००९ से ज्योतिष, वास्तुशास्त्र व स्वरज्ञान में निःशुल्क अपना योगदान प्रदान कर रही है । वर्तमान में इस संस्था गुजराती-हिन्दी के चार-चार केन्द्र में इस क्षेत्र में कार्यान्वित है । ‘वेदिक ज्योतिष संस्थान इस साल अपने दसवें सोविनियर की प्रस्तुति आप सभी से बाँट रही है ।

सन २००९ में गुजराती से शुरू हुए इस ज्ञान-यज्ञ में राष्ट्रभाषी विद्यार्थीओं की बढ़ती हुई संख्या को ध्यान में रखते हुए करीब-करीब सभी गुरुजनों ने अपने ज्योतिष संशोधन लेख हिन्दी में देने की कोशिश की है ।

किसीने बड़े सार्थक रूप से गुरु को सड़क की उपमा दी है । जिस तरह सड़क खुद कही नहीं जाती, पर राहगीर को अपनी मंजिल तक जरूर पहुँचाती है, कुछ इसी प्रकार एक स्थिर गुरु हमेशा अपने शिष्यों को उनके लक्ष्य हाँसिल करवाते हैं । इनलिये ‘कभी भी ईश्वर से यह मत बताईये ।

बहुत मुश्किल है मेरे साथ,
लेकिन मुश्किलों को यह जरूर बताओ,
की गुरु है मेरे साथ !

गुरु पुर्णिमा के इस पावन अवसर पर संस्था के जनक पू. आचार्य श्री. अशोक गुरुजी एवम् संस्था से जुड़े सभी गुरुजनों को सादर वंदन-प्रणाम सह यह कहकर विराम चाहूँगी की,

“हे गुरुदेव, आप अनंत हो । आपके गुण अनंत हैं । मेरी लेखनी में इतना सामर्थ्य नहीं की आपकी प्रशंसा कर पाऊँ ।”

अस्तु ।

॥ हरि ॐ ॥

- वर्षा धीरज रावल

VEDIC JYOTISH SANSTHAN



Acharya Ashokji
President - Hon. Trustee
(Jyotishalankar)



Hiren Bhavsar
Hon. Principal



Varsha Raval
Hon. Vice Principal



Harilal Malde
Hon. Lecturer



Jayesh Waghela
Hon. Lecturer



Pradip Joshi
Hon. Lecturer



Chaitali Parmar
Hon. Lecturer



Nitin I. Bhatt
Hon. Lecturer



Pratima Pandya
Hon. Lecturer



Swapnil Kotecha
Hon. Lecturer



Tejas Jain
Hon. Lecturer



Pramila Panchal
Hon. Lecturer



Priti Thakar
Hon. Lecturer



Dr. Himanshu Vyas
Hon. Lecturer



Vivek Shah
Hon. Lecturer



Rupal Damania
Hon. Lecturer



Anjana Paleja
Hon. Lecturer



Rajesh Mehta
Proxy Lecturer

મહાન માનવીની પ્રથમ કસોટી વિનમ્રતા છે.

हरि ॐ

संस्था परिचय

वैदिक ज्योतिष संस्थानનો मूळ छिदेश्य आर्यना आधुनिक युगमा ज्योतिष तथा वास्तुशास्त्रने पहेला जेतलुं व आदरपात्र बनाववानुं तथा ज्योतिष अने वास्तुशास्त्रने जुवंत राजवा माटे निःस्वार्थभावे तेनो प्रचार अने प्रसार करवानो छे.

हालनुं दूषित मानस ज्योतिष तथा वास्तुशास्त्रने जुव व निम्नकदानुं गछे छे. शास्त्रना ररयनाकारो अे कल्पना पण न करी होय अेवी अवहेलना आर्यना समयमां यवा मांडी छे, लोको ज्योतिष के वास्तुमां विश्वास जाढेर करवामां नानम के शरम अनुभवता होय छे, गुप्तता जाणवता होय छे, हिएपत अनुभवता होय छे, शास्त्र प्रत्ये सूग धरावता होय छे, कारण शुं...? कारण के आजे आपछे आपछी मूळ संस्कृतिथी विमुज थर्ष रह्या छीरने. संस्था लोकोना मानसमांथी आ विद्या के शास्त्र प्रत्येना जोटा लम अने डर दूर करवाना हेतु थकी निःस्वार्थ प्रयास द्वारा लोकोने ज्योतिषनुं निर्मण ज्ञान प्रदान करे छे.

ज्योतिषशास्त्र पासे लोकोनी आपेक्षा अेलोपथी दवा जेवी यवा लागी छे. आर्यना समयमां लोकोने पोतानी तकलीकोनुं तरत व निवारण जोर्यने छे. लोकोने अंधश्रद्धा, पूर्वग्रह तथा हाथोहाथ निकाल आपता अन्य छिपायो द्वारा तेमनी तकलीकोनुं कलाक अने मिलिटोमां व समस्थानुं निराकरण जोर्यने छे. टीकडी जाता व दई गायज...! आ मानस जदलातुं जोर्यने. संस्थानो अभ्यासक्रम अे अेक गणत्री तथा विज्ञान व छे, जेना द्वारा वैज्ञानिक पद्धतिथी पौराणिक दामला, कथाओ, द्रष्टांतो द्वारा जुवज सरण पद्धतिथी शास्त्र ल्हाववामां आवे छे. ज्योतिष शास्त्र, हस्तरेभाशास्त्र, वास्तु शास्त्र तेमज स्वज्ञान वगेरे विषयोने आवरी लर्ष विस्तृत अभ्यास क्रम द्वारा ज्ञानदाननी निःशुल्क सेवा मानद् अध्यापको द्वारा आपवामां आवे छे. कोर्य पण नात-जातना भेदभाव वगर भाषानुं सामान्य ज्ञान धरावतां कोर्यपण छिमरना भाई-जदनेने ज्ञान मेणववानुं सहृदय आमंत्रण आपवामां आवे छे. वर्धाते परिक्षा लर्ष प्रमाण-पत्र आपवामां आवे छे. आ शास्त्र वेदो द्वारा मजेलो अमूल्य वारसो छे, वरदान छे, जे ऋषि-मुनिओनी न जाछे केटकेटला वर्षोनी महेलतनो लियोड छे. ज्योतिष शब्दनो अर्थ शुं छे ? उत्तर छे, ईश्वरनी ज्योत...! मानवने जुवन जुववाना मार्गो तो अनेक छे, परंतु सद्-जुवन जुववानो सारो मार्ग कयो छे ? ते आ ईशानी ज्योतनो प्रकाश अेटले के ज्योतिषशास्त्रना ज्ञान द्वारा व जाणवा मणी शके छे.

मानद् अध्यापको

आचार्य अशोकजु

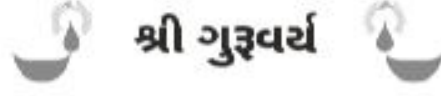
श्री हीरेन भावसार	श्री हरीलाल मालदे	श्रीमती वर्धा रावल
श्री जयेश वाघेला	श्री प्रदीपभाई जोशी	श्रीमती चैताली परमार
डॉ. हिमांशु व्यास	श्री नितीन लुट्ट	श्रीमती प्रतिमा पंड्या
श्री स्वप्नील कोटेया	श्री तेजस जैन	श्री विवेक शाह
श्रीमती प्रमिला पंचाल	श्रीमती प्रिती ठाकर	श्रीमती रुपल दमणीया
	श्रीमती अंजना पालेजा	

व्यवस्थापन समिति

श्री मुकेशभाई महेता श्रीमती गंजना दवे श्री शर्वालभाई वैध श्री सूर्यकुमार मिश्रा



શ્રી નિરંજનભાઈ જોશી
૧-૧-૧૯૨૭ થી ૧૩-૧૦-૨૦૧૪



સૌરાષ્ટ્રના પ્રખ્યાત કેળવણીકાર અને સુપ્રસિદ્ધ શ્રી ઈશ્વરલાલ કરશનજી જોશી અને લક્ષ્મીબહેનને ત્યાં તા. ૧-૧-૧૯૨૭ ના રોજ કેડાણ ગામે અર્વાચીન યુગના જ્યોતિષ ભાસ્કર શ્રી નિરંજનભાઈનો દ્વિતીય પુત્ર તરીકે જન્મ થયો. જરૂરી શિક્ષણ ગુજરાતમાં પુરું કરી પઠના દાયકામાં મુંબઈ આવી અર્થોપાર્જન માટે પ્રવૃત્તી શરૂ કરી અને સાથે સાથે જ્યોતિષવિદ્યાની સાધનાની શરૂઆત કરી. પિતાશ્રી શ્રી ઈશ્વરલાલભાઈના સિદ્ધાંતોને પોતાના જીવનમાં સ્થાન આપી નિર્ણય કર્યો કે "જ્ઞાનની પરબ હોય, વિદ્યાનું વેચાણ નહીં" અને સન ૧૯૫૬ માં ચોપાટી પર આવેલ 'મરીના મોર્ડન' સ્કૂલમાં જ્યોતિષ શાસ્ત્રના નિ:શુલ્ક વર્ગો શરૂ કર્યાં. એક જ ભાવના અને ખેવના સાથે કે ભણ્યા બાદ વિદ્યાર્થીઓ ધંધો કરશે તો પણ માર્ગદર્શક બનીને. પણ કમસેકમ લેભાગુ

અને સ્વાર્થી જ્યોતિષોની જેમ સમાજને ગેરમાર્ગે તો નહીં દોરે. ચાર દાયકાથી વધુ તેમણે કરેલા આ જ્ઞાનયજ્ઞમાં ૪૫,૦૦૦થી વધુ ભાઈબહેનો જેમાં સામાન્ય માનવીથી માંડીને વૈજ્ઞાનિક, ડોક્ટરો, વકીલો અને નિવૃત્ત ન્યાયાધીશોને જ્યોતિષ જાણતા અને માણતા કર્યાં. કોંક્રીટના જંગલ જેવા મુંબઈ શહેરમાં અઠવાડિયાના દરેક દિવસે કેન્દ્રમાં વર્ગ અને રવિવારે ત્રણ કેન્દ્રમાં વર્ગ જેમાં કામા હોલ, ગીરગામ, પ્રેમપુરી આશ્રમ, સાંતાક્રુઝ, મલાડ, બોરીવલી, માટુંગા, મુલુંડ અને ઘાટકોપર સામેલ હતાં. આ વર્ષે આ જ્ઞાન-દાનના યજ્ઞને ૫૦ વર્ષ પૂર્ણ થયા છે.

જ્યોતિષશાસ્ત્રના પ્રસાર અને પ્રચાર માટે આજીવન ભેખ ધારી ૯-૯ કેન્દ્રમાં પોતે જ ભણાવેલ વિદ્યાર્થીઓના સાથ સહકાર લઈ યોગ્યતા પ્રમાણે અધ્યાપક નીમિને અવિરત જ્ઞાન પ્રસાર, પ્રચાર અને સમાજસેવા, માર્ગદર્શનનું જ્વલંત ઉદાહરણ કદાચ આવતા અનેક વરસો સુધી જોવા નહીં મળે.

આજીવન નિ:સ્વાર્થ અને ભેખધારી નિષ્ઠાવાન વ્યક્તિત્વને શત શત વંદન.....



મા-બાપને આપેલો સાચો વારસો પૈસા નહિં પણ પ્રમાણિકતા અને પવિત્રતા છે.

જ્યોતિષેન મનુભાઈ ભટ્ટ



જ્યોતિષેન મનુભાઈ ભટ્ટનો જન્મ ઝાંઢિસ્ય બ્રાહ્મણ જ્ઞાતિના શ્રી મનુભાઈ ભટ્ટને ત્યાં થયો હતો.

દિર્ઘદ્રષ્ટિવાળા માતા-પિતા તેમની કેળવણી અને પ્રગતિમાં સદૈવ સક્રિય રસ લઈ જ્યોતિષેન ને સહાયરૂપ થતા રહ્યા છે. નાની ઉંમરના બાળકો સ્કુલ અને હોમવર્ક પતાવીને રમવા જતા હોય છે. પરંતુ એમના પિતાશ્રીએ તેમને વિવિધ વિષયો શિખવવાની તામિલ આપી.

૧૩, ૧૪ વર્ષની ઉંમરે બાલગંધર્વ સંગીત મહોવિદ્યાલયમાં સિતારવાદન નો અભ્યાસ કરીને મધ્યમા સુધીની પરીક્ષા પાસ કરી સિતારવાદન પર પ્રભુત્વ મેળવ્યું છે.

હાઉસક્રાફ્ટ નામના વિષયમાં સમસ્ત મહારાષ્ટ્રમાં સૌથી વધારે ગુણાંક મેળવી તેઓ એસ.એસ.સી. થયા અને ત્યારબાદ ટેક્સટાઈલમાં બી.એસ.સી.ની ડીગ્રી મેળવી.

૧૪ વર્ષની ઉંમરે ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદ-અમદાવાદ દ્વારા આસ્વાદ પરિક્ષામાં પણ ફસ્ટક્લાસમાં ઉત્તિર્ણ થયા.

ગ્રેજ્યુએટ થયા ત્યાં સુધી જ્યોતિષ શાસ્ત્ર અને ગણિતમાં બિલકુલ રસ નહોતો. તેમના પિતાશ્રી અને માતુશ્રી ફળાદેશમાં પારંગત હતા. પિતાશ્રીને ભારતીય-વિદ્યાભવનમાં ચાલતા જ્યોતિષના વર્ગમાં અભ્યાસ અર્થે જવું હતું પરંતુ તેઓ રવિવારે જઈ શકે તેમ નહોતા. એટલે તેમણે જ્યોતિષેનને કહ્યું, તુ જ્યોતિષનો અભ્યાસ કરવા જા, તને ત્યાં જે શીખવે તે તારે મને ઘરે આવીને કહી દેવાનું. પહેલા તો જ્યોતિષેન ના પાડી પરંતુ પછી તેમણે જ્યોતિષશાસ્ત્રના વર્ગમાં જવાનું શરૂ કર્યું. તે દિવસ થી આજના દિવસ સુધી જ્યોતિષશાસ્ત્રમાં તેઓ જોડાઈ ગયા છે.

ભારતીય વિદ્યાભવન સંચાલિત 'ધી બોમ્બે એસ્ટ્રોલોજીકલ સોસાયટી' દ્વારા લેવામાં આવતી બે વર્ષના અભ્યાસક્રમની પરિક્ષામાં પ્રથમ અને દ્વિતીય વર્ષે પ્રથમ શ્રેણીમાં પ્રથમ આવેલ અને ગોલ્ડ મેડલ મેળવ્યો હતો. પરિણામ જાહેર થતાની સાથે જ સંસ્થાના સંચાલકો એ જ્યોતિષેન ને મદદનીશ શિક્ષિકા તરીકે નિયુક્ત કર્યા અને તરત જ જન્મભૂમિ પંચાંગ કાર્યાલયમાં પંચાંગકર્તા સ્વ. શ્રી ડી. કે. શૂળેના હાથ નીચે પંચાંગ શીખવાનું મળ્યું.

ગણિતમાં તો બિલકુલ રસ જ નહોતા તેમાં પંચાંગગણિતમાં તો ટ્રીગોનોમેટ્રીની ફોર્મ્યુલાનો ઉપયોગ કરવાનો હોય, હવે શું? પરંતુ જ્યોતિષેન બેઝીક ટ્રીગોનોમેટ્રી તેઓના બેન શ્રીમતી રીટાબેન શુક્લ પાસેથી શીખી લીધી. શ્રી. ડી. કે. શૂળે ના ઘરે જઈને પંચાંગ ગણિત લોગટેબલની મદદથી અને પછી કેલક્યુલેટરથી કરવાનું શરૂ કર્યું. આજે ભલે કોમ્પ્યુટરનો જમાનો છે. પરંતુ આજે પણ જ્યોતિષેન કેલક્યુલેટર થી કામ કરે છે.

अमीर वो होता है जिसके पास सबसे ज्यादा वो चीजे होती है, जो पैसों से नहीं खरीदी जा सकती ।

જન્મભૂમિ પંચાંગને આ વર્ષે ૭૬ વર્ષ થયા તેમાં જ્યોતિષેન ભટ્ટનો જન્મભૂમિ પંચાંગના મુખ્ય સંપાદિકા તરીકે ૪૧ વર્ષનો ફાળો છે. સંપાદિકા તરીકે જન્મભૂમિ પંચાંગ ઉપરાંત કેટલાક વર્ષો હિંદી પંચાંગ કાટેલ, જ્યોતિષશાસ્ત્ર પ્રવેશ અને પંચાંગ માર્ગદર્શિકા ઉપરાંત ૧૧૦ વર્ષનું પંચાંગ પ્રસિદ્ધ કરેલ છે.

જ્યોતિષેન ભટ્ટ જ્યારે ૪૧ વર્ષ પહેલા જન્મભૂમિ પંચાંગના પંચાંગકર્તા થયા ત્યારે આખા ભારતમાં સૌથી પહેલા મહિલા પંચાંગ કર્તા હતા.

જ્યોતિષ શાસ્ત્રમાં મેળવેલ ડીગ્રીઓ :- જ્યોતિર્વિદ, જ્યોતિષરત્ન, પંચાંગગણિત અલંકાર, જ્યોતિષ માર્તન્ડ, જ્યોતિર્વિદ્યા વાચસ્પતી.

જ્યોતિષ ઉપરાંત : ન્યુટ્રિશન, ટેક્ષટાઈલ, કાફ્ટ, સંગીત, રસોઈ, જર્નાલીઝમનો કોર્સ પણ કરેલ છે.

શોખ અને પ્રવૃત્તિ : સંગીત, પ્રવાસનો શોખ છે. ભારતના બધા જ રાજ્યોમાં ભ્રમણ કરેલ છે. પરદેશમાં પણ ઘણા દેશોમાં પ્રવાસ કરેલ છે. કુદરતનું સાનીધ્ય ખુબ જ ગમે છે. અખંડ જ્યોતિ ગાયત્રી પરિવાર-બોરીવલી શાખામાં કાર્યવાહી સમિતિના સભ્ય છે. દર વર્ષે હરદ્વાર-શાંતિકુંજમાં ચાલતી પ્રવૃત્તિઓમાં ભાગ લે છે.

પંચાંગના કાર્ય હેતુ શંકાચાર્યો, અખાડા ના સંતો, પરદેશમાં ચાલતા જ્યોતિષ વર્ગો તેમજ પંચાંગકર્તાઓ સાથે ચર્ચાવિચારણામાં ભાગ લે છે.

પંચાંગ ગણિત સાથે તેઓ વાસ્તુશાસ્ત્ર, ફંગ્શૂઈ, પીરામિડ, પેન્ડ્યૂલમ થેરપી, પ્રાણિક હિલિંગ તેમજ સ્પીરિચ્યુઅલ હિલિંગ અંગેની જાણકારી ધરાવે છે.

જ્યોતિષેન કહે છે કે આજે હું જે કંઈ પણ છું તે માટે મારા માતૃશ્રી અને પિતાશ્રી, સ્વ. શ્રી ડી. કે. શૂળે તથા શ્રી ચંદ્રકાંતભાઈ ભમરીઆની ઋણી છું. સાથે ધી બોમ્બે એસ્ટ્રોલોજીકલ સોસાયટી અને જન્મભૂમિ સંસ્થાનો પણ આભાર માને છે.

અંતમાં જ્યોતિષેન કહે છે કે 'કૃષ્ણં વન્દે જગદ્ગુરુ' જેમણે સ્વયં ગીતા કહી છે અને વેદમાતા ગાયત્રી પર તેમને અત્યંત શ્રદ્ધા છે.

- જ્યોતિષેન મનુભાઈ ભટ્ટ





શ્રીમતી સ્મિતાબેન આર. પારકર અનાવીલ બ્રાહ્મણ કુટુંબમાંથી આવેલ છે. એમણે એમ.એ. તથા M.Ed. કરેલ છે. તેમના જીવનનો મુદ્રાલેખ છે કે શાળા એ મંદિર છે તથા શિક્ષણ આપવું જે પુજા-આરાધના છે. તેઓ લગભગ ૧૮ વર્ષ સુધી શિક્ષિકા તરીકે સેવા આપી ચુક્યા છે. વિદ્યાર્થીઓને માર્ગદર્શન આપી એમને આગળ વધતા જોઈ ગર્વ અનુભવે છે, એમનું જીવન ધ્યેય છે કે દેશનું દરેક બાળક-બાલિકા શિક્ષિત હોય, શિક્ષણનો પ્રકાશ સર્વત્ર ફેલાય, શિક્ષા ક્ષેત્રે ૧૮ વર્ષની સેવા આપ્યા બાદ તેઓ સરકારના એજ્યુકેશન ઈન્સ્પેક્ટર (શિક્ષણ ક્ષેત્રે તપાસકર્તા) તરીકે ૬ વર્ષ સેવા આપી, આ દરમ્યાન તેઓને વિદ્યાર્થીઓની સમસ્યાઓનો સારો એવો અનુભવ થયો અને તેમની ઉત્કૃષ્ઠ સેવા તથા

અનુભવને કારણે સરકાર દ્વારા મોટી જવાબદારી આપવામાં આવી જે (શિક્ષણ વ્યવસ્થા) એજ્યુકેશન સુપરીટેન્ડન્ટ તરીકેની હતી. અહીં તેમણે પોતાની કાર્ય સાધકતા, કાર્ય સમતા, સમર્થતાનો ઉત્કૃષ્ઠ પરિચય આપ્યા બાદ નિવૃત્ત થયા, પરંતુ બીજા લોકોની જેમ નિવૃત્તિ બાદ શાંત બેસવું એમના સ્વભાવમાં ન હોવાને કારણે ફરી શિક્ષણ ક્ષેત્રમાં સેવા માટે બોરીવલીની બંને તરફ રહેલી જયાબેન ખોત હાઈસ્કૂલ ખાતે એજ્યુકેશન ડિરેક્ટર તરીકેની સેવામાં પ્રવૃત્ત થઈ ગયા. તે ઉપરાંત તેઓ સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયના મહિલા વિભાગમાં કાર્યરત રહે છે. તે ઉપરાંત તેઓ કુમારીકાઓ તથા યુવતીઓના સુધારા, પ્રગતી, શિક્ષણના લાભાર્થે કાર્ય કરનારી સંસ્થાના પ્રમુખ પદની જવાબદારી પણ સંભાળે છે. વેદિક જ્યોતિષ સંસ્થા તેમની આ સેવામય સફરમાં હંમેશા આગળ વધવાની શુભેચ્છા આપે છે અને ઈશ્વર તેમને આ કાર્યમાં હંમેશા આગળ વધવાની શક્તિ પ્રદાન કરે અને આપણી સંસ્થાના ગુરૂપૂર્ણિમા સમારોહના માનવંતા મહેમાન બનવાનું આમંત્રણ સ્વિકારવા બદલ આભાર વ્યક્ત કરે છે.

Real Development



પ્ર. યુવાન કોણ છે ?

જ. જે વ્યક્તિને જીવનમાં સારા માર્ગે આગળ વધવું છે તે યુવાન, જીવનમાં પરિવર્તન લાવવું છે તે યુવાન, ભરેલો અંગાર યુવાની, તણખો દેતા રાજગી ઉડે, શક્તિનો ભંડાર યુવાની.

પ્ર. સત્સંગ શું છે ?

જ. મનનો ખોરાક છે. સામાન્ય રીતે ખોરાક વગર જીવી ન શકાય. શરીરનો ખોરાક અન્ન છે. દિવસ દરમ્યાન કેટલીવાર ખોરાક લઈએ છીએ? ચાર થી વધુવાર. શરીરને કોણ ચલાવે છે ? પ્રાણ. પ્રાણ કોના કાબુમાં છે ? મનના. વ્યક્તિ મનથી હારી જાય તો પ્રાણનો પણ ત્યાગ કરી નાખે છે. માટે પ્રાણ પણ મનના કાબુમાં છે. જો શરીરને ચલાવવા ૪ થી વધુવાર ખોરાક આપવો પડે. પ્રાણને ચલાવવા ૭ થી ૮ વાર પાણી આપવું પડે. તો શરીર અને પ્રાણને ચલાવનાર મનને ખોરાક આપવો છીએ? ઓછામાં ઓછું દિવસ દરમ્યાન એકવાર એકાદ કલાક તો સત્સંગ દ્વારા ખોરાક આપવો પડે. હવે મનને કોણ ચલાવે છે ? બુદ્ધિ. સત્યચાર્યા એ બુદ્ધિનો ખોરાક છે. સત્યચાર્યા કરવાથી વિચાર મળે, જ્ઞાન મળે અને બુદ્ધિનો વિકાસ થાય. Real Development વર્ગ એ સત્સંગ અને સત્યચાર્યાનો વર્ગ છે જેવી મન અને બુદ્ધિનો વિકાસ થશે અને જીવન સફળ થશે.

પ્ર. મન અને બુદ્ધિ વચ્ચે ફરક શું છે ? જ. મન એટલે સંકલ્પ-વિકલ્પ કરનારી વૃત્તિ. સંકલ્પ-વિકલ્પ ક્યાં સુધી ચાલશે ? જ્યાં સુધી બુદ્ધિ નિર્ણય નહીં કરે. માટે બુદ્ધિ નિર્ણય-નિશ્ચય કરનારી વૃત્તિ.

પ્ર. રવિવારે સત્સંગ કરો શા માટે ?

જ. રવિવાર સૂર્યનો વાર. સૂર્ય. સૂર્ય અન્ન ઉગાડે છે, પ્રકાશ, ગરમી, સ્ફૂર્તિ વગેરે આપે છે. માટે હે સૂર્ય તારા દિવસે, રવિવારે, તને ચલાવનાર પરમાત્માને યાદ કરીશ, જેમ ઓફિસમાં બધા શાંતિથી કામ કરતા હોય તો કોઈ સંચાલક હાજર છે, તે સાબિત કરે છે. તેમ સૂર્ય નિયમિત ઉગે છે માટે તેનો સંચાલક છે જે પરમાત્મા છે.

પ્ર. Real Development કેવી રીતે થાય ?

જ. શારીરિક અને માનસિક વિકાસ, શારીરિક વિકાસ તો સમયસર અન્ન ખાઈને થશે જ પરંતુ માનસિક વિકાસ રહી જાય છે. સત્સંગ કરીને Real Development કરશું.

- નિકુંજ શેઠ

દુઃખમાં પણ પ્રેમ હોય તો માણસ સુખેથી જીવી શકે છે.

રજત ચંદ્રકોના પ્રાયોજક



જાગૃતિ રાવલ

Winner of the Silver Medal for Excellence



Sonal P. Thadeswar
Vedic Hastrekha Vignata
1st Year



Mehul M. Bhatt
Vedic Jyotish Pravesh
1st Year



Leena J. Chokshi
Vedic Vastu Pravesh
1st Year



Vaishali S. Zaveri
Vedic Jyotish Bhushan
2nd Year



Anuradha G. Aggarwal
Vedic Vastu Bhushan - 2nd Year



Anjana A. Paleja
Vedic Jyotish Martand - 3rd Year



Heena C. Parekh
Vedic Swargyan Gnyata

મણ વાતને યાદ રાખશો નહિં - તમારૂં કો'કે કરેલું અપમાન, તમે કરેલો ઉપકાર અને બીજાના દુ:ગુણો.

Well Wishers



Dilip N. Gala



**Suryakumar Mishra
C.A.**



**Apurva R. Parekh
Web Adviser**



**Nilay Chaubal
Web Designer**



Mukesh Mehta



Zankhana Dave



**Jayesh Desai
Souvenir Editor**



Kamlesh Gandhi



Sarvil Vaidhya



Hitendra Shah

સત્ય અને અહિંસા એ દરેક વ્યક્તિની આંતરિક શક્તિનું પ્રતીક છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

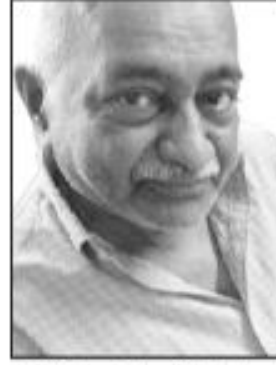
OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - SATURDAY



Asha R. Kansara



Bhakti K. Nandola



Bipin H. Mehta



Chaitali J. Shah



Chetana D. Patel



Chhaya R. Shah



Darshana A. Shah



Devang R. Mehta



Gautam B. Shah



Grishma R. Panchal



Hetal R. Nandania



Hitendra H. Vyas



Jagruti A. Khimani



Jayshri A. Chunawala



Jayshri M. Dakshini



Jigisha H. Mandalia

બધી જ કલાઓમાં જીવન જીવવાની કલા બેસ્ટ છે, સારી રીતે જીવી જાણે એ જ સાચો કલાકાર.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - SATURDAY



Jitendra P. Shrimankar



Jyoti J. Shah



Kajal A. Thakkar



Kalpesh J. Surathi



Kamlesh J. Surathi



Ketki B. Gala



Khushi V. Rathod



Kinnari A. Patel



Lata J. Lad



Mahendra H. Sanghavi



Malti K. Modi



Manish D. Chheda



Manjari M. Shah



Manjula D. Chheda



Mayur A. Pandya



Meena N. Maniar

કોઈનો સ્નેહ ક્યારેય ઓછો નથી હોતો, આપણી અપેક્ષાઓ જ વધારે હોય છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - SATURDAY



Minal D. Mehta



Mit D. Dave



Mittal R. Chauhan



Nilesh M. Ghelani



Niti J. Tanna



Parul N. Mistry



Parul S. Parmar



Pooja R. Desai



Pritesh P. Bhatt



Priti R. Harsora



Rahul R. Nandania



Rajesh N. Mavdani



Rajeshwari B. Trivedi



Rani R. Nandania



Ravindra R. Gaultam



Shailesh D. Chavada

ધૈર્ય, ધર્મ, મિત્ર અને પત્ની - આ ચારેયની પરીક્ષા વિપત્તિના વખતે જ થાય છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - SATURDAY



Sandeep K. Mehta



Sarvesh B. Joshi



Tarun B. Shah



Tina Y. Pitroda



Uday N. Nayak



Varsha J. Orwadkar



Yashwant O. Patitroda



OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - SUNDAY



Aditi K. Mistry



Ajay K. Joshi



Bhavana H. Panchal



Bhavik R. Juthani



Bipin J. Rajgor



Dewang D. Shah



Dilip N. Gala



Harsha A. Savala

મોટાઈ અમીરીમાં નહીં, ઈમાનદારી અને સજ્જનતામાં સમાયેલી છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - SUNDAY



Heer S. Soni



Manish R. Rawal



Manoj A. Mehta



Maya V. Khetani



Megha S. Solanki



Neha G. Vododaria



Neha J. Goraiya



Nikhil D. Tank



Nishaadh C. Muni



Pushpaben N. Sonpal



Rajendra A. Vora



Rajesh C. Shah



Ripal D. Bhavani



Sweta S. Vohera



Urvi S. Satayuga



Vishal K. Doshi

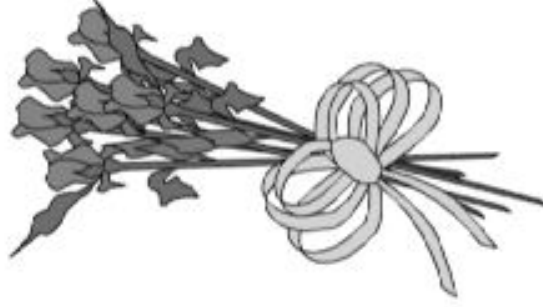
બીજા સાથે એવી જ ઉદારતા રાખો, જેવી ઈશ્વરે તમારી સાથે રાખી છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - SUNDAY



Yash H. Makwana



OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - SUNDAY (HINDI)



Abhishek L. Bansode



Alpesh P. Dave



Anil E. Bonde



Ankit M. Raj



Arvind S. Tripathi



Bhagyashri V. Arora



Bhushan K. Jain



Chhaya S. Jadav



Dheeraj K. Dube



Gaurav U. Sharma



Kamleshkumari R. Jain



Nisha D. Nichani

मातांनी छाया अने पितानी छत्रछाया अे तो बाळकना ज़ुवनमां अनेरी माया.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - SUNDAY (HINDI)



Piyush K. Savla



Prakash M. Shinde



Priya Prasad



Prayanka R. Burgute



Rajkumar R. Mishra



Ram C. Singh



Richa S. Gada



Rohan A. Shinde



Ruchita V. Agrawal



Sachin R. Bengre



Samir R. Merchant



Sandip P. Thakur



Sanika R. Selatkar



Sanjeev Kumar



Smita Sapre



Surender A. Ratti

ઈષ્યા એવો અગ્નિ છે, જે જીવતા માણસને બાળે છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - SUNDAY (HINDI)



Sweta V. Sawant



Vishryt M. Jain



OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - MONDAY



Bharat L. Shah



Disha K. Vasant



Heena N. Panchal



Jayshri P. Shah



Kamlesh V. Shah



Mayur M. Pathak



Mehul B. Shah



Parul M. Patel



Payal J. Doshi



Rahul M. Thathagar



Ramesh V. Shah



Rashmi K. Shah

આપણે જ આપણા નસીબનું ઘડતર કરીએ છીએ અને તેને ભાગ્યનું નામ આપીએ છીએ.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - MONDAY



Saroj B. Shah



Subramaniam S. Shetty



Varsha G. Shah



Viresh M. Trivedi

OUR ARDENT STUDENTS - SECOND YEAR - SATURDAY



Alka J. Upadhyay



Anil J. Mehta



Bharatkumar K. Waghela



Bhavana H. Jogi



Bhavana M. Makwana



Chetan H. Parekh



Dharmesh J. Mehta



Harsha P. Makwana



Hetal R. Shah



Hitendra V. Gohil



Jagruti H. Jariwala



Jaya M. Vala

ભાગ્ય યોગાનુયોગ નહિ, પોતાની પરંદ કહેલી બાબત છે. એ પ્રતીક્ષા કરવાની નહીં પ્રાપ્ત કરવાની ચીજ છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - SECOND YEAR - SATURDAY



Jayshri A. Chunawala



Kalpana D. Chavada



Ketan M. Shroff



Lata J. Lad



Lata P. Shah



Leena C. Furia



Leena J. Choksi



Manish H. Panchal



Meena N. Maniar



Mohini D. Rathod



Nina S. Kasare



Nitin N. Makwana



Piyush R. Raval



Purnima N. Gandhi



Reena H. Gohil



Reena N. Chheda

તૈયારી અને તકનો મેળાપ થાય ત્યારે જે બને તેનું નામ નસીબ.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - SECOND YEAR - SATURDAY



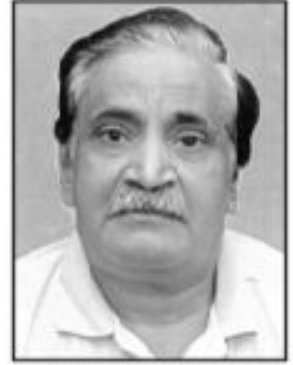
Sonal J. Vora



Sonal P. Thadeshwar



Swata V. Shah



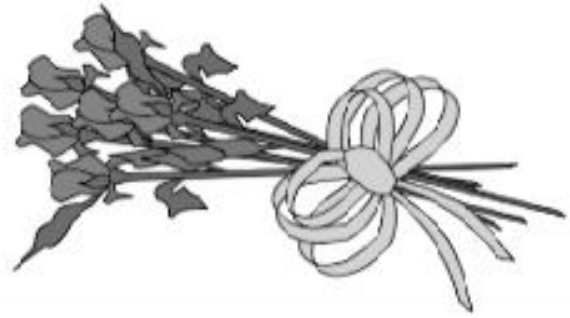
Tejpal H. Gupta



Usha R. Shah



Veena V. Dubal



OUR ARDENT STUDENTS - SECOND YEAR - SUNDAY



Ameer M. Bhatt



Bankim R. Parikh



Deepa M. Solanki



Jipsy D. Rajgor



Kaushik H. Bhagat



Kavita H. Kotak



Leena A. Sharma



Mehul M. Bhatt

माताली ममता ने पितानो प्रेम, आ ज़ुवनभर विसराय केम !

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - SECOND YEAR - SUNDAY



Mukesh L. Shah



Neeta B. Patel



Neeta V. Thakkar



Prashant S. Panchal



Prashant Y. Bhathena



Rashmi B. Ved



Rita N. Dholakia



Riya P. Shah



Sanjay N. Jogi



Satyam N. Divecha



Sheel J. Sanghrajka



Subhash N. Kothari



Vikram M. Thakkar



Vishnu C. Panchal



Yachika J. Makwana



બીજા દ્વારા મુકાયેલો અંકુશ નીચે પાડે છે જ્યારે પોતા દ્વારા મુકાતો અંકુશ ઉપર લાવે છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - SECOND YEAR - SUNDAY (HINDI)



Alka R. Seta



Amit P. Sharma



Bibhuti N. Chaudhari



Ghanshyam M. Joshi



Hemlata Y. Gurjar



Kalindi M. Bang



Pallavi Modi



Rahul Yadav



Ravindra K. Mehta



Rohan P. Shetty



Rooma B. Chauchary



Sandeep M. Chaurasiya



Vidya U. Shinde



Yasmin S. Makani



ફૂલો એ પૃથ્વી પર ફોરમ ફેલાવતાં અને હૈયાંને અજવાળતાં તારાઓ છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - SECOND YEAR - MONDAY



Amar K. Popat



Bijal D. Jethwa



Deena M. Mehta



Manisha C. Naik



Mansi P. Shukla



Piyush R. Raval



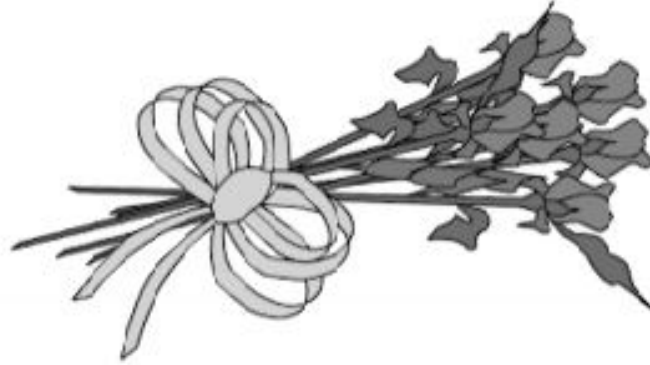
Pramadkumar M. Raval



Pratik C. Joshi



Reena N. Chheda



OUR ARDENT STUDENTS - THIRD YEAR - SATURDAY



Anupama H. Jani



Arti B. Jethmalani



Bhavna H. Gandhi



Dharmesh A. Thakkar

બગીચાનો ઉછેર કરવો એ પરમાત્માની સાથે ચાલવા બરાબર છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - THIRD YEAR - SATURDAY



Dhiru H. Kapadia



Heena C. Parekh



Kalpesh S. Shah



Kaushik R. Vanjara



Mital D. Kotak



Nayna S. Mehta



Parth V. Pandya



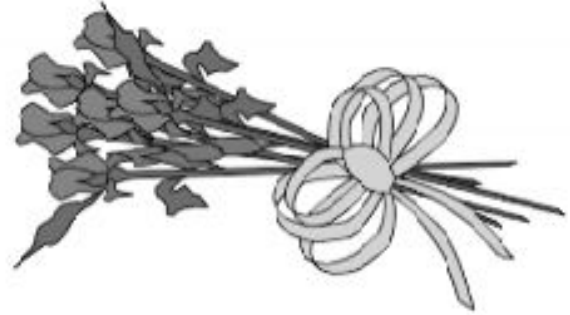
Ronak C. Trivedi



Urmila R. Bhatt



Vaishali S. Zaveri



OUR ARDENT STUDENTS - THIRD YEAR - SUNDAY



Annie K. Doshi



Divya A. Sharma



Kamini S. Mistry



Kishor B. Patwa

નસીબ સારું હોય તો ધૂળનું સોનું બની જાય છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - THIRD YEAR - SUNDAY



Pares B. Damania



Prakash P. Shah



Rekha R. Surti



OUR ARDENT STUDENTS - THIRD YEAR - SUNDAY (HINDI)



Anuradha G. Aggarwal



Damayanti V. Rawat



Kavita R. Chaneja



Manisha K. Amrute



Pankaj N. Soni



Rajesh C. Maurya



Sachin P. Naik



Sarika S. Kothari



Seema S. Tiwari



Sunil K. Bhatt



Sunita R. Rajbhar



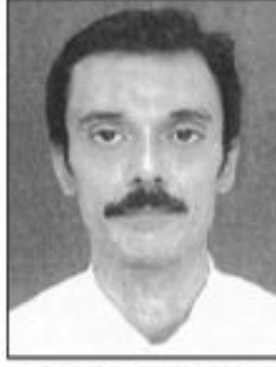
नसीबती धनवान जनी शकाय पए बुद्धिशाली न जनी शकाय.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - SW



Harsha P. Suru



Jignesh D. Suki



Savita J. Vagadia



OUR ARDENT STUDENTS - SW (HINDI)



Amar S. Upadhyay



Anita G. Savla



Geeta R. Bhadoria



Hetal A. Poladia



Indravadan Ji Koradia



Kusham M. Agrawal



Minakshi Ji Koradia



Pallavi K Sanishvara



Vandana K. Pakhrija



Vinod S. Sharma



परमात्माना प्रभुत्वनुं दर्शन अने तेनी भलाईनुं रहस्य सुंदर पुष्पो द्वारा पामी शकाय छे.

नक्षत्र ज्ञान माला

अश्विनि भरणी पद चार
कृत्तिका एक चरण है मेष ।
कृत्तिका तिन रोहिण्ये चार
दो पद मृग वृषभ विचार ।
मृग दो पद आर्द्रा चार
तिन पुर्नवसू मिथुन विचार ।
एक पुर्नवसू पूष्य श्लेष
जानिये कर्कट राशि विषेश ।
मघा पूर्वा उत्तरा पद एक
सिंह राशिका करो विवेक ।
उत्तरा तिन सकल पद हस्त
दो पद चित्रा कन्या जानो ।

दो पद चित्रा स्वाति चार
तिन विशाखा पद है तुल ।
एक विशाखा अनुराधा चार
ज्येष्ठा पूर्ण है वृश्चिक विचार ।
मूल पूर्वा उत्तरा पद एक
धनु राशिका करो विवेक ।
उत्तरा तिन श्रवण पद चार
दो धनिष्ठा मकर विभेद ।
दो धनिष्ठा शतभिष चार
पूर्वा तिन पद कुम्भ निर्धार ।
पूर्वा एक उत्तरा चार
सकल रेवति मीन विचार ।



तिथि दोहा

प्रतिपदा एकादशी षष्ठी नन्दा जान ।
दूज सप्तमी द्वादशी भद्रा मान ।
तृतीया अष्टमी त्रयोदशी जया जान ।
चौदशी चौथ नवमी येतो है रिक्ता मान ।
पंचदशी पंचमी तथा दशमी है पूर्णा मान ।
सब तिथियोके नाम सम जानो फल परिणाम ।



वैदिक ज्योतिष संस्थान (रजिस्टर्ड)

रजि. पत्रव्यवहारनं सरनामुं :

१२१/४४ डी, विश्वकुंज सोसायटी, सेक्टर १, चारकोप, कांटीवली (वेस्ट), मुंबई-४०० ०६७.

मोबाईल : ९३२२२६१७०८ / ७०४५४७०६६९ • ईमेल : vjtvv1@gmail.com

ज्योतिषना निःशुल्क वर्गों

गुजराती माध्यममां हस्तरेणा, ज्योतिष, वास्तु अने स्वरज्ञानना वर्गोंमां प्रवेश
जान्युआरी थी बोरीवली अने मलाड जाते

गुजराती अने हिन्दी

- | | |
|--------------------------------------|--|
| १. प्रथम वर्ष- वैदिक ज्योतिष प्रवेश. | १. प्रथम वर्ष- वैदिक हस्तरेणा विज्ञाता |
| २. द्वितीय वर्ष- वैदिक ज्योतिर्भूषण. | ३. तृतीय वर्ष- वैदिक ज्योतिषमार्तड |
| १. प्रथम वर्ष- वैदिक वास्तुप्रवेश | २. द्वितीय वर्ष- वैदिक वास्तुभूषण |
| १. वैदिक स्वरज्ञान ज्ञाता | ४. चतुर्थ वर्ष- स्वाध्याय |

नोंध :

भाषानुं ज्ञान धरावता कोर्ष पण उमरना
भाईओ तथा जहेनो प्रवेश मेणवी शके छे.

शास्त्रमां ज्ञान दानने श्रेष्ठ दान कहेवायुं छे जे आ संस्थानुं अेकमात्र ध्येय छे.

साहस गयुं तो समजु लेवुं के माणसनी अडधी समजदारी पण गर्ह.



We are grateful to the Trustees, Committee and Management of the following Institutions for permitting us to utilize their premises for conducting our classes.

1. Sheth M.K.E.S. English High School, Malad (W)

2. Anandibai Kale Vidyalay, Borivali (W)

We are grateful to the Newspaper and advertisers for their best co-operation and support.

★ **Janmabhoomi**

★ **Divya Bhaskar**

★ **Mumbai Samachar**

★ **Gujarat Samachar**

★ **Nav Bharat Times Hindi**

- : અંગ્રેજી મીડીયમમાં બાળકોને મૂક્યા હોય તો આ વાંચો :-

મેં ભારતદેશના ઉત્તરથી દક્ષિણ અને પૂર્વથી પશ્ચિમના વિસ્તીર્ણ વિસ્તારોનું પરિભ્રમણ કર્યું છે. આ દેશ એટલો સમૃદ્ધ છે અને તેની પ્રજાનું નૈતિક મૂલ્યોનું સ્તર એટલું ઉજ્જત છે કે મેં દેશમાં કોઈ નાગરિક એવો ન જોયો કે જે ભિક્ષુક હોય કે જે ધોર હોય. હું નથી ધારતો કે આવા ઉત્કૃષ્ટ નૈતિક મૂલ્યવાન દેશને આપણે ક્યારેય પણ જીતી શકીએ. સિવાય કે આ દેશની આધ્યાત્મિકતા અને સાંસ્કૃતિક વારસો કે જે રાષ્ટ્રની કરોડરજ્જુ સમાન છે તેનો આપણે નાશ કરી શકીએ.

અને આથી હું દરખાસ્ત કરું છું કે આપણે તેની ગૌરવસમી સદીઓ પુરાણી પ્રાચીન શિક્ષણ પ્રણાલી અને તેની સાંસ્કૃતિક પ્રથાઓને મૂળથી જ બદલીએ કે જેના પરિણામે હિન્દુસ્તાનીઓ માનતા થાય કે જે કંઈ વિદેશી છે અને ઇંગ્લીશ છે તે તેમના કરતા વિશેષ સારું છે અને મહાન છે અને આ કારણે તેઓ પોતાની ઓળખ તેમજ આત્મગૌરવ ગુમાવશે. પોતાનું નિજી સાંસ્કૃતિક સ્વરૂપ ગુમાવશે અને તેઓ એવા નાગરિકો બની જશે કે “ જેવા આપણે તેમને ઈચ્છીએ છીએ.”
(કાળ અંગ્રેજો-સ્વૈચ્છિક ગુલામો)

એ ખરા અર્થમાં આપણા આધિપત્યવાળું ગુલામ રાષ્ટ્ર બની રહેશે.

આપણને ઇતિહાસ(કે ઉડા) એવો ભણાવાયો કે આપણે અંધકાર યુગમાં જીવતા હતા.

કલકત્તા, ઓક્ટોબર ૧૨, ૧૮૩૬

પરમ પ્રિય પિતાજી !

આપણી શાળાઓ ખૂબ સરસ રીતે ઉજ્જતિ કરી રહી છે. હિન્દુઓ પર આ શિક્ષણનો પ્રભાવ અદ્ભુત થયો છે. અંગ્રેજી શિક્ષણ મેળવ્યું છે એવો એક પણ હિન્દુ એવો નથી જે સાચા હૃદયથી પોતાના ધર્મને અનુસરતો હોય. થોડા એવા છે જે નીતિના વિચારથી પોતાને હિન્દુ કહે છે અને કેટલાક ખ્રિસ્તી બની રહ્યા છે. એ મારો વિશ્વાસ છે કે જે આપણી આવી જ શૈક્ષણિક નીતિ ચાલતી રહેશે તો અહીંની સન્માનિત જાતિઓમાં આગામી ત્રીસ વર્ષોમાં એક પણ એવો બંગાળી બાકી નહીં બચ્યો હોય જે મૂર્તિપૂજક હોય. આ એમને ખ્રિસ્તી બનાવ્યા વિના જ થઈ જશે. એમના ધર્મમાં હસ્તક્ષેપ કરવાની આવશ્યકતા પણ નહીં રહે. આપણું (અંગ્રેજી) જ્ઞાન અને વિચારશીલતા વધારવાથી એ કામ આપમેળે થઈ જશે. આવી સંભાવના પરમને અત્યંત પ્રસન્નતા થઈ રહી છે.

વાંચવા પછી તમારું સ્વાભિમાન શું કહે છે ?

આપનો પ્રિય
ટી. બી. મેકોલ

સ્વભાવથી જ જે અયોગ્ય હોય તેના પર સત્સંગની અસર થતી નથી.

(ॐ) मंगला चरण (ॐ)

॥ श्रवण के आरंभ का मंगलाचरण ॥

ॐ सत्यं ज्ञानमनंतं यन्निष्कलं निष्क्रियं परम् ।

अद्वितीयं निर्विशेषं ब्रह्म तत्समुपास्महे ॥१॥

वह जो सत्यरूप, ज्ञानरूप, अनंत, प्राणादि कलाओसे रहित माया से रहित सूक्ष्म और व्यापक, द्वैत्य से रहित और नामादि विशेष से रहित ब्रह्म है, उनका हम अच्छी तरह से ध्यान करते हैं। (१)

शंकरं शंकाराचार्य केशवं बादरायणम् ।

सूत्रभाष्य कृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः ॥२॥

विष्णुरूप भगवान व्यास और महेश्वररूप श्री शंकराचार्य जो ब्रह्मसूत्र के शारीरिक भाष्य के कर्ता है, वह अश्व्यादिवाले दोनों को मैं बार बार नमन करता हूँ।(२)

अज्ञान तिमिरांधस्य ज्ञानांजनशलाक्या ।

चक्षुरुमीलितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥३॥

अज्ञानरूप अंधकारसे अँधे बने हुए की अंतःकरणरूप आँखे जिन्होंने अंजन की सलाई द्वारा खोली वह श्री गुरु को मेरे प्रणाम हो। (३)

ब्रह्मामानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति,

द्वंदातितं गगनसदृश्यं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ।

एकं नित्यं विमलचलं सर्वधीसाक्षीभूतं,

भावातीतं त्रिगुणरहितं सदगुरुतं नमामि ॥४॥

वह जो ब्रह्मरूप आनंदवाले, शिष्यों को परमसुख देनेवाले, अविद्या से रहित, ज्ञानरूप, सर्व द्वंद्वोसे पर, गगन जैसे निर्लेप वह आप है, इत्यादि महावाक्यों के लक्ष्यार्थरूप, एक तीनों कालमें रहनेवाले, सर्व प्रकार की अशुद्धि से रहित, चलायमान से रहित, सब प्राणीओं की बुद्धि के साक्षीरूप, छह प्रकार के भावविकारों से मुक्त एवम् तीन गुणों से रहित है, वह सदगुरु को मैं वंदन करता हूँ।

समाप्ति मंगलाचरण

॥ श्रवण के समाप्ति का मंगलाचरण ॥

नमस्ते सते ते जगत्कारणाय, नमस्ते चिते सर्वलोकाश्रयाय ।
नमोद्वैततत्त्वाय मुक्तिप्रदाय, नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय ॥१॥

सत्यरूप आपको प्रणाम, जगत के कारणरूप आपको प्रणाम, ज्ञानस्वरूप और सर्व लोक के आश्रयरूप ऐसे आपको प्रणाम, अद्वैत तत्त्वरूप को मोक्ष देनेवाले को प्रणाम, व्यापक और शाश्वत ब्रह्म को प्रणाम। (१)

त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं, त्वमेकं जगत्पालकं स्वप्रकाशम् ।
त्वमेकंजगत्कर्तृपार्तृप्रहर्तृ, त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम् ॥२॥

एक आप शरण ग्रहण करने योग्य हो, एक आप श्रेष्ठ हो, एक आप संसार को पालनेवाले तथा स्वयं प्रकाश हो, एक आप मायासे पर, अचल और सर्व विकल्पो से रहित हो। (२)

भयानां भयं भीषणं भीषणानाम्, गतिः प्राणानां पावनं पावनानाम् ।
महोच्चैः पदानां नियन्तृ त्वमेकं, परेषां परं रक्षणं रक्षणानाम् ॥३॥

भय उत्पन्न करनेवालों के भयरूप, भयंकरों के बचकररूप, सर्व प्राणीओं की गतिरूप, पवित्र बनाने वालों को पवित्र बनाने वाले, एक आप उच्च पदों में रहनेवालों को नियम से रखनेवाले, आकाशादि पर रहनेवालों से पर रहनेवाले और रक्षा करनेवालों की रक्षा करनेवाले हैं। (३)

श्रुतिस्मृतिपुराणानामालयं करुणालयम् ।
नमामि भगवत्पादं शंकरं लोकशंकरम् ॥४॥

श्रुति स्मृतिकों पुराणों के रूप को और ध्याना के भी घररूप और लोगों का कल्याण करनेवाले, जिनके चरणों में अश्वर्यादि रहे हैं ऐसे श्री शंकराचार्य को मैं वंदन करता हूँ। (४)

सौजन्य आनंदाश्रम मुमुक्षु मंडल ट्रस्ट

स्नानथी तन, दानथी धन, सहनशीलताथी मन अने धर्मान्दारीथी ज्ञान शुद्ध मन छे.

वैदिक ज्योतिष संस्थान गुरुयौर्णिमा महोत्सव २०१९ के अवसर पर प्राण का महत्व नारदजी तथा सनत्कुमार के संवाद

हमारा शरीर एक प्रकार से अपने आपमें रहस्यमय बना हुआ है, इसमें नौ द्वारों की कल्पना की गई है अन्य मत से दश द्वारों की मान्यता भी प्रचलनमें है, (मलद्वार, लिंग-योनीद्वार, मुख, नाक के दोनो नथुने, दो आंखें, दो कान ये नौ हुए दसवा जो द्वार है वह स्थूल शरीरके अनुसार नाभी, आध्यात्म के अनुसार भ्रुकुटीका मध्य (आज्ञाचक्र) तथा योगी महात्मा के लिए ब्रह्मरंध्र (सिखा स्थान, शरीरका नक्षत्र बिंदु) दसवा द्वार माना जाता है, इन द्वारों के द्वारा साधकों को गुरु के मार्गदर्शनमें शक्तिको उर्ध्व गमन करवाई जाती है, मनुष्य शरीरमें उर्ध्व गमन के लिए सात प्रकार के पायदान समान सात चक्र दिए गए हैं, इन सात चक्रोंका संबंध दुर्गा सप्तशती के स्वर पाठ से भी देखे जाते हैं, यहा मेरुदंड में स्थित सप्त देवीयाँ भगवती, वैदेही, जानकी, नारायणी, कुल कुंडलीनी, पारम्बा तथा जगन्माता ये प्राण के प्रवाह को उपर की ओर उठाकर उर्ध्व गती प्रदान करती हैं, हमारा शरीर पांच कोशों से बना है, अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय तथा आनंदमय.

सृष्टीकी रचना का क्रम : ब्रह्म, माया, महद, अहंकार, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, औषध, अन्न, वीर्य तथा पुरुष.

प्राणकी ताकत का तथा महिमा का परीचय हमें छांदोग्य उपनिषद् में नारदजी तथा सनत्कुमार के संवाद द्वारा मिलता है, इनका संवाद नाम से आगे बढ़ता है जैसे नाम से बढ़कर क्या होता है ? सनत्कुमार का जवाब वाणी, वाणी द्वारा वेद तथा विद्या एवं वस्तु प्रकट होती है, अतः वाणीकी उपासना करो.

नारदजी : वाणी से बढ़कर क्या होता है ? सनत्कुमार : वाणी से बढ़कर मन होता है क्योंकि मनके द्वारा वाणी तथा नामका अनुभव होता है, क्योंकि मननें विचार आने पर कर्म होता है आत्मा भी मनके द्वारा भोगों को भोगता है, मन ही ब्रह्म की प्राप्ति का साधन है, अतः मन की उपासना करो.

नारदजी : मन से बढ़कर क्या होता है ? सनत्कुमार : मन से बढ़कर संकल्प होता है क्योंकि संकल्प के बाद ही विचार आता है, वायु तथा आकाश से भी संकल्प अधिक सामर्थ्यवान होता है, अतः संकल्प की उपासना करो ।

नारदजी : संकल्प से बढ़कर क्या होता है ? सनत्कुमार : संकल्प से बढ़कर चित्त होता है क्योंकि चित्त रिचारोंका संकल्पोंका तथा कर्मोंका केन्द्र होता है, अतः चित्त की उपासना करो ।

नारदजी : चित्त से बढ़कर क्या होता है ? सनत्कुमार : चित्तसे बढ़कर ध्यान होता है क्योंकि ध्यान के द्वारा ही लोग महत्व को प्राप्त करते हैं ध्यान के द्वारा ही गंभीरता तथा शांती की प्राप्ति होती है, अतः ध्यान की उपासना करो ।

नारदजी : ध्यान से बढ़कर क्या होता है ? सनत्कुमार : ध्यान से बढ़कर विज्ञान होता है क्योंकि विज्ञान के द्वारा मनुष्य वेदों, भूतों तथा भौतिक ज्ञानको प्राप्त कर पाता है, अतः विज्ञान की उपासना करो ।

दूसरों द्वारा की गयी गलतियों से सीखो, अपने ऊपर प्रयोग करके सीखने में तुम्हारी आयु कम पड़ जायेगी ।

नारदजी : विज्ञान से बढ़कर क्या होता है ? सनत्कुमार : विज्ञान से बढ़कर बल होता है क्योंकि एक बलवान व्यक्ति सौ विज्ञानोंको बल से रोक सकता है, बलवान व्यक्ति उद्यमी बनता है उद्यमी सभीको प्रिय होता है, बलके कारण ही पशु, पक्षी, मनुष्य, देवता, पर्वत, वनस्पती अपनी अपनी जगह पर टीके हुए हैं, अतः बल की उपासना करो ।

नारदजी : बल से बढ़कर क्या होता है ? सनत्कुमार : बल से बढ़कर अन्न होता है क्योंकि बल की प्राप्ती अन्न से होती है, अतः अन्न की उपासना करो ।

नारदजी : अन्न से बढ़कर क्या होता है ? सनत्कुमार : अन्न से बढ़कर जल होता है क्योंकि जल के बीना अन्न उत्पन्न नहीं हो पाता अन्न जलके द्वारा ही उत्पन्न होता है, अतः जल की उपासना करो ।

नारदजी : जल से बढ़कर क्या होता है ? सनत्कुमार : जल से बढ़कर तेज होता है क्योंकि तेज से उष्णता बढ़ने पे ही जल की वर्षा होती है, तेज के कारण ही जल की उत्पत्ती होती है, अतः तेज की उपासना करो ।

नारदजी : तेज से बढ़कर क्या होता है ? सनत्कुमार : तेज से बढ़कर आकाश होता है क्योंकि आकाश में अवकाश है यही पर सूर्य, चंद्र, नक्षत्र, विद्युत समाये हुए हैं, आकाश अनंत है आकाश का गुधर्म शब्द है जमीन में डाला हुआ बीज अंकुरित होकर आकाश की तरफ ही बढ़ता है, अतः आकाश की उपासना करो ।

नारदजी : आकाश से बढ़कर क्या होता है ? सनत्कुमार : आकाश से बढ़कर स्मृति होता है क्योंकि स्मृति के द्वारा ही एक दुसरे को जाना तथा माना जाता है, अतः स्मृति की उपासना करो ।

नारदजी : स्मृति से बढ़कर क्या होता है ? सनत्कुमार : स्मृति से बढ़कर आशा होती है क्योंकि आशा ईच्छा को इंधन देती है, चाहना बढ़ाती है, आशा अमर है, अतः आशा की उपासना करो ।

नारदजी : स्मृति से बढ़कर क्या होता है ? सनत्कुमार : स्मृति से बढ़कर प्राण होता है क्योंकि जीवन के समस्त तत्व प्राण से जुड़े हुए हैं, शरीरमें प्राण है तो संसार है, बीना प्राण के जगत शून्य होता है, जगत का सारा स्थावर जंगम प्राण पर निर्भर रहता है, अतः प्राण की उपासना करो ।

नारदजी ने इसके आगे प्रश्न नहीं किया परुं प्राण से आगे विराट प्राण भी होते हैं हमें हमारे दैनिक कार्य का आरंभ अपने प्राण को विराट के प्राण से मिलाकर आरंभ करने से सारे कार्य बिना किसीभी अडचन या उलझन के साथ निश्चिततापूर्वक सफलता के साथ पार पडते हैं ।

- संकलन : आचार्य अशोकजी



मुलाधार यज्ञ



स्वाधिधान यज्ञ



भधिपुर यज्ञ



अनाहत यज्ञ

ईमानदारी, चरित्र, विश्वास, प्रेम और वफादारी संतुलित सफलता के लिए नीब के पत्थर हैं ।

गोचर फल

वर्तमान समय में ग्रहों का राशी भ्रमण यानि गोचर । हरेक पल ग्रहों की स्थिति भिन्न भिन्न होती है और यह स्थितियाँ द्वारा कुछ खास प्रकार के योगों का निर्माण होता है । ऐसे योगों जातक के जन्म के ग्रहों के साथ या भाव मध्य बिंदु के साथ होने से प्रत्येक जातक को अलग अलग फल की प्राप्ति एक ही समय में होती है, उस वक्त जातक की कुंडली के अनुसार फल तय किया जाता है, जो उस समय पे चलती दशा और उस समय पर आधारित ग्रहों की आकाशीय स्थिति पर निर्भर करता है । गोचर ग्रह द्वारा शुभ योगों का निर्माण होता है जिसका फायदा जातक को लेना चाहिए और अशुभ योगों से बचने के मार्ग ढुंढ लेने चाहिए ।

गोचर देखते वक्त जन्म के ग्रहों को ध्यान में रखकर आगे बढ़ना चाहिए । जन्म के बलवान ग्रह संपूर्ण जीवनभर अच्छा या शुभ फल देते हैं, उसी प्रकार कमजोर ग्रह या कमजोर भाव अशुभ ग्रहों से ग्रस्त होते है तब अशुभ फल देते हैं । जब कुंडलीमें कोई ग्रह बलवान न हो, शुभ भाव में न बैठा हो तब कुछ भी अच्छे फल की आशा रखना बेकार है ।

जन्म कुंडली के भाव फल को ध्यान में रखना चाहिए की वह कमजोर भाव अशुभ ग्रहों से ग्रस्त हो, उस भाव के सब कारक कमजोर और अशुभ ग्रहों से युक्त हो और जिस विषय का फल देखना हो उससे जुड़ी वर्ग कुंडलीका लग्नेश कमजोर या अशुभ ग्रहोंसे युक्त हो तब शुभ गोचर शुभ फल प्रदान नहीं कर सकता है ।

जन्म समय की लग्न राशि के मुताबिक हरएक जातकका हर एक ग्रह शुभ या अशुभ बनता है । अशुभ ग्रह यानि ६, ८, १२ के मालिक और राहु, केतु । बाकि के ग्रहों को शुभ माना जाता है । प्रत्येक जातकको गोचरमें इस प्रकारसे शुभ या अशुभत्व लेना है । राहु कभी कबार शुभ फल दे जाता है, जब राहु शुभ स्थान में बैठा हो (६, ८, १२ अतिरिक्त), कोई भी ग्रह की युति या कोई भी ग्रह पर द्रष्टि न करता हो, भाव मध्य पर न हो और उसका राशि अधिपति बलवान हो ।

जब जब गोचर में ग्रहों जन्म के ग्रहों के साथ या भाव मध्य के साथ ३ तरह से योग पैदा करते है तब तब शुभ-अशुभ संयोग होते हैं । शुभ ग्रहों से बननेवाले योग शुभता देते हैं और अशुभता में अशुभ ग्रहों का योगदान होता है । इस ३ तरह के गोचर निम्नलिखित नियम के हिसाबसे लेना है, ३ में से एकभी योग कम हो, तब संयोग बनता नहीं है उसका खयाल रखना है ।

- १) जन्म के ग्रहों पर या भाव मध्य पर गोचर ग्रहोंकी युति या द्रष्टि ।
- २) गोचर के ग्रहोंकी गोचर के ग्रहों के साथ युति या द्रष्टि योग ।
- ३) गोचर के ग्रह पर जन्म के ग्रहोंकी युति या द्रष्टि की असर

उ.दा. जन्म का मंगल १० भाव में हो तब गोचरका ग्रह १ला, ४था, ५वा या १०वे भाव में आता है तब जन्म के मंगल की गोचर ग्रह पर असर हुई है ऐसा मानना है ।

गोचर समजते वक्त जातककी चलती दशा, अंतरदशा का ध्यान रखना है और वह ग्रहों का गोचर

“मैं सब जानता हूँ” यह सोच इन्सान को कहीं का भेदक बना देती है ।

अवश्य देखना है, साथ साथ में जातक को चलती साढेसाती का भी ध्यान रखना है । स्वंभी, वक्री, अस्त, घीरे और तेज गोचर ग्रहों की विशिष्ट असर देखने मिलती है ।

गोचर में बनते अमास, पूनम जैसे योग विशेष प्रभावित होते हैं । राष्ट्र ज्योतिष में उनको महत्व दिया जाय तब फल समझने आता है । कुंडली में जन्म के ग्रहोंकी असर ध्यान में रखना आवश्यक होता है । उ.दा. अमास का योग जन्मके शनि के साथ प्रतियोग प्रदान करता है तब शनि, विमारी, अघात, घाटा, बिछडना इत्यादी परेशानियाँ देता है । ग्रहोंके अंश पर निर्भर ग्रह मंगल, शनि, गुरू, हर्षल, नेप्युन, प्लुटो तब अरसे तक प्रभाव देते है ।

जन्म कुंडलीमें योग बनानेवाले ग्रहों गोचरमें भी जब जब योग पैदा करते है तब प्रभावित फल दिखाते है । उ.दा. शनि कोई भी अन्य ग्रह के साथ जन्म के वक्त अशुभ द्रष्टि योगमें हो, गोचरमें जब जब शनि उसी ग्रह के साथ अशुभ द्रष्टि योगमें आता है तब अधिक बुरा फल देखने मिलता है और शुभ द्रष्टि योग में आता है तब अशुभ फल कम मात्रामें मिलता है । जब जब गोचरमें ग्रह द्रष्टि योग निर्माण करते है और उस वक्त चंद्र भी गोचर के किसी भी ग्रह के साथ द्रष्टियोगमें आता है उस दिन उपर दर्शाये फलों का तजुर्बा होता है ।

जब जब शुभ ग्रह गोचर में त्रिकोण योग, युति योग बनाते है और जातक के राष्ट्रकी कुंडलीमें भी वड ग्रह कोई भी योगमें हिस्सेदार होता है तब जातक के राष्ट्र के लिए अधिक शुभ पुरवार होता है ।

- १) दशा, अंतर दशा अशुभ ग्रहोंकी चलती हो और भाव मध्यके नवमांशमें भी अशुभ ग्रहोंका गोचर भ्रमण शोकनीय घटना देता है ।
- २) छीद्र ग्रह के साथ शनि संबधित होता है और छीद्र ग्रह अटमसे गुजरता है तब मृत्यु या मृत्युतुल्य पीडा देता है ।
- ३) जन्म के ग्रह कमजोर हो, ६, ८, १२वे भाव में बैठे हो और अशुभ ग्रहसे ग्रस्त हो, जब जब ऐसे ग्रहोंको अशुभ ग्रहों का गोचर प्रभावित करता है, जैसे की राहु-केतु ग्रहण योग, अशुभ द्रष्टियोग गंभीर बुरी घटना देता है, यहाँ ध्यान रखना है की नीच भंग, राजयोग करनेवाले ग्रह दुःख और चिंता के साथ राजयोग देता है ।

पूरे समाजमें दुःख दर्द कब आता है ?

गोचरमें जब जब दो से अधिक ग्रह वक्री बनते है तब अधिक मृत्यु होती है ।

- नितीन भट



मुन्था पर ग्रहों की राशि, युति / द्रष्टि फल

विद्वानों के मत अनुसार मुन्था शब्द फारसी के इन्तिहा का ही अपभ्रंश है जिनका अर्थ सीमा या समाप्ति होता है इन्तिहा से बिगडकर भिर्नयहा, भिन्था, मुन्थाहा होते होते अंतमें मुन्था बन गया । मुन्था ताजिक ज्योतिष का एक विशिष्ट अवयव है । वास्तव में यह जन्म लग्न का ही प्रोप्रेशन है । जन्म के वर्ष में यह मुन्था लग्न में होती है अगले वर्ष दुसरे भाव में इस प्रकार १२ वर्षों में कुंडली के १२ भावों में होते हुए १३वें वर्ष में यह फिर लग्न में पहुंच जाती है ।

सूर्य - मुन्था सूर्य से युति / द्रष्टि अथवा सिंह राशि में हो तो तो राज्य कृपा, सरकारी नोकरी में पदोन्नति, पिता से लाभ, उच्च अधिकारियों से मित्रता व लाभ, चुनाव में सफलता आदि शुभ फलों की प्राप्ति होती है । किंतु ४, ८, १२ भाव की मुन्था हो तो उपरोक्त क्षेत्रों में जातक को अशुभ फल मिलेंगे ।

चंद्रमा - चंद्रमा बलवान हो तो स्वास्थ्य अच्छा, शारीरिक व मानसिक सुख, यश-सम्मान में वृद्धि, सुख व आनंद की प्राप्ति सात्विक विचार व आचरण आदि शुभ फल । चंद्रमा पिंडित व क्षोण बली हो तो उपरोक्त अशुभ फलों की प्राप्ति होती है ।

मंगल - मंगल संबंधी योग, चोट, दुर्घटना, शल्यक्रिया, झगडे, धनहानि अत्याधिक व्यय आदि अशुभ फल की प्राप्ति होती है । किंतु मंगल बलवान व शुभ प्रभाव में हो तो साहस, उत्साह में वृद्धि विरोधियों पर विजय, सकल ओपरेशन आदि का लाभ होता है ।

बुध - विवाह, मंगलकार्य, मिडीया संबंधी कार्योंमें सफलता, विद्या लाभ, व्यापार में उन्नति, स्त्रियों से मित्रता व आकस्मिक लाभ आदि शुभ फल मिलते हैं, किंतु यदि बुध पापीग्रह द्वारा पिंडित हो तो उपरोक्त संबंधी कार्योंमें व्यवधान पडते हैं या हानि की संभावनायें बढती हैं ।

गुरु - संतान प्राप्ति अथवा सुख, विद्या लाभ, गुरु प्राप्ति, धन लाभ, भाग्य, यश, पद, राज्यकृपा, उच्च व्यक्तियों से संबंध आदि शुभ फलों की प्राप्ति होती है ।

शुक्र - लक्ष्मीकृपा, भोग-विलास सामग्री, वाहन प्राप्ति, विवाह, स्त्री सुख, आदि शुभ फलों में वृद्धि होती है किंतु पींडित शुक्र जातक को व्यसन, पतन व अपकृति के मार्ग पर ले जाता है ।

शनि - शनि युक्त मुन्था जातक को शारीरिक व मानसिक पीडा, अत्याधिक व्यय, हानि, कार्योंमें असफलता व गृहत्याग की ओर धकेल देती है ।

राहु / केतु - राहु / केतु की युति भी शनि की तरह मुन्था पर दूषित प्रभाव बनाती है । जातक को लांछन, अपकृति, पतन, असफलता की ओर ले जाती है, किसी वृद्ध व्यक्ति की मृत्यु का भी संकेत करती है । कुछ विद्वानों का मत है कि राहु वर्ष के प्रारंभ में शुभ फल करता है तथा अंतमें अशुभ । इसके विपरीत केतु आरंभ में कष्ट देता है तथा अंतमें शुभ फल करता है ।

- १) यदि मुन्था के साथ शनि, मंगल, पापग्रह वर्षण होकर स्थित हो तो ऐसी मुन्था के शुभ फल हो होंगे ।
- २) मुन्था पर त्रिक (६, ८, १२) भावों के स्वामियों की युति / द्रष्टि (शत्रु) का प्रभाव अशुभ होता है ।
- ३) मुन्थेश यदि नीच, वक्री, पापश्रेणी, पाप कर्तरी में हो तो शुभ मुन्था के फलों में कमी आती है ।

- प्रतिमा पंड्या

यह दबदबा, यह रुतबा, यह नशा, यह दौलत सब किरायेदार है.... घर बदलते रहते है ।

સાતમું સ્થાન - દાંપત્ય જીવન

જીવનમાં લગ્નનું એટલે કે દાંપત્યજીવનનું મહત્વ છે. જન્મકુંડલીમાં સાતમું સ્થાન એટલે લગ્નનું સ્થાન કહેવાય છે. લગ્નજીવન સુખી સમૃદ્ધ અને શાંતિમય પસાર થાય એવું તો બધાજ ઈચ્છે છે. પરંતુ લગ્નજીવનમાં તણાવ આવે અને એવી પરિસ્થિતિ સર્જાય છે કે લગ્નભંગ એટલે કે છુટાછેડા જેવી પરિસ્થિતિ આવે છે. અને કાનુની પ્રશ્નોદ્ધારા યુવક-યુવતીના જીવનમાં ભુકંપ જેવી પરિસ્થિતિ સર્જાય છે. આ બધામાં પણ જો કોઈ નબળી કડી સમાજ સમક્ષ આવે છે તો પ્રશ્ન ના ઉકેલ કરતાં ગુંચવણ વધુ ઉભી થાય છે. આથી માનસિક તાણ (ડીપ્રેશન) તેમજ આર્થિક બાબત પર પણ અસર થાય છે.

ઘણીવાર જન્માક્ષર (કુંડળીમેળાપક) મેળાપ કરાવીને લગ્ન કરેલ હોય છતાં પણ આવી સ્થિતિ આવે તો જીવન ઝેર જેવું બની જાય છે.

આજકાલ યુવક-યુવતીને પોતાને થાય કે માફ મનગમતુ પાત્ર એવું હોય - એજ્યુકેટેડ, આર્થિક રીતે સધ્ધર, સુંદરતા આ બધુ જ જોઈએ. સાથે સાથે પરિવારના સભ્યોની ડિમાન્ડ કંઈક આવી જ હોય છે. આ બધો તાલમેલ બેસાડતા ઘણી વાર ઉંમર વધી જાય અને ડિમાન્ડ ઘટતી જાય છે. સાથે સાથે સારા યોગો પણ ચાલ્યા જાય છે. તે માટે લગ્નયોગ ક્યારે છે તે જાણવાની ઈચ્છા ધરાવતા અંતે જ્યોતિષવિદ્ ને પૂછવામાં આવે છે.

જન્મકુંડળી પરથી સૌ પ્રથમ રાશિમેળ કરવો જરૂરી છે. તો સાથે શનિ અને મંગળની સ્થિતિ (માંગલિક) પણ મેળવવી જોઈએ. મેળાપકમાં ચંદ્ર રાશિ કે ચંદ્ર નક્ષત્ર પરથી દોકડા ગણાય છે.

લગ્નજીવનનું ધ્યેય ધર્મ, અર્થ, કામ અને મોક્ષ ને ગણ્યું છે. સારું જીવન જીવવા માટે ધર્મનું પાલન કરવું અર્થનું ઉપાર્જન કરવું અને અર્થનું સર્જન કરનારને સહકાર સાથે આપવો સહજીવનથી શ્રેષ્ઠ મનુષ્ય ઉત્પત્તિ તરફ પ્રયાણ કરી મોક્ષના અધિકારી બનવું. એકબીજાને અનુકુળ થઈને સૂમેળભર્યું જીવન જીવવું એ મનુષ્યનો સ્વભાવજ ભાગ ભજવે છે. આ સાથે કુંડળીમાં લવમેરેજ-કેએરેન્જ મેરેજ છે તે પણ જાણી શકાય છે.

વિવાહ સંસ્કારમાં મહત્વનું અંગ મેળાપક. મેળાપક એટલે યુવક-યુવતીની જન્મકુંડળી. યુવક-યુવતીની જન્મકુંડળી ચંદ્રરાશિ, જન્મનક્ષત્ર અને તેના ચરણો સાથે હોવા જોઈએ. યુવક યુવતીના મેળાપક ૮ પ્રકારે થાય છે.

૧) વર્ણ, ૨) વૈશ્ય, ૩) તારાબળ, ૪) યોની, ૫) ગ્રહમૈત્રી, ૬) ગણ, ૭) ભૃકુટ, ૮) નાડી.
કુલ ગુણ ૩૬ થાય

૧૮ થી ઓછા ગુણ મેળાપક નથી

૧૯ થી ૨૭ મધ્યમ

૨૮ થી ૩૪ ઉત્તમ

૩૫ થી ૩૬ અતિ ઉત્તમ

कोई भी आदत लगने में बक्त नहीं लगता, मगर आदत को खतम करने में जिदगी गुजर जाती है।

એકલા ગુણાંકથી નિર્ણય ન લેવો જોઈએ.

જન્માક્ષર પરથી આત્મિયતા, મનમેળ, કુટુંબભાવના, ફરજ, વૈધવ્ય, આયુ, વ્યાધિ, આર્થિક બાબત, છૂટાછેડા વગેરે જોવું જરૂરી છે.

અહીં આપણે સાતમાં સ્થાનમાં રહેલા ગ્રહોની અસર વિશે જાણીશું.

સૂર્ય - આ સ્થાનમાં સૂર્યનું બળ સારું નથી. લગ્નજીવન ઘર્ષણવાળું એક થી વધુ સગાઈ, લગ્નના યોગ બને, જીવનસાથીની પ્રતિષ્ઠા ખૂબ સારી હોય છે.

ચંદ્ર - સાતમે ચંદ્ર આવી વ્યક્તિ ખૂબ જ લાગણીવાળી હોય સુંદર વ્યક્તિ સાથે લગ્ન થાય લગ્નજીવન ખૂબજ સારું જાય છે. ક્યારેક લગ્નવિદેશમાં પણ થાય.

મંગળ - સાતમે મંગળ લગ્ન જલ્દી થાય, સ્વભાવ ઉગ્ર, નાની નાની બાબતોમાં ગેરસમજો ઉભી થાય છે. છૂટાછેડા પણ શક્ય બને છે. (મંગળ કઈ રાશિમાં છે તે જોવું)

બુધ - સાતમ સ્થાનમાં બુધ, વ્યક્તિ ખૂબ જ સમજદાર હોય છે. બુદ્ધિજીવી હોય છે. લેખક-પત્રકાર હોઈ શકે પણ લગ્નજીવનમાં ઉદાસીનતા જોવા મળે પણ લગ્નજીવન સારુ જાય છે.

ગુરૂ - સાતમા સ્થાને ગુરૂ - આધાત્મિક વિચારો રહે છે સમજદારી થી વર્તવું પડે ગુરૂ શુભ હોવા છતાં અવરોધ ઉભા થઈ શકે છે.

શુક્ર - સાતમે શુક્ર કારક ગ્રહ, વહેલા લગ્નયોગ, જીવનસાથી મોજુલા સ્વભાવનો, કલાકાર પણ હોઈ શકે, ઘણીવાર એક થી વધુ લગ્ન યોગ પણ બને છે.

શનિ - મોડા લગ્નના યોગ. લગ્નજીવન સારું રહે પણ શુભ ગ્રહોની દ્રષ્ટિ હોય તો શનિ પોતાની રાશિનો હોય તો જીવનસાથી વિશ્વાસુ મળે છે.

રાહુ-કેતુ - લગ્નજીવનમાં મુશ્કેલી સર્જે છે. વૃદ્ધ (ઉંમરમાં ઘણો તફાવત) વ્યક્તિ કે હલકી વિચાર સરણી ધરાવતી વ્યક્તિ સાથે સગાઈ-લગ્ન થાય એક થી વધુ લગ્નના યોગ બને કાનૂની પ્રશ્નો પણ ઉભા થઈ શકે છે.

સાતમા સ્થાનમાં રહેલા ગ્રહો અને સાતમા સ્થાનમાં રહેલી રાશિ ઉપરથી થોડુ અનુમાન મળે છે. પોતાની રાશિમાં ગુરૂ હોય અને સાતમે દ્રષ્ટિ હોય તો લગ્નજીવન ટકાવી રાખવાની ભાવના હોય છે.

- પ્રમીલા પંચાલ



લગ્ન કુંડળી - નવમાંશ - વર્ગોત્તમ નવમાંશ - પુષ્કર નવમાંશ

સામાન્ય રીતે જન્મ લગ્ન કુંડળી સાથે નવમાંશ કુંડળીનો પણ અભ્યાસ કરાતો હોય છે. નવમાંશ કુંડળીને બધી અલગ-અલગ કુંડળીઓમાં સૌથી મહત્વ આપવામાં આવ્યું છે.

નવમાંશ એટલે શું ?

રાશિચક્રમાં એક રાશિ ૩૦° હોય છે. ૩૦° અંશના નવ સરખા ભાગ કરવામાં આવે તો એક ભાગ ૩° ૨૦' નો થાય. જેને રાશિનો નવમાંશ કહે છે. એક નક્ષત્રનું ચરણ પણ ૩° ૨૦' નું હોય છે.

જન્મ લગ્ન કુંડળીને નવમાંશ કુંડળી સાથે જોવામાં આવે છે. તેનું એક મહત્વનું કારણ એ છે કે ગ્રહ, રાશિના કયા નક્ષત્ર ચરણમાં છે તે સહેલાઈ થી સમજી શકાય. આમ નવમાંશ અને નક્ષત્ર એક સિક્કાની બે બાજુ છે.

નવમાંશ કુંડળી શા માટે જોવી ?

નવમાંશ કુંડળીથી ગ્રહોની પરફેક્ટ પોઝિશન, ગ્રહ કયા નક્ષત્રમાં કયા ચરણમાં છે એટલી ડિટેલ કુંડળી જોતાં જ સમજી શકાય. જેના પરથી ગ્રહનું બળ જાણી શકાય ઉપરાંત જન્મ લગ્ન કુંડળીના લગ્નનું બળ-વિશોપક બળ મેળવવું હોય છે ત્યારે જુદી-જુદી વર્ગ કુંડળી માંથી લગ્ન કુંડળીને ૨૦ માંથી ૬ ગુણ અને નવમાંશ કુંડળીને ૫ ગુણ આપવામાં આવે છે. જે નવમાંશનું મહત્વ સાબિત કરી આપે છે.

વર્ગોત્તમ નવમાંશ

જન્મ લગ્ન કુંડળીમાં જે લગ્ન ઉદિત હોય તેજ લગ્ન નવમાંશમાં હોય તો વર્ગોત્તમ લગ્ન કહે છે. એવી કુંડળીને બળવાન કુંડળી મનાય છે.

જ્યારે કોઈ ગ્રહ જન્મ કુંડળીમાં કોઈ એક રાશિમાં રહેલો હોય અને નવમાંશ કુંડળીમાં પણ એજ રાશિમાં હોય તો તેવા ગ્રહને વર્ગોત્તમ ગ્રહ કહે છે.

ગ્રહ જ્યારે વર્ગોત્તમ થાય ત્યારે બળવાન થયો ગણાય કારણકે જે રાશિમાં હોય તે રાશિના બધાજ ગુણધર્મો અને સ્વભાવ જોવા મળે છે. જો રાશિ શુભ હોય તો ઉત્તમ શુભફળ આપે.

દા.ત. મંગળ શુકની વૃષભ રાશિમાં રહેલો છે વૃષભ સ્થિર સ્વભાવની પૃથ્વી તત્વની રાશિ છે. નૈસર્ગિક કુંડળીમાં બીજા સ્થાને છે બીજો ભાવ ધન, કુટુંબ, વાણીનો છે.

વર્ગોત્તમ થયેલો મંગળ વૃષભ રાશિના બધાજ ગુણધર્મો પ્રમાણે રીઝલ્ટ આપી શકે. વર્ગોત્તમ ગ્રહ જો અગ્નિતત્વ નો હોય તો ખૂબ સારૂ ફળ આપે છે. (દશા-અંતરદશા દરમ્યાન)

ભાવોત્તમ ગ્રહ

જ્યારે કોઈ ગ્રહ જન્મ કુંડળીમાં જે ભાવમાં હોય તેજ ભાવમાં નવમાંશમાં પણ રહેલો હોય તેને 'ભાવોત્તમ ગ્રહ' કહેવાય છે.

જે ભાવમાં ગ્રહ ભાવોત્તમ થયો હોય તે ભાવના તમામ કારકત્વ ગ્રહ આ ગ્રહને બળ આપશે.

પુષ્કર નવમાંશ

પુષ્કરાંશ એ રાશિ ચક્રની બાર રાશિમાં એવા ખાસ અંશો છે.

પુષ્કરાંશને પુષ્કર નવમાંશ તરીકે પણ ઓળખવામાં આવે છે. પુષ્કર એટલે પુષ્ટ કરનાર, પોષણ કરનાર. કોઈ પણ ગ્રહ પુષ્કર નવમાંશમાં હોય એ ગ્રહ એના સ્વભાવ મુજબ પુષ્ટ કરે. પુષ્કર નવમાંશમાં રહેલો ગ્રહ ધન, સંપત્તિ, નામ, પ્રસિદ્ધિ, ભૌતિક સુખ આપે છે.

અગ્નિતત્વની રાશિ ૧, ૫, ૯ માં ૭મું અને ૮મું નવમાંશ • પૃથ્વીતત્વની રાશિ ૨, ૬, ૧૦માં ૫મું અને ૩જુ નવમાંશ • વાયુતત્વની રાશિ ૩, ૭, ૧૧ માં ૬ઠું અને ૮મું નવમાંશ • જળતત્વની રાશિમાં ૪, ૮, ૧૨ માં ૧જુ અને ૩જુ નવમાંશ પુષ્કર નવમાંશ ગણવામાં આવે છે.

ટોટલ ૨૪ પુષ્કર નવમાંશ હોય છે. દરેક રાશિમાં ૨ નવમાંશ પુષ્કર નવમાંશ હોય છે. પુષ્કર તરફ ધ્યાન આપશો તો જણાશે કે બધી જ રાશિ સૌમ્ય અને શુભ રાશિ છે. જેમ કે ૨, ૭, ૩, ૬, ૪, ૯, ૧૨ મી રાશિ અનુક્રમે શુક્ર, બુધ, ચંદ્ર અને ગુરૂની રાશિ છે. આમ શુભત્વ આપતી જ રાશિઓ પુષ્કર નવમાંશ તરીકે છે.

આ બધી જ રાશિ ધન, સંપત્તિ, ભૌતિક સુખ આપનારી રાશિ છે.

પુષ્કરાંશ અને વર્ગોત્તમ

કોઈ ગ્રહ વર્ગોત્તમ હોય સાથે પુષ્કર નવમાંશમાં પણ હોય તો તે સોને પે સુહાગા જેવું હોય. આવા વર્ગોત્તમ હોય અને વળી પુષ્કર નવમાંશ પણ હોય તેવા ત્રણ નવમાંશ છે.

૧. વૃષભ - રાશિનું વર્ગોત્તમ નવમાંશ રોહિણી નક્ષત્રનું બીજું ચરણ જે સ્થિર સ્વભાવની વૃષભ રાશિનું પાંચમું નવમાંશ પુષ્કર નવમાંશ છે.

૨. કર્ક - રાશિનું વર્ગોત્તમ નવમાંશ પુર્નવસુ નક્ષત્રનું ચોથું ચરણ જળતત્વની રાશિનું પહેલું નવમાંશ પુષ્કર નવમાંશ.

૩. ધન - રાશિનું વર્ગોત્તમ નવમાંશ ઉત્તરાષાઠાનું પહેલું ચરણ અગ્નિતત્વની રાશિનું નવમું નવમાંશ પુષ્કર નવમાંશ.

આ નવમાંશમાં કોઈ ગ્રહ રહેલો હોય તો જીવનમાં જરૂર સફળતા મેળવી શકો છો. જીવનમાં કંઈક શ્રેષ્ઠ પામી શકો છો.

પુષ્કર નવમાંશમાં રહેલો ગ્રહ ઉત્તમ શુભ ફળ આપે છે. કુંડળીમાં પુષ્કર નવમાંશમાં રહેલ ગ્રહને ઓળખીને આપણે શું કાર્ય કરવા આવ્યા છીએ. એ જાણી શકીએ તથા એ ક્ષેત્રમાં મહેનત કરીએ તો જરૂરથી શુભ ફળ મળે છે.

નવમાંશની અગત્યતા અને મહત્વ

૧. નવમાંશ કુંડળીથી વૈવાહિક જીવનનો અભ્યાસ કરાય છે. લગ્ન, જીવનસાથીનો સ્વભાવ, દાંપત્ય જીવન એટલે કે સાતમા ભાવ વિશે ઉંડાણપૂર્વક અભ્યાસ કરી શકાય છે.
૨. આ કુંડળી ઉપરથી કારકીર્દીનો પણ વિચાર કરાય છે. જન્મ લગ્ન કુંડળીના દસમાં ભાવનો અધિપતિ ગ્રહ નવમાંશમાં જ્યાં હોય ત્યાંથી જાતકના પ્રોફેશનનો ક્યાસ કાઢી શકાય છે. દશમેશ જ્યાં છે તે ભાવ, રાશિ, નક્ષત્ર, ખીજા ગ્રહોની દ્રષ્ટિ, ખીજા ગ્રહ સાથે યુતી-પ્રતિયુતી તમામ બાબતનો વિચાર કરવો જરૂરી હોય છે.
૩. નવમાંશ કુંડળીમાં આત્મકારક ગ્રહ ક્યાં છે, તેના પરથી કારકાંશ કુંડળી બનાવી ઈષ્ટદેવનો વિચાર કરાય છે.
૪. જન્મ લગ્ન કુંડળીમાં નીચત્વ પામેલો ગ્રહ જો નવમાંશ માં ઉચ્ચ રાશિમાં રહેલો હોય તો આ ગ્રહ શુભફળ આપવા યોગ્ય બની જાય છે.
૫. જન્મ કુંડળીનો લગ્નેશ ૬, ૮, ૧૨ ભાવે આવે તો તે શુભ ગણાતું નથી. તે ઉપરાંત ૬, ૮, ૧૨ માં ભાવનો અધિપતિ ગ્રહ નવમાંશમાં લગ્ન કે લગ્નેશ સાથે સંબંધિત થાય તો પણ શુભ ગણાતું નથી.
૬. જન્મ લગ્ન કુંડળીમાં લગ્નેશ ૧૨ સ્થાન પૈકી કોઈપણ સ્થાને હોય પણ નવમાંશ કુંડળીમાં એ લગ્નેશ ૬, ૮, ૧૨ માં ભાવે હોય તો જાતકના મૃત્યુ સમયે તેની પાસે કોઈ કુટુંબીજન ન હોવાની શક્યતા રહે છે.

- અંજના પાલેજા



जो सपने देखते हैं, और उन्हें पूरा करने की कीमत चुकाने को तैयार रहते हैं, वे ही लोग सफल होते हैं।

શનીગ્રહ અને શનિવાર

૧. શનીવારે - શનીની હોરામાં જૈન દિક્ષા અને બેંકમાં FD કરાવવી શ્રેષ્ઠ છે.
૨. તપસાધના, ધ્યાન, વટહુકુમ, સ્થિર કાર્ય, ગૃહપ્રવેશ, નગર પ્રવેશ, શનિવારે શનિની હોરામાં શુભ છે.
૩. શનિ ને બળવાન કરવા માટે કાળા અડદ, છત્રી, કાળા તલ, કાળુ વસ્ત્ર, લોખંડ વગેરે કાળી વસ્તુનું દાન કરવું.
૪. શનીનો કાળો રંગ નકારાત્મક ઉર્જાને દૂર રાખે છે. માટે જ બાળકોને નજરથી બચાવવા ગળામાં કાળો દોરો બાંધવામાં આવે છે અને સ્ત્રીના મંગલસુત્રમાં રહેલા કાળામોતી પતિનું આયુષ્ય વધારે છે.
૫. શનીનો અમલ વૃદ્ધજનો તથા વડિલો પર છે માટે શનિ બળવાન બનાવવા માતા-પિતાની સેવા કરવી તથા વૃદ્ધાશ્રમમાં સેવા આપવી.
૬. શનિ સંયમને વધુ મહત્વ આપે છે માટે મીન, બ્રહ્મચર્ય અને ઉપવાસ કરવાથી શનિદેવ ખુશ રહે છે.
૭. સ્ત્રીની કુંડળીમાં શનિ અને ચંદ્રની યુતી હોય તો તે કાચી-પાકી રસોઈ બનાવે. રસોઈ બનાવવાનું તેને ગમતું નથી.
૮. શનિવારે અડદ ખાવાથી આયુષ્યની વૃદ્ધિ થાય.
૯. શનિ જીવાત્મા અને પરમાત્માની વચ્ચે કડીરૂપ છે. માટે ઉચ્ચના શનિવાળો જાતક જીવદયા પ્રેમી હોય.
૧૦. શનિ વર્ષમાં એક જ વખત વક્રી થાય છે.
શનિ વક્રી ક્યારે થાય ?
શનિ જે રાશિમાં હોય તેના અંકમાંથી ૫ બાદ કરવા (-૫) જે જવાબ આવે તે અંકના મહિનામાં રાશિ વક્રી થતો જોવાય.
૧૧. વર્ષના કુલ ૩૬૫ દિવસમાંથી શનિ ૧૪૦ દિવસ વક્રી રહતો હોય છે. (સવ્યા ચાર મહિના) લગભગ ૪૦ ટકા જેટલો.

ઉ.દા. શનિ ધારોકે મેષ (૧) રાશિમાં હોય તો

$$1 + 12 = 13 - 5 = 8 \text{ એટલે ઓગસ્ટ મહિનામાં વક્રી થાય}$$

શનિ અને કર્મ

૧. શનિ કર્મનો કારક છે. "જેસી કરની વેસી ભરની" ૩-૭-૧૦ શનિની દ્રષ્ટી છે. શનિ ન્યાય પ્રિય દેવ છે. શનીની ૩જી દ્રષ્ટી જે ભાવ પર હોય તે ભાવ સંબંધી ચિંતા જાતકને હંમેશા સતાવતી હોય. ૭મી દ્રષ્ટી જ્યાં હોય તે ભાવના કારકનું કારકત્વ અને તે ભાવથી જોવાતી વસ્તુઓ સંબંધી ઉણપ રહે. શનિની ૧૦મી દ્રષ્ટિ જે સ્થાન પર હોય તે સ્થાન સંબંધી કર્મો કરવા આપણે આ જન્મ લીધો હોય છે.

શનીની પનોતી નો પાયો નક્કી કરવો.

૧. (શનિ બદલાય ત્યારે જન્મકુંડળીના ચંદ્ર થી ગોચરનો ચંદ્ર)

- ૧-૬-૧૧ સોનાનો પાયો અશુભ
- ૨-૫-૯ ચાંદીનો પાયો શુભ
- ૩-૭-૧૦ તાંબાનો પાયો શુભ
- ૪-૮-૧૨ લોખંડનો પાયો કષ્ટપ્રદ

નવ ગ્રહો પરથી શનિના ભ્રમણનું ફળ

૧. સૂર્ય ઉપરથી ભ્રમણ : જન્મના રવિ ઉપરથી શનિનું ભ્રમણ સારૂ મનાતુ નથી. રવિ કારક ચીજોમાં પિતાની સાથે વિરોધ અથવા નાશ. પોતાના વરિષ્ઠો સાથે મતભેદ. માનસિક તાપ તથા આત્મચિન્તા થાય છે.
૨. ચંદ્ર ઉપરથી ભ્રમણ : ગૃહ સુખ, માતૃસુખ તથા પુત્રીસુખ માં હાનિ તથા ચિન્તા થાય તેવા પ્રસંગો બને.
૩. મંગળ ઉપરથી ભ્રમણ : જુદી-જુદી જગ્યાએ કલહ આપઘાત ની શક્યતા. ઉગ્ર ગ્રહની યુતિ થી પરાક્રમની તીવ્ર ઈચ્છા. ૩-૬ સ્થાનમાં હોય તો ઘણા સારા નહીતર સંકટોનો મુકાબલો કરવો પડે છે.
૪. બુધ ઉપરથી ભ્રમણ : લેખન કાર્ય તથા વિદ્યાભ્યાસમાં થોડી તકલીફ ઉભી થાય. પરંતુ શુભયોગ હોય તો થોડો લાભ થાય.
૫. ગુરૂ ઉપરથી ભ્રમણ : ગુરૂનું સ્થાન સારૂ હોય તો વ્યવસાય વગેરેમાં પ્રગતિ. સાંપત્તિક દ્રષ્ટીએ સમય સારો જાય છે. ધાર્મિક કાર્યોમાં મગ્ન રહે છે. ત્રીજા અને છઠ્ઠામાં લાભદાયી હોય છે. અગિયારમાં સ્થાનમાં હોય તો વધારે લાભદાયક હોય છે.
૬. શુક્ર ઉપરથી ભ્રમણ : જો શુક્ર સારી રાશી લાભ સ્થાનમાં હોય તો ઘણું સારૂ સુખ પ્રાપ્ત થાય છે. જો શુક્ર વિકૃત હોય તો સ્ત્રી સુખનો નાશ અથવા તે પ્રત્યે ચિન્તા થાય.
૭. શનિ ઉપરથી ભ્રમણ : શનિ પરથી શનિનું ભ્રમણ યતાં મુળ કુંડળીમાં જો શનિ બળવાન હોય તો ઘણું શ્રેષ્ઠત્વ પ્રાપ્તિ સર્વ કાર્યસિદ્ધિ તથા સત્તા પ્રાપ્તિ થાય છે. આ તબ્બકો જાતક માટે સર્વશ્રેષ્ઠ અને સમૃદ્ધિ લાવનાર હોય છે.
૮. રાહુ ઉપરથી ભ્રમણ : રાહુ ઉપરનું ભ્રમણ મેલી વિદ્યાનું જ્ઞાન તથા ગુટ રહસ્ય માટેનું અધ્યયન આવી વિદ્યાઓમાં સંશોધન કરવું. રહસ્યમય વસ્તુઓમાં શોધ ખોળ કરવી.
૯. કેતુ ઉપરથી ભ્રમણ : આ ભ્રમણ મંત્રતંત્ર તથા ધાર્મિક બાબતોમાં રૂચિ ઉત્પન્ન કરવી, યોગ, ગ્રંથો તથા આધ્યાત્મ વગેરેનો અભ્યાસ કરવો.

ચારિત્ર સારું ના હોય, તો મોટામાં મોટી વિદ્યા પણ બેકાર છે.

રાશિઓમાં રહેલ શનિનું ફળ

૧. મેષ - જેની કુંડળીમાં મેષનો શનિ હોય ત્યા ધન ટકે નહી. શરીર વ્યાધિઓથી પીડિત કાંતી દુર્બળ શરીરવાળો. પિતા તથા સંતાનો માણસો વિરોધ કારણે ચિંતાયુક્ત, એકતા વગરનો.
૨. વૃષભ - જેની જન્મકુંડળીમાં વૃષભનો શનિ હોય તે માણસ નિરંતર સ્ત્રી સુખથી રહિત યુગલખોરોની સંગતીવાળો ઓછી બુધ્ધી વાળો તેમજ જો બુધ્ધિશાળી હોય તો વિવેક થી વાપરી ન શકે. બીજાની બુધ્ધીએ ચાલવા વાળો.
૩. મિથુન - આ રાશીમાં રહેલ શનિ પ્રબળતા અને નિર્બલતારહિત. મધ્યમ બળવાળો ઘર છોડી બહાર વિલાસ કરવાવાળો, મોટા માણસોથી કદી તેને સુખ મળતુ નથી.
૪. કર્ક - કર્ક રાશિમાં શનિ હોય તે મનુષ્ય તથા તેની માતા શરીરે દુર્બળ, લક્ષ્મીવાન ઉત્ત ભોગવિલાસી, શત્રુ વગરનો ચિંતાતુર, સુખ હોવા છતા ભોગવવી ન શકે.
૫. સિંહ - સિંહ રાશિમાં શનિ હોય તો લેખન કલા જાણવાવાળો, કલહ સ્વભાવે ચિડીયો, ઉત્તમ સ્વભાવ રહિત, નીતી માર્ગથી ભ્રષ્ટ, પુત્રવાન અને સ્ત્રી સંબંધી કષ્ટ ભોગવવાવાળો.
૬. કન્યા - આ રાશિમાં શનિ હોય જાતક પોતાના અંગત કાર્યોમાં સફળતા મેળવી શકતો નથી. નમ્રતા વિનાનો ચંચળ, પ્રેમવાળો અને કોઈક વખત દુર્બળ તથા કોઈક વખત બળવાન હોય છે.
૭. તુલા - આ રાશિમાં શનિ હોય તે માણસ પોતાના કુંભમાં રાજાના જેવા બળવાળો. અતિ કામુક અધિક દાન દેવાવાળો, સરકાર તરફથી પદવી પ્રાપ્ત કરવાવાળો હોય છે.
૮. વૃશ્ચિક - જે જાતકને વૃશ્ચિકનો શનિ હોય છે તે વિષ (ઝેર), અગ્નિ, શસ્ત્રના ભયવાળો ધનનો નાશ કરવાવાળો, શત્રુ તથા રોગથી પીડિત, પુત્ર સાથે વિવાદમાં સપડાયેલો અલ્પ સુખવાળો.
૯. ધન - જે જાતકની જન્મકુંડળીમાં ધનનો શનિ હોય તે પુત્રોના મનોરથોથી પરિપૂર્ણ, પ્રખ્યાત કીર્તિવાળો, સારી આજીવીકાવાળો અને ઐશ્વર્ય થી સંસારમાં સંતોષવાળો.
૧૦. મકર - જે જાતકની જન્મકુંડળીમાં મકર નો શનિ હોય તે ઉચ્ચ પદના લોકો સાથે પ્રેમ સારા સંબંધ તથા તેનાથી ગૌરવ મેળવવાવાળો તેમજ સારાગુણોથી યુક્ત અને સુખ ભોગવવાવાળો.
૧૧. કુંભ - જે જાતકની કુંડળીમાં કુંભનો શનિ હોય તે પોતાના કામો ખંતથી કરવાવાળો. કામમાં તત્પરતા ન હોય પણ ચિવટ થી અને ખંતથી કરે. શત્રુઓથી પીછે હટ કરે. વ્યસન લાગે તો છોડવું મુશ્કેલ.
૧૨. મીન - જે જાતકની જન્મકુંડળીમાં મીનનો શનિ હોય તે નમ્ર તથા વ્યવહારમાં સુશીલ, બધા માણસોમાં વિખ્યાત ગુણવાળો, ઉપકાર કરવામાં નિપુણ અને સંપત્તિવાળો હોય છે.

- પ્રીતી ઠાકર

સમાધાન વૃત્તિ રાખો - તડખોડ કરવી તે જીવનનું સૂત્ર છે.

तत्वसिद्धांत

पुराणों के अनुसार ब्रह्माजीने विश्वकर्मा को वास्तुकलाओं के निर्माण का दायित्व सौंपा था। वास्तुविद् विश्वकर्माने वास्तुशास्त्र के सिद्धांतों पर चलकर पंचतत्व पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश के बीच उचित संतुलन कायम करते हुए इस लोक का निर्माण कार्य किया था ताकि मनुष्य का जीवन खुशहाल हो। वस्तुतः वास्तुशास्त्र इन पाँच मूल तत्वों के संतुलन का ही विज्ञान है।

वास्तुशास्त्र पंचतत्वों पर आधारित है। यही पंचतत्व ब्रह्मांड और मनुष्य के शरीर में भी होते हैं। प्रकृति में और हमारे शरीर में यही पंचतत्व सही प्रमाण में पाये जाते हैं। पंचतत्वों के बिना कोई भी सृष्टि का अस्तित्व नहीं होता।

पृथ्वी, जल और अग्नि जिसे हम दृष्टि से अनुभव कर सकते हैं। वायु स्पर्श से शरीर अनुभव कर सकता है। आकाश बुद्धिसे अनुभव होता है।

तत्वोंकी प्रकृति : १) पृथ्वीतत्व - इस तत्व पर स्थिरता प्राप्त होती है। स्वामी-बुध, रंग-पीला, दिशा-पश्चिम, घनस्वरूप

पृथ्वी एक विशालकाय चुंबक है। पृथ्वी के चुंबकीय गुण का उपयोग वास्तुशास्त्र में भी होता है। इस चुंबक का उपयोग वस्तुमें भूमी पर दबाव के लिए किया जाता है। वास्तुशास्त्र में दक्षिण दिशा में भार बढ़ाने का अधिक बल दिया गया है। इस कारण दक्षिण दिशाकी ओर सिर करके सोना स्वास्थ्य के लिए अच्छा माना गया है। दक्षिण तरफ पैर न रखे, यह यमराज की दिशा है। पृथ्वी का पंचगुण शब्द, स्पर्श, रूप, स्वाद और आकार है। पृथ्वी तत्व मानव जीवन को अत्यधिक प्रभावित करता है। यह प्रभाव मानव के कर्म, प्रारब्ध, आचरणसे होता है।

२) अग्नितत्व - सूर्य और मंगल अग्नि प्रधान ग्रह होने से इस तत्व के स्वामी माने गये हैं। इसका अधिकार जीवनशक्ति है। धातु-पित्त, सूर्य को अग्निका कारक भी कहा गया है। सूर्य की अग्नि और तेज (ऊर्जा) तत्व से धरती पर जीवन संभव है। मानव को ऊर्जा और प्रकाश देती है। इस कारण मनुष्य साहसिक और पराक्रमी भी बनता है तो महत्वाकांक्षी बनता है। याने कठिन कार्य करने के लिए यह तत्व उचित है। शब्द, स्पर्श, रूप अग्नि के गुण यह सब ऊर्जा प्रधान है।

३) जलतत्व - जल ही जीवन है। चंद्र और शुक्र दोनों जलतत्व के ग्रह माने गये हैं। कारकत्व-रस, जल-देवता वरुण तथा इन्द्र। अपने शरीरमें रुधिर पर अधिकार माना गया है। इस तत्व की धातु - कफ। जल के चार गुण - शब्द, स्पर्श, रूप, रस (स्वाद) है। जल तरंगों से विद्युत ऊर्जा भी उत्पन्न की जाती है। विश्वकी सभी सभ्यताएँ नदी किनारे विकसित हुई हैं। जलदेवता, वरुण तथा इन्द्र मनुष्यों के मन से जुड़ा है यह तत्व।

४) वायुतत्व - वायुतत्व के स्वामी शनि। कारकत्व-स्पर्श, अधिकार क्षेत्र श्वाभ क्रिया। वात इन तत्व की धातु है। यह धरती चारों ओर वायु से घिरी है। वायु अथवा आवरण ही बाद में वातावरण कहलाया है। जीने और जलने के लिए प्राणवायु बहुत जरूरी है। संसार में जीवन प्रदान करनेवाली वायु में प्राणवायु

મૌજુદ છે જો હર એક જીવકો જીવન પ્રદાન કરતા છે । શરીર કે મસ્તિષ્ક મેં યદિ પ્રાણવાયુ પૂરી તરહ સે ન પહુંચ પાયે તો અપંગત્વ ઓર બુદ્ધી સે જડ હો સકતા છે ।

૫) આકાશતત્વ - આકાશ-અસીમ અનંત છે । સ્વામી ગુરૂ પૃથ્વી કે સાથ સાથ સારા બ્રહ્માંડ ઇસ તત્વકા કારકત્વ છે । અધિકાર ક્ષેત્ર - આશા તથા ઉત્સાહ આદિ । ધાતુ-વાત, કફ વાસ્તુશાસ્ત્રમેં આકાશતત્વ કા અર્થ છે રિક્તસ્થાન, વિશેષ ગુણ શબ્દ । શબ્દ કા સંબંધ કાનોં સે જ્યોતિષ શાસ્ત્ર મેં ભી શ્રવણશક્તિ કા કારકત્વ ગુરૂ કો માના ગયા છે । આકાશમેં હોનેવાલો ગતિવિધિયોં સે ગુરુત્વાકર્ષણ, પ્રકાશ, ઉષ્મા, ચુંબકીય ક્ષેત્ર ઓર પ્રભાપ તરંગો મેં પરિવર્તન આતા છે । ઇસકા પ્રભાવ માનવજીવન પર પડતા છે । ઇસલિએ આકાશ કહે યા અવકાશ કહેં યા રિક્તસ્થાન, ઇમેં ઇસકા મહત્વ ભૂલના નહીં ઓહિએ ।

પૃથ્વી સ્થિરતા પ્રદાન કરતી છે તો જલ સુખ પ્રદાન કરતા છે, સંબંધો મેં ઉષ્મા, સુખ કો બઢાને કા કામ કરતી છે ઓર વાયુ શરીરમેં પ્રાણવાયુ બનકર ઘુનતો છે । આકાશ નહત્વકાંક્ષા, ઉત્સાહ જગાતા છે । પૃથ્વી સહનશીલતા વ સચ્ચાઈ કા પાઠ સિખાતી છે । યદિ દેહ મેં અગ્નિ તત્વ બઢતા છે તો જલ કી માત્રા બઢાને સે ઉસે સંતુલિત કિયા જા સકતા છે ઓર યદિ વાયુ ડોષ હો તો આકાશતત્વ કો બઢાને સે સંતુલિત હોગા ।

અસ્તુ ।

- પ્રમિલા પંચાલ



शुक्र मेखला / शुक्र कंकण

शुक्रबलय - शुक्र कंकण या शुक्र मेखला एकही रेखा के नाम है । यह रेखा हाथमें गुरु और शनी उंगलीके बीच से निकलकर बुध और चर्य उंगली के बीच पूर्ण होती है । उसका आकार अर्ध वर्तुल जैसा होता है । कई हाथों में यह कंकण आगे बढ़कर बुध पर्वत तक पहुँचता है तो कही यह हाथ के अंत में पूर्ण होता है । हर एक हाथमे यह कंकण देखा नही जाता, यह गौण रेखा की लीस्टमें सबसे पहला है । हृदय रेखा के उपर होने से यह कंकण हृदय रेखा के सहायक रेखा के रूपमें कार्य करती है और हृदय रेखा की गैरहाजरीमें हृदय रेखा का भी काम करती है । हृदय रेखा की सहायक के रूपमें यह कंकण अनुराग, प्रेम, सहृदयता जैसे गुणोंको प्रबल बनाता है । इसी वजह से इसको प्रणयमेखला भी कहते हैं ।

पुराने जमानेमें यह शुक्र कंकण को अशुभ माना जाता था और इन्ने व्यभिचार और शठता (लंपटता) का संकेत मानते थे । परंतु यह जातकमें प्रचंड उत्तेजना का प्रतिक है । जीस हाथमें शुक्र कंकण के अलावा शुक्र पर्वत बैठा हुआ हो, उंगलीयों के तीसरे पर्व कमर आकार के पत्ते हो, जीवन रेखा शुक्र पर्वतको दबाती हुई अंगुठे के नजदीकसे जा रही हो । उसका रंग सफेद हो, हृदय रेखा पतली हो, ऐसे हाथोंमें शुक्र कंकण कामुकता का प्रतिक नही परंतु ऐसे जातक ज्यादा विचलित रहते हैं । यही अवस्था लंबे समय के साथ हिस्टीरिया में बदल जाती है । इसके विपरीत जीस जातकका शुक्र पर्वत पुष्ट हो, जालीदार हो । उंगलीयों के तीसरे पर्व मोटे और बडे होते हैं जीवन रेखा शुक्र पर्वत का बडासा घेरा बनाकर समाप्त होती हो, गहराई भरी हृदय रेखा हो उसका रंग लाल हो, पुष्ट मंगलपर्वत हो, हाथका रंग लाल हो और हाथके पृष्ठ भाग में खुबसारे बाल हो, तो यह प्रचंड कामुकता का प्रतिक है । साथ ही मद्यपान और व्यभिचार का संकेत देता है ।

शुक्र मेखलावाले जातकों को समय-समय पर अंकुश लगाना जरूरी होता है । उनकी छोटी-छोटी खराब आदते आगे चलकर बडा विकटरूप ले लेती है । जो छोटे बच्चों के हाथमें शुक्र कंकण दिखाई देता हो, उम्र बढ़ने के साथ वह क्वचित हस्तमैथुन के शिकार हो जाते हैं ।

कई जातकोंके हाथमें यह मेखला टुकडोंमें देखी जाती है । वह जल्दसे व्यसन के शिकार हो सकते हैं । उस व्यसन को छोडना मुश्किल सा हो जाता है । शुक्र कंकण पतला हो, मशक्त भाग्य रेखा और सुयं रेखा कंकण को बाँटती हो तो जातकमें साहित्य और कला संबंधित ज्ञान और रुची ज्यादा देखने मिलती है और जातक ज्यादा प्रतिभाशाली होता है । साथमें दुसरे चिन्ह भी देखने चाहिये । यदि हाथमें दो शुक्र कंकण हो तो जातक एकांतप्रिय होता है । उसकी बौद्धिक क्षमता कम हो जाती है । ऐसे जातको की कोशीश करके अपनी खराब आदते छोडनी चाहिए ।

यदि शुक्र मेखला विवाहरेखा को काटता हो तो जातक अपने जीवनसाथी से स्वार्थभाव रखता है साथ ही उसके साथ हृदयहिन वर्तन करता है । दो शुक्र कंकणवाले हाथमें उंचा गुरुपर्वत हो, शनी पर्वत पर आडी खडी रेखा हो, श्रृंखलाकार हृदय रेखा हो, चमचाकार उंगलीया हो, शुक्रपर्वत पर नक्षत्रमें से निकली हुई रेखा मस्तकरेखा को काटकर बुध रेखा के नीचे समाप्त होना जातकको धार्मिक विचारवाले, संसारसे विरक्त बनाता है । संसार छोडने की भावना उनमें बलवत्तर होती है ।

शुक्रकंकण को सूर्यपर्वत से आती कोई रेखा काटती हो तो जातक के जीवनमें महिलाओं के द्वारा प्रतिकूल परिस्थिति निर्माण होती है । बुरे हाथमें यह परिस्थिति खर्चीली प्रवृत्ति दर्शाते है । दो कंकण पर नक्षत्र चिन्ह कोई गुप्तरोग या ऐसी कोई जटिल बिमारी के संकेत है, जिससे मुश्कील से छुटकारा मिलता है । टूटी हुई शुक्र मेखला विवाह रेखा को काटती हो हृदय रेखा पर से छोटी-छोटी रेखाए नीचे की तरफ जा रही हो अशुभ मस्तक रेखा नक्षत्रमें समाप्त हो रही हो शनी रेखा को एक आडी रेखा काटती हो तो यह लक्षण जातककी व्यभीचारी प्रवृत्ति के कारण व्यवहारीक जीवन छिन्न-भिन्न कर देता है, जिसके परिणाम से जातकको मन प्रवृत्ति प्रभावीत होती है ।

शुक्र कंकण का सही अर्थ जानने के लिये हाथका प्रकार, शुक्रपर्वत की स्थिति और अन्य संजोगो का विचार किया जाना चाहिये, सिर्फ शुक्र कंकण दिखाई देने से जातक पर कामुकता का आरोप लगाना सही नहीं है । हाथ के प्रकार के हिसाबसे दयनीय और ठंडे हाथमें यह कहना उचित नहीं की जातक अव्यवहारी खर्च करता है क्योंकि ऐसे जातको के लिये अच्छा खाना या चाय-कोफी का भी व्यसन हो सकता है । शुक्र कंकण का विचार करने के लिये विवेक और निष्पक्ष द्रष्टि का उपयोग किया जाना चाहिये क्योंकि दुसरो के दोष देखने की आदतवालों के लिये शुक्र कंकण कामुकता और व्यभीचार का लक्षण है, जबकी दुसरी तरफ यह करुणा और सहृदयता का लक्षण भी हो सकता है ।

अस्तु ।

- जयेश एच. वाघेला



વાસ્તુશાસ્ત્રમાં મુખ્ય પ્રવેશદ્વાર

વાસ્તુશાસ્ત્રની જાણકારી ભારતમાં વર્ષોથી છે. પ્રાચીન સ્થાપત્યમાં લોથલ - હડપ્પાના સદીઓ જૂના અવશેષો પરથી નગરનું આયોજન, મકાનોનું બાંધકામ, ખાળ, ફૂવા, સંડાસ, બાથરૂમ તથા બજારની વ્યવસ્થા વગેરે જોવા મળે છે. વાસ્તુશાસ્ત્રની જાણકારી ત્યારે પણ હતી.

ભૃગુ, અત્રિ, વશિષ્ઠ, વિશ્વકર્મા, મય, નારદ, અગ્નિજિત, વિશાલાક્ષા, બ્રહ્મા, અનિરુદ્ધ, કુમાર, નન્દીશ, શૌનક, ગર્ગ, વાસુદેવ, શુદ્ધ, બૃહસ્પતિ, પુરંદર ઇત્યાદિ શિલ્પશાસ્ત્રના અઠાર પ્રણેતા, આર્ષદ્રષ્ટા અને પ્રસારકર્તાના ભારતવાસીઓ વાસ્તુશાસ્ત્ર માટે ઋણી રહેશે.

જગ્યાની પસંદગી, વિવિધ આકારો, રચના-આકાર-કદ જગ્યાની અંદરની ગોઠવણી, દેવમંદિર, બ્રહ્મસ્થાન, શયનખંડ, દૈનિક કાર્ય માટેના સ્થાનો માટે અનેક પ્રાપ્ય-અપ્રાપ્ય ગ્રંથોમાં સંસ્કૃતના શ્લોકોમાં માહિતી ઉપલબ્ધ છે.

મોટા શહેરોમાં રહેણાકના પ્રશ્નો, બાંધકામ થયું હોય છે માટે ૧૦૦% વાસ્તુ મુજબ જગ્યા. કે બ્લોક, ફ્લેટ મેળવવો કઠિન છે પરંતુ ૫૦ થી ૭૫% સુધી પ્રયત્ન કરવો.

પ્રવેશદ્વાર પૂર્વ, ઉત્તર અને ઇશાન દિશામાં રાખવાનું સૂચન છે. બહુમાળી મકાનમાં ફ્લેટના દરવાજા બિલ્ડરો વાસ્તુશાસ્ત્ર અનુસાર બનાવ્યા હોતા નથી. પૂર્વ દિશાના દરવાજાને વિજયદ્વાર, દક્ષિણ દિશાના દરવાજાનો યમદ્વાર, પશ્ચિમ દિશાના દરવાજાને મગરદ્વાર તથા ઉત્તરદિશાના દરવાજાને કુબેરદ્વાર કહેવાય. શક્ય હોય ત્યાં સુધી પ્લોટ, ઇમારત, મકાન કે ફ્લેટમાં દક્ષિણ ભાગમાં દરવાજો રાખવો નહીં. નવા મકાન માટે નવા લાકડાનો દરવાજો કરવો. જુનું વપરાયેલ લાકડું ફરી વાપરવું નહીં.

દરવાજાનો આકાર ચોરસ, ત્રિકોણ કે ગોળાકાર ન હોવો જોઈએ. જે ત્રિકોણ દરવાજાથી ગૃહલક્ષ્મી, સ્ત્રીવર્ગનો ત્રાસ થાય છે. ગોળાકાર દરવાજાથી તેમા રહેનારનો પુત્રીઓ વધુ થાય છે. ધનુષ્યાકારના દરવાજાથી ઘરમાં લડાઈ-ઝઘડાને ટંટા થાય છે.

મુખ્ય દરવાજો બીજા બધા દરવાજાને બારણાથી મોટો અને સુશોભિત હોવો જોઈએ. ઘરની અંદર દરવાજાની સંખ્યા બેકી રકમ-સમ રાખવી જોઈએ બારીઓ, વેન્ટીલેશનો પણ આંક બેકી રાખવો અને દરવાજાનું લાકડું સાગનું લેશો જેથી વાંકો-ચૂંકો દરવાજો ન બને. પ્રવેશદ્વારના સામે મંદિરનું દ્વાર હોય તો વિનાશ-ઝાડ-વૃક્ષ હોય તો વિવિધ બિમારી, દર્દ થાય. મંદિર-દેવાલય-દેરાસર-મસ્જિદ હોય તો નાના ખાળકો દુઃખી થાય છે. ચાંભલો હોય તો ઘરની સ્ત્રીઓમાં દોષ થાય. ચારિત્ર્ય શંકાસ્પદ બને અને જો પ્રવેશદ્વારની સામે સીધો રસ્તો જતો હોય તો ખૂબજ અનિષ્ટ ફળ મળે છે.

ઘરના બીજા દરવાજાથી ઊંચા વેન્ટીલેશન ચાલે પણ મુખ્ય પ્રવેશદ્વારથી ઊંચા ન જોઈએ. મુખ્ય દરવાજા સામે અડચણ ન હોવી જોઈએ. ઝાડ, લિક્કટનો ખાડો દાદર, રેલીંગ, પીલ્લર, કોલમ કે પછી બાજુવાળાનો દરવાજો ઓવરલેપ ન થવો જોઈએ. ઘરના દરવાજા અન્ય દરવાજાની એકજ લાઈનમાં હોય તો શુભ દરવાજો વાયવ્ય ખુણામાં કે અગ્નિખૂણામાં રાખવો નહિ. ઘરના મુખ્ય દરવાજાનો ઊંબરો હોય તો સારૂ ફળ આપે છે. ઘરનો ઊંબરો લાકડાનો હોવો જરૂરી છે.

બહારના દરવાજાની અંદર પ્રવેશ કર્યા બાદ ડાબો હાથે બીજા દરવાજામાં જવાનું બનતું હોય તો તે અશુભ ગણાય છે. કામમાં યશ સાંપડતો નથી. આર્થિક હાનિ કે પ્રતિષ્ઠા ભંગ થાય છે.

- ચૈતાલી પરમાર

કલશ ચક્ર

વાસ્તુમાં ગૃહ પ્રવેશ કરવા માટે કલશ ચક્રનો ઉપયોગ કરાય છે. કળશ ચક્રમાં સૂર્યના ને ચંદ્રના નક્ષત્રની ગણતરી કરી, ૨૭ નક્ષત્રોને કળશના અલગ-અલગ ભાગમાં મુકીને ગૃહપ્રવેશનુ શુભ-અશુભ ફળ જોઈ શકાય છે.

- સૂર્યના મહાનક્ષત્ર થી ચંદ્રના નક્ષત્ર સુધી ગણતા જે પહેલું નક્ષત્ર આવે એને કળશના મુખમાં મુકવું. આ નક્ષત્રમાં ગૃહપ્રવેશ કરવાથી અગ્નિદાહનું ફળ મળે છે.
- સૂર્યના મહાનક્ષત્ર થી ચંદ્રના નક્ષત્ર સુધી ગણતા જે ૨, ૩, ૪, ૫ નક્ષત્રો આવે એને કળશની પૂર્વ દિશામાં મુકવા. આ નક્ષત્રોમાં પ્રવેશ કરવાથી શૂન્ય ફળ મળે છે.
- સૂર્યના મહાનક્ષત્ર થી ચંદ્રના નક્ષત્ર સુધી ગણાય જે ૬, ૭, ૮, ૯ મું નક્ષત્ર આવે તેને કળશની દક્ષિણ દિશામાં મુકવું. આ દિવસે ગૃહપ્રવેશ કરવાથી લાભ થાય છે.
- સૂર્યના મહાનક્ષત્ર થી ચંદ્રના નક્ષત્ર સુધી ગણતા જે ૧૦, ૧૧, ૧૨, ૧૩ મું નક્ષત્ર આવે તેને કળશની પશ્ચિમ દિશામાં મુકવા. આ નક્ષત્રોમાં ગૃહપ્રવેશ કરવાથી લક્ષ્મી પ્રાપ્તિ થાય છે.
- સૂર્યના મહાનક્ષત્રથી ચંદ્રના નક્ષત્ર સુધી ગણતા જે ૧૪, ૧૫, ૧૬, ૧૭ મું નક્ષત્ર આવે તે કળશની ઉત્તર દિશામાં મુકવા. આ દિવસે ગૃહપ્રવેશ કરવાથી કલહ થાય છે.
- સૂર્યના મહાનક્ષત્ર થી ચંદ્રના નક્ષત્ર સુધી ગણતા જે ૧૮, ૧૯, ૨૦, ૨૧ મું નક્ષત્ર આવે તેને કળશના મધ્યમાં મુકવા. આ નક્ષત્રોમાં પ્રવેશ કરવાથી વિનાશ થાય છે.
- સૂર્યના મહાનક્ષત્રથી ચંદ્રના નક્ષત્ર સુધી ગણતા જે ૨૨, ૨૩, ૨૪ મું નક્ષત્ર આવે તેને કળશના તળીયામાં મુકવા. આ નક્ષત્રોમાં ગૃહપ્રવેશ કરવાથી તે ઘરમાં સ્થિરતા અને નિયમીત આવક જેવું શુભ ફળ મળે છે.
- સૂર્યના નક્ષત્રથી ચંદ્રના નક્ષત્ર સુધી ગણતા જે ૨૫, ૨૬, ૨૭ મું નક્ષત્ર આવે તેને કળશના કંઠમાં મુકવું. આ નક્ષત્રમાં ગૃહપ્રવેશ કરવાથી ગૃહ સ્વામીની ચીર સ્થિતિ થાય છે. એટલે કે દરેક વસ્તુમાં સારૂ ફળ સ્થિરતા સાથે મળે છે.

ઉ.દા.- જો સૂર્યનું નક્ષત્ર પુનર્વસુ હોય અને ચંદ્રનું નક્ષત્ર હસ્ત હોય તો પહેલું નક્ષત્ર પુર્નવસુ (૧) આવ્યું જે કળશના મુખમાં આવશે. જેનું ફળ અગ્નિદાહ છે. માટે અશુભ છે.

પછીના ૪ નક્ષત્ર એટલે પુષ્ય, આશ્લેષા, મઘા, પુર્વા ફાલ્ગુન (૨, ૩, ૪, ૫) સે કળશના પૂર્વ ભાગમાં આવશે. જેનું ફળ શૂન્ય છે.

પછીના ૪ નક્ષત્ર એટલે ઉત્તરા ફાલ્ગુન, હસ્ત, ચિત્રા, સ્વાતિ (૬, ૭, ૮, ૯) એ કળશના દક્ષિણ ભાગમાં આવશે. જેનું ફળ લાભ છે.

પછીના ૪ નક્ષત્ર એટલે વિશાખા, અનુરાધા, જ્યેષ્ઠા, મૂળ (૧૦, ૧૧, ૧૨, ૧૩) જે કળશના પશ્ચિમ ભાગમાં આવશે. જેનું ફળ લક્ષ્મી પ્રાપ્તિ છે.

સહુથી ઓછા ખરયાવાળું મનોરંજન શ્રેષ્ઠ પુસ્તકોનાં અભ્યાસથી મેળવાય છે અને એ કાયમી હોય છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

પછીના ૪ નક્ષત્ર એટલે પૂર્વાષાઢા, ઉત્તરાષાઢા, શ્રવણ, ધનિષ્ઠા (૧૪, ૧૫, ૧૬, ૧૭) જે કળશના ઉત્તર ભાગમાં આવશે. જેનું ફળ કલેશ છે.

પછીના ૪ નક્ષત્ર શતતારકા, પૂર્વાભાદ્રપદ, ઉત્તરાભાદ્રપદ, રેવતી (૧૮, ૧૯, ૨૦, ૨૧) જે કળશના મધ્યભાગમાં આવે જેનું ફળ વિનાશ છે.

પછીના ૩ નક્ષત્ર અશ્વીની, ભરણી, કૃતિકા (૨૨, ૨૩, ૨૪) જે કળશના તળીયામાં આવે છે. જેનું ફળ સ્થીરતા અને નિયમિત આવક છે.

પછીના ૩ નક્ષત્ર કંઠમાં આવે છે. રોહિણી, મૃગશીર્ષ, આઢ્રા (૨૫, ૨૬, ૨૭) જેમાં ગૃહપ્રવેશ કરવાથી દરેક ભાગતમાં શુભ ફળની પ્રાપ્તિ છે અને પરિસ્થિતી હંમેશા સારી રહે છે.

- રૂપલ જે. દમણીયા



જીવનમાં દરેક કાર્યને નીતિ સાથે જોડી દેવામાં આવે તો અનીતિને રહેવાની જગ્યા જ ન મળે.

જોડીયા બાળકોનું કે.પી. પદ્ધતિદ્વારા ફળાદેશ

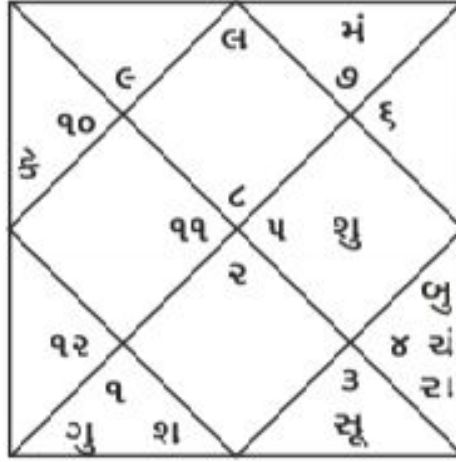
જ્યોતિષમાં ફળાદેશ કરવા માટે મુખ્યત્વે સાયન, નિરયન અને કૃષ્ણમૂર્તિ (કે. પી. અથવા તો નક્ષત્ર પદ્ધતિ) પદ્ધતિઓનો ઉપયોગ કરવામાં આવે છે. જેનો આધાર સ્થંભ જાતકના જન્મ સમયે ગ્રહોની અવકાશીય સ્થિતિ છે. જેનો માનવીના આચાર, વિચાર, વ્યવહાર, જ્ઞાન, શુભાશુભ પ્રસંગો, આર્થિક પરથી શારિરીક, માનસિક, સામાજિક પરિસ્થિતિઓનું ફળ કથન સચોટ રીતે કરી શકાય છે. જોડીયા બાળકોના જન્મ સમયમાં બગભગ ૫-૧૦ મિનિટનો તફાવત જોવા મળે છે. આ સમય મુજબ બન્ને બાળકોની સાયન, નિરયન લગ્ન કુંડળીઓ તેમજ પડવર્ગીય કુંડળીઓ સરખી જોવા મળે છે. આ ઉપરાંત તેમની દશા-અંતરદશા પણ એક સરખી હોય છે. આથી સાયન અને નિરયન દ્વારા જો ફળાદેશ કરવામાં આવે તો મુંઝપણ ઉભી થાય કારકણકે વાસ્તવમાં બંને બાળકોના જીવન પ્રસંગોમાં ઘણી વિવિધતા જોવા મળે છે. જેમકે એક શાંત તો બીજો તોફાની, એક સશક્ત તો બીજો નિર્બળ, એક સંતોષી તો બીજો અસંતોષી, એક ધાર્મિક તો બીજો નાસ્તિક, એક હોશીયાર તો બીજો ઠોઠ, એક ના વિવાહ ઉચ્ચકોટીમાં જલ્દી થાય તો બીજો અવિવાહિત અથવા વિવાહ સુખ ઓછુ, (ગરીબ મધ્યમ વર્ગમાં), એકનું આયુષ્ય લાંબુ તો બીજાનું ટુંકુ કે મધ્યમ અથવા એકનું મૃત્યુ જન્મ સમયે. જે લગ્ન કુંડળીઓ સરખી હોય તો શા માટે આ તફાવત જોવા મળે છે ?

અહીં કે. પી. પદ્ધતિ દ્વારા જોડીયા બાળકોનું ફળકથન કરવામાં આવે તો આ વિવિધતાઓનો સાર જાણી શકાય છે. પૃથ્વીના ભ્રમણને ૧° પુર કરતા લગભગ ૩ મિનિટ ૫૬ સેકન્ડ લાગે છે. આ સમય દરમિયાન ઉપપતિ બદલાઈ જતા હોય છે જેનો ઉપયોગ મુખ્યત્વે કે.પી. પદ્ધતિમાં કરવામાં આવે છે. કે. પી. પદ્ધતિનો મુખ્ય આધાર ભાવકસ્પ અને ભાવ નિર્દેશકો પર હોય છે. ભાવકસ્થના આધારે ભાવના રાશિપતિ, નક્ષત્રપતિ અને ઉપપતિ નક્કી કરાય છે. દરેક ભાવનું ફળ તેના ઉપપતિ નક્કી કરે છે અને નક્ષત્રપતિ તેમજ નિર્દેશક સૂચિત ફળ મળે છે. જોડીયા બાળકોના જન્મ સમયમાં જો થોડી મિનિટનો તફાવત હોય તો કે.પી. કસ્પ કુંડળીમાં ભાવોના ઉપપતિ બદલાઈ જતા હોય છે અને એ મુજબ બાળકોના ભવિષ્યકથન પણ બદલાઈ જાય છે.

આજ કે.પી. પદ્ધતિમાં સૂક્ષ્મતા જોવા મળે છે જે સચોટ ફળકથન કરવામાં મુખ્ય ભાગ ભજવે છે.

અહીં જોડીયા બાળકોની કુંડળી ચર્ચાદ્વારા કે.પી. ફળાદેશની મહત્તાને સમજાવે. એક બાળકનું નામ હિરલ જન્મ તારીખ ૧૩-૦૭-૧૯૯૯ જન્મસ્થળ વડોદરા જન્મસમય બપોરે ૦૩.૩૧ સ્ત્રી જાતક બીજાનું નામ હેમલ જન્મ સમય બપોરે ૦૩.૩૬ સ્ત્રી જાતક બંનેના જન્મ સમયમાં ૫ મિનિટનો તફાવત છે.

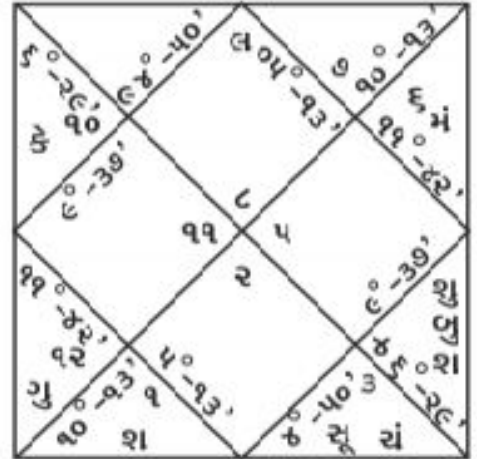
નિરચન લગ્ન કુંડળી
હિરલ અને હેમલ



હિરલ ની કે. પી. કર્મ કુંડળી
જન્મ સમય : ૧૫.૩૧



હેમલ ની કે. પી. કર્મ કુંડળી
જન્મ સમય : ૧૫.૩૬



ગ્રહ	હિરલ કું. રાશ્યાદિ	હેમલ કું. રાશ્યાદિ	રાશિપતિ	નક્ષત્રપતિ	ઉપપતિ
સૂર્ય	૦૨-૨૬°-૪૯'	૦૨-૨૬°-૫૦'	બુધ	ગુરૂ	શુક્ર
ચંદ્ર	૦૩-૦૧°-૦૯'	૦૩-૦૧°-૧૩'	ચંદ્ર	ગુરૂ	મંગળ
બુધ	૦૩-૧૫°-૪૩'	૦૩-૧૫°-૪૩'	ચંદ્ર	શનિ	ગુરૂ
શુક્ર	૦૪-૦૬°-૩૯'	૦૪-૦૬°-૩૯'	સૂર્ય	કેતુ	રાહુ
મંગળ	૦૬-૦૯°-૧૪'	૦૬-૦૯°-૧૪'	શુક્ર	રાહુ	ગુરૂ
ગુરૂ	૦૦-૦૮°-૨૩'	૦૦-૦૮°-૨૩'	મંગળ	કેતુ	ગુરૂ
શનિ	૦૦-૨૧°-૩૦'	૦૦-૨૧°-૩૦'	મંગળ	શુક્ર	ગુરૂ
રાહુ	૦૩-૧૯°-૧૫'	૦૩-૧૯°-૧૫'	ચંદ્ર	બુધ	કેતુ
કેતુ	૦૯-૧૯°-૧૫'	૦૯-૧૯°-૧૫'	શનિ	ચંદ્ર	બુધ

આત્મવિશ્વાસ, આત્મસન્માન અને આત્મસંયમ આ ત્રણ વસ્તુઓ જ જીવનને પરમ શક્તિ બનાવે છે.

ક.ક્ર.	હિરલની ક. કુંડળી મુજબ				હેમલની ક. કુંડળી મુજબ				
	ભાવ	રા.પ.	ન.પ.	ઉ.પ.	ઉપ ના નિર્દિષ્ટ સ્થાનો	રા.પ.	ન.પ.	ઉ.પ.	ઉપ ના નિર્દિષ્ટ સ્થાનો
૧	મં	શ	શ		૩-૪-૬-૭-૯-૧૨	મં	શ	શ	૩-૪-૬-૭-૯-૧૨
૨	ગુ	કે	ચંદ્ર		૫-૮-૯-૨	ગુ	કે	મં	૧-૬-૧૧
૩	શ	સૂ	બુ		૮-૯-૧૧-૩-૪-૬	શ	સૂ	બુ	૮-૯-૧૧-૩-૪-૬
૪	શ	રા	રા		૯-૮-૧૧	શ	રા	ગુ	૫-૨
૫	ગુ	શ	સૂ		૫-૮-૧૦-૨	ગુ	શ	ચં	૫-૮-૯-૨
૬	મં	કે	ગુ		૫-૨	મં	કે	શ	૩-૪-૬-૭-૯-૧૨
૭	શુ	સૂ	શ		૩-૪-૬-૭-૯-૧૨	શુ	સૂ	બુ	૮-૯-૧૧-૩-૪-૬
૮	બુ	મં	શુ		૭-૯-૧૨	બુ	મં	શુ	૭-૯-૧૨
૯	ચં	શ	શ		૩-૪-૬-૭-૯-૧૨	ચં	શ	બુ	૮-૯-૧૧-૩-૪-૬
૧૦	સૂ	કે	ગુ		૫-૨	સૂ	કે	શ	૩-૪-૬-૭-૯-૧૨
૧૧	બુ	ચં	ચં		૫-૮-૯-૨	બુ	ચં	મં	૧-૬-૧૧
૧૨	શુ	રા	ગુ		૫-૨	શુ	રા	ગુ	૫-૨

ઉપર દર્શાવેલ જોડીયા બાળકોની કે.પી. કર્મ કુંડળીદ્વારા ફળાદેશ નીચે મુજબ વર્ણન થાય.

લગ્નભાવ : હિરલની કર્મ કુંડળીનો લગ્નેશ મંગળ પોતાના ભાવથી ૧૨મે સ્થિત થઈ નિર્ભળ બને છે. તેમજ લગ્નનો ઉપપતિ શનિ જે ૩-૪-૭-૯-૬-૧૨ ભાવો નું નિદેશન કરે છે. તેમજ આ શનિ ૧-૭-૯ નો ભાવ ઉપપતિ બને છે. આ સૂચન છે કે જાતક શારીરિક દ્રષ્ટિએ નિર્ભળ અવારનવાર માંદગીનો ભોગ બને, શરદી, કફની કાયમ ફરીયાદ રહ્યા કરે. જાતકનું ચલણ પોતાને જાહેરજીવન અને ભાગ્ય બનાવવા પાછળ વ્યતિત કરે. જાતક બુદ્ધિશાળી, દીબળ, આળસુ, ઉડાઉ, સોખીન, ખોટી આદતોનો શિકાર, વિદેશ યાત્રાના યોગ બને. આત્મવિકાસની કમી, જલ્દીથી નિરાશામાં ઘડેલાઈ જાય. આયુષ્ય મધ્યમ.

હેમલની કુ.કુંડળીનો લગ્નેશ મંગળ ૧૧મે સ્થિત થઈ પ્રબળ સફળતાના યોગ બનાવે છે. જાતક પોતાની સફળતા માટે પ્રયત્નશીલ રહે. લગ્નનો ઉપપતિ શનિ બને એ જે ૩-૪-૭-૯-૧૨ નું નિર્દેશન કરે છે અને તે ૧-૬-૧૧ ભાવોનો ઉપપતિ બને છે તે સૂચિત કરે છે કે જાતક આત્મવિશ્વાસી, હરિફાઈમાં બીજાને માત દેવાની ક્ષમતા વાળો તેમજ બુદ્ધિશાળી, સ્વમાની, નૃત્ય કલાનો શોખીન, લીડર બીજાને જલ્દી તાબે ન થાય, પોતાની આદત કુટેવને કારણે માંદગી નોતરે. હંમેશા કાર્યરત રહેવા પ્રયત્નશીલ, જીદી ગુસ્સાવાળો, શારીરિક સ્થિતિ સારી આયુષ્ય લાંબુ.

હિરલની ક. કુંડળીના રજા ભાવનો ઉપપતિ ચંદ્ર જે ૫-૮-૯-૨ ભાવનું નિર્દેશન કરે છે જે સૂચવે છે કે કુટુંબ સાથે લાગણી ભર્યા સંબંધો, ઘનસુખ સારુ વાણીમાં મીઠાશ, બીજાને ગમી જાય તેવી. તેમજ સંગીતમાં રૂચિ. અહીં રજા ભાવનો ત. પતિ કેતુ છે જેનો ન.પતિ ચંદ્ર બને છે જે ભાવસુખમાં વધારો કરે છે.

હેમલની ક. કુંડળીમાં રજાનો ઉપપતિ મંગળ જે ૧-૬-૧૧ ભાવનો નિર્દેશક બને છે જે

ધ્વાસ અને વિશ્વાસ એકજ વાર તુટે છે, ધ્વાસ તૂટવાથી જીવનું મૃત્યુ થાય છે અને વિશ્વાસ તુટવાથી જીવનનું.

સૂચવે છે કે જાતકના કુટુંબ સાથે સંબંધ ખટમીઠા, ધનસુખ ઓછું, ટુકડે ટુકડે ધનયોગ, કુટુંબના સભ્યો જાતક પર હાવી થવાના પ્રયત્નો કરે, જાતકમાં ધનલાલસા વધુ જેના માટે સતત પ્રયત્નશીલ રહે. જાતક ધનનો ઉપયોગ પોતાના અને મિત્રવર્ગ માટે કરે.

બન્ને જાતકના ૩જા ભાવનો ઉપપતિ બુધ જે ૮-૯-૧૧-૩-૪-૬ ભાવનો નિર્દેશક બને છે. જે સૂચવે છે કે જાતક પરાક્રમી, દલીલબાજ, પોતાના સુખ અને ભાગ્યફળ તરફ વલણ. વાતો દ્વારા બીજાને સારી રીતે પોતાની તરફ આકર્ષી શકે. હિરલની કુંડળીમાં ૯નો ઉપપતિ શનિ બને છે જે સૂચવે છે કે જાતકમાં સામાન્ય જ્ઞાન તેમજ વ્યવહારમાં જાગરૂકતા સભાનતા ઓછી જ્યારે હેમલની કુંડળીમાં ૯ના ઉપપતિ બુધ જે સૂચવે છે કે જાતકમાં જ્ઞાનની ઉપયોગિતા વધુ વ્યવહારમાં ખૂબજ જાગરૂક અને સકાન બળને મુસાફરી યોગ સારા પરંતુ બુધ-શુક-રાહુ ૯મે સ્થિત હોવાથી મુસાફરી દરમ્યાન અચડણ તકલીફોનો સામના કરવો પડે. યાત્રા અધૂરી થોડવી પડે.

હિરલની કુંડળીના ૪થા ભાવનો ઉપપતિ રાહુ જે ૯-૮-૧૧ ભાવ સાથે સંબંધિત થાય છે અહીં મંગળનો ન.પતિ રાહુ છે જે સૂચવે છે કે જાતકના માતા સાથે લાગણીશીલ સંબંધો રહે. તેમજ જાતક સાયન્સ લાઈન લઈ રિસર્ચ અને પ્રયોગોદ્વારા ડીગ્રી સફળતાપૂર્વક મેળવે. આ જાતક પોસ્ટ ગ્રેજ્યુએશન બાયો-સાયન્સમાં ડીગ્રી કરી રહી છે.

હેમલની કુંડળીમાં ૪થા ભાવનો ઉપપતિ ગુરૂ છે જે ૫-૨ ભાવોનો નિર્દેશક બને છે આ ગુરૂ વકી છે. ૯માનો ઉપપતિ બુધ છે જે સૂચવે છે કે જાતક કોમર્સ લાઈનમાં અભ્યાસ કરે. આ જાતક બી.કોમની ડીગ્રી કરી રહી છે. માતા સાથે સંબંધ સારા, કુટુંબ તરફથી મકાનસુખ, વાહન સુખ મળે.

હિરલની કુંડળીમાં ૫નો ઉપપતિ સૂર્ય જે ૫-૮-૧૦-૨નું નિર્દેશન કરે એ જે સૂચવે છે કે જાતકને આઉટડોર ગેમ્સ રમતગમત અને નૃત્યમાં રૂચી, વૈભવી મોજશોખ કરે, એમ્બ્યુગ્રમેન્ટ પાર્ક, સફારી જંગલમાં ફરવુ ગમે. આ જાતકે શેરસહા રમવા નહીં તેમા નુકસાન થાય.

હેમલની કુંડળીમાં ૫નો ઉપપતિ ચંદ્ર જે ૫-૮-૯-૨ ભાવોનો નિર્દેશક બને છે જે જાતકને રીસર્ચ ફિલ્ડમાં પ્રગતિ કરાવે. વૈભવી મોજ શોખ કરે, સંગીત, ઇન્ડોરગેમ્સમાં રૂચી વધારે. મિત્રો સાથે હરવાફરવાનું, કોઈના કહ્યા મા ના રહે, મન મરજી મુજબ વર્તે.

હિરલની કુંડળીમાં ૬નો ઉપપતિ ગુરૂ વકી જે ૫-૨ ભાવોનું નિર્દેશન કરે છે. જાતક મીઠાઈ, ગુળ ખાવાના સોખીન, કફ, ડાયાબીટીસ, કોલેસ્ટ્રોલ, ચરબી, લીવર, થાઈરોઈડ, કેન્સર જેવા રોગની શક્યતા. જ્યારે હેમલની કુંડળીમાં ૬નો ઉપપતિ શનિ બને છે જે દુઠે સ્થિત આ શનિની દ્રષ્ટિ રજો સૂર્ય ચંદ્ર પર પડે છે જે બ્લડપ્રેશર, તાવ, માનસીક તનાવ, ચામડીના રોગની શક્યતા.

હિરલની કુંડળીમાં ૭માનો ઉપપતિ શનિ જેનો નક્ષત્રપતિ શુક્ર છે અને આ શનિ ૩,૪,૬,૭,૯,૧૨ નું નિર્દેશન કરે છે. જે વિવાહસુખ આપે પરંતુ લગ્ન મોડા થવાના યોગ બને. આ શનિ દુઠે સ્થિત હોવાથી લગ્નેશ મંગળ સાથે દ્રષ્ટિયોગ કરે છે. વિદેશ થી માંગુ આવે અને લગ્નબાદ વિદેશ યોગ બને.

સારું કામ કરવા માટે ધન કરતાં પણ વધુ સરળ હૃદય અને સંકલ્પની જરૂર છે.

હેમલની કુંડળીમાં ૭માનો ઉપપતિ બુધ જે ૮-૯-૧૧-૩-૪-૬ નું નિર્દેશન કરે છે. આ બુધ ૯મે શુક-રાહુ સાથે યુતિ બનાવે છે તેમજ કર્મ પ્રમાણે લગ્નેશ મંગળ અને પંચમેશ ગુરૂનો દ્રષ્ટિયોગ થાય છે તે સૂચવે છે કે આ જાતકના પ્રેમલગ્ન યોગ બને છે. આ જાતક પોતાના સંબંધો અને બોલીદ્વારા જાહેર જીવનમાં, સામાજિક જીવનમાં કાર્યરત રહે. જાતક જો પતિ સાથે સૂમેળ ના કરે અને અહમ ટકરાય તો વિવાહીત જીવન ખંડીત થવાની શક્યતા રહે. અહીં લગ્ન જીવનના કારક શુક અને ગુરૂનો ન.પતિ કેતુ બને છે જે લગ્નજીવનમાં નિરસતા સૂચવે છે.

બન્નેની કુંડળીમાં ૮માં ભાવનો ઉપપતિ શુક જે ૭-૯-૧૨ નો નિર્દેશક બને છે અને રાહુ સાથે યુતિ કરે છે તે સૂચવે છે કે જાતકને લગ્નજીવન, જાહેર જીવન તેમજ ભાગ્ય થકી તકલીફો, દુઃખ પડે. પ્રેમમાં નિષ્ફળતાના યોગ બને આયુષ્યની દ્રષ્ટિએ હેમલનું આયુષ્ય હિરલ કરતાં લાંબુ.

હિરલની કુંડળીના ૯મા ભાવનો ઉપપતિ શનિ જાતકના ભાગ્યોદય માટે અચડણ ઉભી કરે. મહેનત કરાવે. જાતક ધર્મમાં માને નહીં અથવા રૂટીચુસ્ત રીવાજોને જકડી રાખે.

હેમલની કુંડળીમાં ૯માનો ઉપપતિ બુધ હોવાથી જાતક બુદ્ધિ અને તર્ક વિચારોદ્વારા ધર્મભાવ કે ધર્મ કાર્ય કરે. કોઈના કહેવાથી આકર્ષાય નહીં. આ જાતક સફળ યાત્રાઓ કરે.

હિરલની કુંડળીમાં ૧૦માંનો ઉપપતિ ગુરૂ જે ૫-૨ ભાવનો નિર્દેશક બને છે. જાતક કોલેજ, શાળામાં શિક્ષક, પ્રોફેસર કે ટ્રસ્ટી બનવાના યોગ. કે ધાર્મિક સંસ્થામાં સલાહકાર તરીકે કાર્યરત રહે. સરકારી નોકરીના યોગ.

હેલની કુંડળીમાં ૧૦માનો ઉપપતિ શનિ જે ૩-૪-૬-૭-૯-૧૨ ભાવોનું નિર્દેશન કરે છે જે સૂચવે છે કે જાતકને મલ્ટીનેશનલ કંપનીમાં મહેનત થી આગળ આવવું પડે બીજાપાસે કામ કઢાવવાની આવડત સારી.

હિરલની કુંડળીમાં ૧૧માનો ઉપપતિ ચંદ્ર ૫-૮-૯-૨ ભાવોનો નિર્દેશક બને છે જે સૂચવે છે કે જાતકને કુટુંબથી લાભ, પોતાના મિત્રવર્ગ સાથે રચ્યોપરશો હોય, સેવિંગ સારુ.

હેમલની કુંડળીમાં ૧૧માનો ઉપપતિ મંગળ જે ૧-૬-૧૧ ભાવોનો નિર્દેશક બને છે તે સૂચવે છે કે જાતક પોતાના લાભ માટે હર્મેશા કાર્યરત રહે. જાતક પોતાના સ્વર્કર્મે લાભ મેળવવા કાર્યરત રહે.

હિરલની કુંડળીમાં ૧૨નો ઉપપતિ ગુરૂ જે ૬ઠાનો પણ ઉપપતિ બને છે. ગુરૂની દશા અંતરદશા દરમ્યાન માંદગી-બિમારી આવે અને હોસ્પિટલની મુલાકાત લેવી પડે. હેમલની કુંડળીમાં ૧૨માનો ઉપપતિ શનિ જે લગ્ન ભાવનો પણ ઉપપતિ બનતો હોવાથી બંધન યોગ જેવી સ્થિતિ ઉભી કરે. શનિ ૬ઠાનો પણ ઉપપતિ બને છે જે લાંબી બિમારી મૃત્યુનું કારણ બનાવે.

આમ જોડીયા બાળકોનું ફળકથન કે. પી. પદ્ધતિદ્વારા સહેલાઈથી સચોટ રીતે કરી શકાય છે. વધુ સુક્ષ્મતા માટે ભાવના ઉપપતિ, ન.પતિ, રા.પતિ, કારક, બાધક-મારક અને નિર્દેશકોના યુતિ દ્રષ્ટિ સંબંધો દશા, અંતરદશા તેમજ જન્મ સમયના ગ્રહોની સ્થિતિ ગોચર ગ્રહ સ્થિતિ જોવી જરૂરી છે.

॥ હરિ ૐ ॥

- હિરેન ભાવસાર

ગૃહસ્થી એક તપોવન છે, જેમાં સંયમ, સેવા અને સહિષ્ણુતાની સાધના કરવી પડે.

कैंसर के ज्योतिषीय योग

कैंसर एक असाध्य रोग है । कई बार यह बहुत छोटे स्तर पर ही ठीक हो जाता है तथा कई बार यह बहुत बड़े स्तर तक पहुंच जाता है और व्यक्ति को इसका पता बहुत देर से लगता है जब तक बहुत देर हो चुकी होती है । कैंसर रोग के ज्योतिषीय योग कुंडली में देखने के लिये हम भाव व ग्रहों का विचार करते हैं ।

लग्न / लग्नेश - कुंडली का लग्न हम स्वयं होते हैं अर्थात् लग्न या प्रथम भाव से जातक का शारीरिक गठन, स्वास्थ्य, प्रकृति, चरित्र, आत्मा आदि का विचार किया जाता है । लग्न और लग्नेश का शुभ स्थिति में होना चाहिए । यदि जातक का लग्न बली और मजबूत है तभी वह रोगों से लड़ पाएगा अर्थात् लग्न में शुभ ग्रह स्थित हो या लग्न शुभ दृष्ट हो, लग्न में कोई नीच या वक्री ग्रह या ग्रह युद्ध में लिप्त ग्रह न हो । लग्न में अशुभ ग्रह स्थित न हो । लग्नेश अशुभ भावों में अशुभ ग्रहों के साथ स्थित न हो, वक्री या नीच अवस्था में नहीं हो । राशियान्त पर न हो तो लग्न/लग्नेश को बली माना जाएगा । उसमें रोग से लड़ने की शक्ति अधिक होगी ।

षष्ठम भाव/षष्ठेश - कुंडली का छटा भाव रोग होता है । छटे भाव के अन्य कारक तत्व भी होते हैं उनमें से रोग भी एक है । छटा भाव त्रिक भावों में आता है । जहाँ यह भाव शामिल हो जाते हैं वहाँ स्वास्थ्य को हानि कर देते हैं । यदि छटा भाव लग्न/लग्नेश से अधिक बली हो तो जातक को रोग होने की पूर्ण सम्भावना होती है । यहाँ तक की कई बार जातक को अस्पतालों के चक्कर भी लगाने पड़ते हैं और बहुत व्यय भी होता है क्योंकि द्वादश भाव, छटे भाव से सम सप्तक है । यदि छटे भाव या भावेश से मंगल, राहु जैसे ग्रहों का संबंध बने तो जातक को अपनी दशा/अन्तरदशा में शाल्य चिकित्सा, दुर्घटना आदि जरूर देते हैं ।

यदि छटे भाव से केतु का संबंध बन रहा हो तो जातक के रोग जल्दी पकड़ में नहीं आते । कहीं न कहीं केतु भी कैंसर जैसे रोग को छुपाकर असाध्य बना देता है परन्तु यदि छटे भाव में पाप ग्रह स्थित हो तो यही छटा भाव रोगों से लड़ने की शक्ति भी देता है ।

अष्टम भाव/अष्टमेश - अष्टम भाव को आयु का भाव माना है । अष्टम भाव मृत्यु, मृत्यु का कारण, असाध्य रोग तथा लम्बी चलने वाली बीमारी का भी होता है । इसके अतिरिक्त यह अन्य अनेक रोगों का भी भाव होता है । ऐसे छुपे हुए रोग जिनका अन्त तक पता भी नहीं चल पाता ।

कुंडली में अष्टम भाव कभी भी लग्न से बली नहीं होना चाहिए । अष्टम भाव भी त्रिक भाव ही है, यह भाव अत्यन्त अशुभ भाव माना जाता है । यदि अष्टम भाव का स्वामी लग्न या लग्नेश को पाप पीड़ित करता है तो जातक को लम्बी चलने वाली असाध्य बीमारी दे देता है । अष्टम भाव का शनि आयु तो लम्बी करता है परन्तु रोग भी देता है क्योंकि शनि अष्टम भाव का ही कारक ग्रह है । अष्टम भाव में स्थित ग्रह भी रोग बताते हैं । यदि इसका संबंध शनि, मंगल, राहु/केतु जैसे पाप ग्रहों के साथ हो जाए, छटा भाव भी शामिल हो जाए तथा लग्न/लग्नेश निर्बली हो जाए तो निश्चित ही कैंसर जैसी असाध्य बीमारी हो जाती है ।

अष्टम व अष्टम भाव का संबंध - छद्म भाव रोग का भाव होता है तथा अष्टम भाव असाध्य व लम्बी बीमारी का भाव है यदि अष्टम व अष्टमेश का संबंध हो तथा राहु से दृष्ट या युक्त हो लग्न व लग्नेश भी निर्बली हो तो भी कैंसर जैसा असाध्य रोग दे देता है ।

एकादश भाव - एकादश भाव कुंडली में प्राप्ति, इच्छापूर्ति, मनोकामना पूर्ति का भाव है । हम एकादश भाव को अच्छा मानते हैं क्योंकि यह सुख-समृद्धि देने वाला भाव है, वृद्धि करने वाला भाव है परन्तु यह त्रिशडाय भाव होता है तथा छद्मे से छद्म भाव भी होता है । एकादश भाव में शुभ या अशुभ सभी ग्रह लाभ ही देते हैं । यहाँ भौतिक लाभों की बात कही गई है । यदि रोग की बात करें तो एकादश भाव भावेश का संबंध भी अष्टमेश भाव / भावेश से हो जाए तो यह रोग में भी वृद्धि करता है तथा कैंसर जैसी असाध्य बीमारी या किसी अन्य रोग में यह उसको बढ़ाकर असाध्य बनाने की क्षमता रखता है ।

कैंसर कारक ग्रह

१. राहु/केतु - राहु सर्प का मुख है तथा केतु पूँछ है । यह दोनों ही छाया ग्रह हैं तथा पापी ग्रह हैं । किसी भाव तथा भावेश पर राहु का प्रभाव उस भाव और भावेश के सम्बन्धित अशुभ फल ही देते हैं । कैंसर जैसे असाध्य रोग के संबंध में भी राहु/केतु महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । यदि इनका संबंध अष्टम, अष्टमेश और द्वादश भाव या इनके स्वामियों के साथ हो जाए तो निश्चित ही अशुभ प्रभाव देंगे । केतु महामारी, ज्वर, संक्रामक रोग, घाव आदि का कारक है केतु कीटाणु का भी कारक है । जब भी इसका संबंध छद्मे भाव या अष्टम भाव से जुड़ता है तो बीमारी का पता नहीं चलने देता या बहुत देर से पता चलता है और सम्भवतः कैंसर के कीटाणु भी दे देता है ।
२. शनि - शनि को काल पुरुष का दुख माना गया है । यदि इसका संबंध अष्टम भाव व लग्न से हो तो वह जातक को कैंसर जैसी लम्बी व असाध्य बीमारी देता है । शनि यदि निर्बली हो अर्थात् राशियान्त पर हो, ग्रह युद्ध में हो, राहु/केतु, मंगल जैसे ग्रहों के साथ हो, नीच हो या अन्य किसी प्रकार से निर्बली हो तो भी कैंसर जैसा रोग होने की सम्भावना होती है । हालांकि शनि को आयु कारक ग्रह माना जाता है परन्तु यदि यह जातक की जन्मकुंडली में निर्बली अवस्था में हो तो आयु के साथ असाध्य रोग भी देता है ।
३. निर्बली चन्द्रमा - चन्द्रमा हमारे मन का कारक है । यह जलीय ग्रह है । कुंडली में इसका बल होना आवश्यक होता है । चन्द्रमा जलीय रोग, रक्त आदि का भी कारक है । यदि यह कृष्ण पक्ष का चन्द्रमा हो, अमावस का चन्द्रमा हो अथवा राहु/केतु से युक्त हो, शनि व मंगल जैसे ग्रहों से पीड़ित हो, नीच अवस्था में हो तो यह भी कैंसर दे सकता है । चन्द्रमा यदि मंगल जैसे ग्रह से पीड़ित हो तो यह जातक को रक्त का कैंसर तक दे सकता है ।
४. पीड़ित गुरु - गुरु को ग्रहों में अत्यन्त शुभ ग्रह माना जाता है परन्तु यदि गुरु कुंडली में पीड़ित हो अर्थात् त्रिक भावों से संबंधित हो, राहु/केतु अक्ष में हो या अन्य किसी प्रकार से पीड़ित हो तो यह भी कैंसर जैसा रोग देने की क्षमता रखता है । गुरु बुद्धि का कारक है यदि इसका संबंध रोग

भाव तथा एकदश भाव व लग्न से हो जाए तो यह कैंसर की कोशिकाओं में वृद्धि करने का काम करता है । पीड़ित तथा निर्बली चन्द्रमा का संबंध कुंडली में जब भी अष्टम व अष्टम भाव तथा उनके भाव से होता है तो इनकी दशा/अर्न्तदशा आने पर जातक को कैंसर की सम्भावना बढ़ जाती है ।

अशुभ ग्रह शनि, मंगल व राहु की युति जन्मकुंडली के जिस भी भाव में होती है साथ ही उस भाव का भावेश व रोग के लिए कारक ग्रह भी पीड़ित हो जाए तो उस शारीरिक अंग से संबंधित कैंसर हो सकता है ।

पीड़ित ग्रह व कैंसर के प्रकार

१. सूर्य - यदि किसी जातक की जन्मकुंडली में सूर्य पीड़ित हो तो मस्तिष्क, पेट, सिर से संबंधित कैंसर हो सकता है । सूर्य हृदय का भी कारक है तो यह जातक को हृदय रोग भी दे सकता है ।
२. चन्द्रमा - पीड़ित चन्द्रमा छाती, स्तन, रक्त, हृदय की घमनियाँ इनसे संबंधित कैंसर दे सकता है । ४था स्थान दायी छाती, दसवाँ स्थान बाईं छाती, ये स्थान पापयुक्त या पापद्रष्ट हो तो भी कैंसर होता है ।
३. मंगल - यदि मंगल पाप प्रभाव में हो तो जातक को रक्त, अस्थि-मज्जा, गभांशय तथा गर्दन से संबंधित कैंसर दे सकता है ।
४. बुध - यदि बुध पीड़ित हो तो जातक को मुख, नाक या नाभी का कैंसर दे सकता है ।
५. गुरु - यदि गुरु पीड़ित हो तो जातक को कान, लीवर, जीभ, जांघे का कैंसर दे सकता है ।
६. शुक्र - शुक्र यदि पीड़ित हो तो जातक को गुप्त अंगों से संबंधित, गले से संबंधित कैंसर हो सकता है ।
७. शनि - शनि यदि पीड़ित हो, अशुभ प्रभाव में हो तो जातक को हाथ-पैर, मसूडों का कैंसर दे सकता है । शनि, राहु जल तत्वकी राणीमें हो तो भी कैंसर होता है ।
८. केतु - इसी प्रकार केतु भी रक्त, सिर, गला, रीढ़ की हड्डी का कैंसर दे सकता है । रहस्यमय छाया ग्रह है ।
९. राहु - मज्जा संबंधित कैंसर होता है ।

इन ग्रहों से संबंधित शारीरिक अंगों का कैंसर तभी सम्भव है जब वह भाव, भावेश तथा संबंधित कारक ग्रह सभी पीड़ित हो ।

योग

१. कैंसर रोग के लिये सबसे अधिक कारक ग्रह है - शनि, राहु/केतु, मंगल और गुरु ।
२. शनि रोग कारक ग्रह है लगभग सभी रोगों में शनि की संभावना होती है । राहु/केतु पाप ग्रह है तथा रोग देते हैं ।
३. केतु कीटाणु है जो रोग को बहुत तेजी से बढ़ाता है ।
४. कोई भी ग्रह जब रोग देता है और वह ग्रह बक्री भी हो तो रोग लम्बे समय तक बना रहता है ।
५. शनि/ग्रह द्वितीयेश में स्थित हो तो मुख में कैंसर होता है क्योंकि द्वितीयेश मुख का भाव है । जातक किसी नशे का आदी होता है चाहे कुछ करता हो या तम्बाकु/सिगरेट पीता है ।
६. कुंडली में शनि, केतु, गुरु को युति कैंसर योग है ।
७. चन्द्र/मंगल/सूर्य युति भी कैंसर योग है ।
८. षष्ठेश लग्न में स्थित हो तदा षष्ठेश का नक्षत्र सप्तमेश या अष्टमेश हो ।
९. षष्ठेश पाप ग्रह हो तथा लग्न में या त्रिक भावों में स्थित हो ।
१०. लग्न अश्लेषा नक्षत्र में हो तथा मंगल व षष्ठेश की युति लग्न में हो तथा पाप प्रभाव हो ।
११. अष्टम भाव में चार ग्रह कैंसर या लम्बी बीमारी का सूचक है ।
१२. अष्टम व अष्टम भाव दोनों में ५ या ५ से अधिक ग्रह हो तो कैंसर की सम्भावना होती है ।
१३. अष्टम में शनि/मंगल की युति हो तथा दोनों राहु के नक्षत्र में हो ।
१४. शनि/मंगल/राहु की युति बुध के साथ त्रिक भावों में हो तो कैंसर होता है ।
१५. यदि जातक की जन्मकुंडली में चन्द्र, मंगल, सूर्य व षष्ठेश की युति हो तो कैंसर हो सकता है । षष्ठेश का किसी निर्वली ग्रह व पीड़ित भाव/भावंश से जुड़ना ही काफी होता है रोग देने के लिए ।
१६. यदि किसी जातक के शनि तथा मंगल अष्टम भाव में हो तथा दोनों राहु के नक्षत्र में हो ।
१७. शनि अष्टम भाव में या राहु के नक्षत्र में हो और मंगल से दृष्ट हो, मंगल अष्टम भाव में राहु के नक्षत्र में हो और शनि से दृष्टि सम्बंध में हो तब भी कैंसर की सम्भावना होती है ।
१८. यदि छठे भाव का स्वामी अष्टमेश के नक्षत्र में हो तथा लग्न/लग्नेश निर्वली व पाप प्रभाव में हो ।
१९. कुंडली में यदि लग्न निर्वली हो तो शनि, केतु व गुरु का पाप प्रभाव सबसे अधिक कैंसर रोग देता है । इस योग में कैंसर जैसे रोग का पता अन्त तक नहीं चल पाता ।

२०. यदि जातक की जन्मकुंडली में द्वितीय भाव में शनि व राहु स्थित हो तो जातक को शराब, सिगरेट व तम्बाकू आदि के अत्याधिक सेवन से मुख का कैंसर देता है ।
२१. यदि किसी जातक की जन्मकुंडली में शनि, मंगल या शनि, राहु या शनि, केतु या मंगल के साथ राहु या केतु की युति द्वादश भाव में हो तो भी यह कैंसर की सम्भावना बना देती है । इनका सीधा प्रभाव रोग भाव पर पड़ता है । इनमें से मंगल राहु या केतु की युति अपनी दशा आने पर जातक की शल्य चिकित्सा भी करवा सकती है ।
२२. यदि किसी जातक की जन्मकुंडली में राहु त्रिक भावों में, त्रिक भावों के स्वामी के साथ स्थित हो ।
२३. यदि बुध की युति राहु से हो तथा इन पर पाप प्रभाव भी हो तो यह कैंसर की सम्भावना बनाता है ।
२४. यदि छठे भाव का स्वामी, सप्तमेश या अष्टमेश के नक्षत्र में होकर लग्न में स्थित हो तथा लग्नेश भी निर्बली हो तो जातक को कैंसर की सम्भावना होती है ।
२५. यदि महादशानाथ पाप ग्रहों द्वारा पीड़ित हो दृष्टि, युति या स्थिति द्वारा तो यह भी कैंसर की सम्भावना बनाता है ।

हमें इस बात का हमेशा ध्यान रखना चाहिए की कोई भी रोग छोटा या बड़ा, साध्य या असाध्य तभी सम्भव होता है जब हमारा लग्न व लग्नेश बलहीन होगा तथा रोग भाव तथा उसका स्वामी उससे अधिक बली होगा । यह रोग किस प्रकार का होगा वह पीड़ित भाव, भावेश व कारक ग्रह बताते हैं जिनकी प्रकृति पर कैंसर जैसे रोग की प्रकृति निर्भर करती है, अर्थात् वह कैंसर किस प्रकार का होगा ।

स्वस्थ शरीर के लिए लग्न का त्रिक भावों से बली होना परम आवश्यक होता है ।

२६. नवम भावमें जलतत्वकी राशि, नवममें चन्द्र शनिसे द्रष्ट
२७. कैंसर अधिकतर गुरु की दशामें होता है । बहुत कमजोर ग्रहके (केन्द्र त्रिकोण) मालिक ६-८-१२ में बैठा हो) राहु-केतु का प्रभाव होता है । उदा. १ले भाव मे राहु, ७मे भाव में केतु, दोनों ग्रहों की असर कब होती है जब उसके साथ बैठा हो तब अंशात्मक असर ५ की ओरबिट छठे भाव के साथ या नवमांश में छठे भाव के साथ गुरु का संबंध जरूरी है । चंद्र, गुरु, राहु, शनि या मंगल ८, १२ के साथ संबंधित (भाव, द्रष्टी, कारक, भावेश) होने चाहिए, जल राशि संबंधित होनी चाहिए । चंद्र, गुरु, राहु का संबंध होता है, एक दुसरे के साथ ६-८-१२ के भाव के साथ श्रवण नक्षत्र का संबंध होता है ।
२८. मकर राशि दशम भावसे संबंधित होती है तब इलाज कारगर नहीं होता है, हर प्रकार का इलाज कराने का वक्त आता है । (४-८-१२वे भाव के साथ १०वाँ भाव संबंधित हो तब जान लेवा हो सकता है ।)

२९. जो भाव, जो राशि और उसका स्वामी शनि, राहु, केतु से प्रभावित हो, छट्टा स्थान व्ययस्थान और सूर्य यह पापग्रहों के साथ बुरे योगमें हो तब केन्सर होता है ।
३०. जन्म कुंडली में राहु के साथ ग्रह हो तब उस भावसे संबंधित हिस्सों के केन्सरकी संभावना होती है ।
३१. शनि, राहु मलीन प्रभाव और मंदगतिवाले होनेसे केन्सर में उनका योगदान अधिक होता है ।
३२. चंद्र और शुक्र सूर्य की राशि में या सूर्य का नवमांश कैंसर प्रदान करता है ।

कैंसर के सफल दिव्य प्रयोग

१. श्याम तुलसी के १०० पत्ते को पीस कर दही बनाने के दक्त बनाते वक्त मिलाना है । तीन-चार घण्टे के बाद दही जम जाए तब उसे कपडे से छान कर उसमे खडा सक्कर और शहद मिलाकर दिन में तीन, चार बार सेवन करने से केन्सर ठीक होता है ।
२. राम फल औषधीय फल है, उसका छीलका और बीज निकालकर दगर पानी का ज्युस बनाकर फ्रीजमें रखना है । २०० मीली पानी में १ चमच रामफलका ज्युस, पाच बुंद नींबु का रस तथा सक्कर मिलाकर दिन में तीन बार खाली पेट सुबह, दोपहर, शाम लेना है ।
३. वृद्धि वाटीका वटी (घृत पापेश्वर, ऊंजा, पतंजला । डाबर) एक एक गोली सुबह, शाम भोजन के बाद लेना है ।
४. हरी गीलोय का रस ५० मिली सुबह, शाम लेना है ।
५. हलदी का रस ५ मिली सुबह, शाम सेवन करना है ।
६. खुद की आत्मकथा लिखकर चुभित (Hurt), अफसोस (Guilt), फरीयाद (Complaint) और बदले की भावना (Rebel) इत्यादी से छुटकारा पाना आवश्यक है ।

संकलन - डॉ. हरीभाई मालदे



राष्ट्र ज्योतिष

ग्रहों का विचार करते हैं ।

पाकिस्तान के लिए यह खबर अच्छी नहीं, २०२० पडने वाला है बहुत भारी ।

कश्मीर के पुलवामा में एक आत्मघाती हमले में सीआरपीएफ के ४० जवानों शहीद हो गए । इस बात को लेकर पूरे देश में आक्रोश है और हर तरफ से जंग की आवाज बुलंद की जा रही है । जनता और शहीदों के परिजन पाकिस्तान को इस हमले के लिए सबक सिखाने की मांग कर रहे हैं । देश में आक्रोश का माहौल देखकर पाकिस्तान डरा हुआ है सीमा के पास बने अपने लौचिंग पैड से आतंकियों को कही और शिफ्ट कर चुका है । लेकिन क्या कूटनीति और राजनीति अभी युद्ध की इजाजत देती है आइए देखे ज्योतिषशास्त्र की गणना के अनुसार भारत पाक के बीच बिगड़ते संबंध क्या युद्ध तक पहुंच पाएंगे ।

युद्ध

यहाँ की चाल मात्र २०२० के मार्च से जून के मध्य तक भारत और पाकिस्तान के बीच किसी सोमित युद्ध की आशंका दिखा रही है । इसमें योग पाकिस्तान का खुलकर सहयोग कर सकता है । पूर्वी और पश्चिमी मोर्चे पर होने वाले इन युद्ध में भारत को भी बड़ी क्षति पहुंचने की आशंका है ।

आजादी के समय १५ अगस्त १९४७ को मध्य रात्रि में आजाद हुए भारत की कुंडली वृषभ लग्न की है जहां वर्तमान में चंद्रमा में गुरु की दशा चल रही है, जिसका प्रभाव इस वर्ष दिसंबर के मध्य तक रहेगा । गुरु लाभ और अष्टम भाव के स्वामी होकर शत्रुओं के छठे भाव में तुला राशि में बैठा है ।

“गुरु की इस अंतर्दशा में भारत राजनीतिक मंचों पर विश्वविरादरो के सानने पाकिस्तानको आतंकवाद के मुद्दे पर बेनकाब करने में सफल होगा ।”

“साथ ही भारत को पाकिस्तान में छिपे बैठे आतंकी सरगना मसूद अजहर को अंतरराष्ट्रीय आतंकी घोषित करवाने में इस वर्ष सफलता हासिल हो गई है ।”

सर्जिकल स्ट्राइक

२३ मार्च को मंगल के वृषभ राशि में प्रवेश करने के १५ दिनों के भीतर भारत की सेना पाकिस्तान पर सर्जिकल स्ट्राइक या किसी अन्य हमले में बड़े आतंकियों का सफाया कर दिया है । बाद में अप्रैल-मई में मंगल और शनि का समसप्तक योग तथा जुलाई और दिसम्बर में पड रहे बड़े ग्रहण भारत और पाकिस्तान में तनाव को अपने चरम पर ले जाएंगे । अप्रैल, मई, जुलाई और दिसम्बर महिनो में बड़े आतंकी हमले होने की आशंका रहेगी । इसके बाद चन्द्रमा में शनि की विशोत्तरी दशा में भारत और पाकिस्तान में साल २०२० में पहली छमाही में युद्ध की आशंका बन रही है ।

पाकिस्तान पर २०२० में भारी पड़ेगा

अष्टम शनि

आजादी के समय १४ अगस्त १९४७ को मध्य रात्रि कराची में आजादी की घोषणा करने वाले पाकिस्तान की कुंडली में मेष लग्न की है जहां युद्ध का कारक ग्रह मंगल पराक्रम के तीसरे भाव में चंद्रमा के साथ मिथुन राशि में बैठा है । चंद्रमा और मंगल की इस युति पर नवमेश गुरु की युद्ध स्थान यानी सप्तम भाव से दृष्टि पड़ रही है ।

पाकिस्तान की कुंडली में भूमि स्थान यानी चौथे भाव का स्वामी चंद्रमा अपने से बारहवें घर में विनाश स्थान यानी अष्टम भाव के स्वामी मंगल के साथ बैठा है । इस योग के प्रभाव से १९७१ में शनि की साढेसाती की शुरुआत के दौरान हुए युद्ध में पाकिस्तान एक बार पहले भी टुट चुका है । अब साल २०२० में शनि के मकर राशि में आने पर अष्टम शनि के गोचर के चलते पाकिस्तान को एक और बड़ा झटका लगने का योग बन रहा है । शुक्र-गुरु और शुक्र-शनि की मारक भाव से संबंधित बुरी दशाओं और साल २०२०-२१ में बन रहे दशम शनि के बुरे गोचर के कारण पाकिस्तान के स्थायित्व को एक बड़ा खतरा नजर आ रहा है ।

२०२० तक होंगे

पुलवामा हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के संबंधों में पूरी तरह से दरार आ चुकी है । बॉर्डर पर माहौल तनावपूर्ण है । ऐसे हालात में दोनों देशों के बीच कभी भी युद्ध हो सकता है । इनकी तैयारियाँ भी अधिकारिक रूप से धीरे-धीरे हो रही हैं । पाकिस्तान को लेकर बड़ा खुलासा जिसमें भारतीयों का सीना चौड़ा हो जाए और इन दिनों हर कोई शहादत का बदला मांग रहा है । पुलवामा हमले के बाद पाकिस्तान के आका भारत को परमाणु बम की धमकी दे रहे हैं यानी पाकिस्तान का कहना है कि वह युद्ध के लिए तैयार है । ऐसे में यह माना जा रहा है कि पाकिस्तान से आखिरी लड़ाई का समय आ चुका है और अब बहुत ही जल्दी इस पर आर या पार होने का ।

भारत की कुंडली वृषभ लग्न की है, जिसका स्वामी शुक्र है । ऐसे में भारत का स्वभाव ही क्षमाशील है और भारत तभी उग्र होता है जब अति की भी हद हो जाती है । वहीं इसके विपरीत पाकिस्तान की कुंडली मेष लग्न की है जिसका स्वामी मंगल है । ऐसे में ज्योतिष शास्त्रों का कहना है की पाकिस्तान के स्वभाव में आक्रमकता है और वह युद्ध को ही चाहता है । दरअसल मेष और मंगल के एक हो जाने पर युद्ध ही पहली प्राथमिकता बनती है और पाकिस्तान चाहकर भी अपने इस स्वभाव को बदल नहीं सकता है ।

पाकिस्तान कर सकता

ज्योतिष शास्त्रों की माने तो पाकिस्तान को कुंडली में चौथे घर में सूर्य, शनि, शुक्र, बुध व चंद्रमा ५ ग्रहों की एकत्र होने को वजह से पाक न तो शांत बैठेगा और ना ही पड़ोसियों को शांत बैठने देगा । ऐसे में यह भी माना जा रहा है कि पाकिस्तान युद्ध की पहल करके निफं धमकी देगा, क्योंकि उसे खुद भी अपनी क्षमता का एहसास है, लेकिन वह अपने अंतिम निर्णायक तक इस तरह की हरकत कर

सकता है और वह युद्ध के लिए पहल भी कर सकते हैं । इसके अलावा पाकिस्तान के नस नस में धोका है, जिसमे वह भारत को धोखा भी दे सकता है ।

२०२० में हो सकता है पाकिस्तान के टुकड़े

ज्योतिष शास्त्र के मुताबिक पाकिस्तान को जब तक अंतिम निष्पायक पर नहीं पहुंचाया जाएगा तब तक वह इस तर की हरकते करता ही रहेगा ऐसे में भारत के लिए २०२० का समय काफी अच्छा है और इस साल पाकिस्तान के टुकड़े टुकड़े हो जाएंगे और लड़ाई पूरी तरह से खत्म हो जाएगी । दरअसल भारत के लिए मूलांक काफी अच्छा है और पाकिस्तान को मुंह की खानी पड़ेगी । इतना ही नहीं इसके बाद पूरी दुनिया में भारत की बाहुवाही भी होगी ।

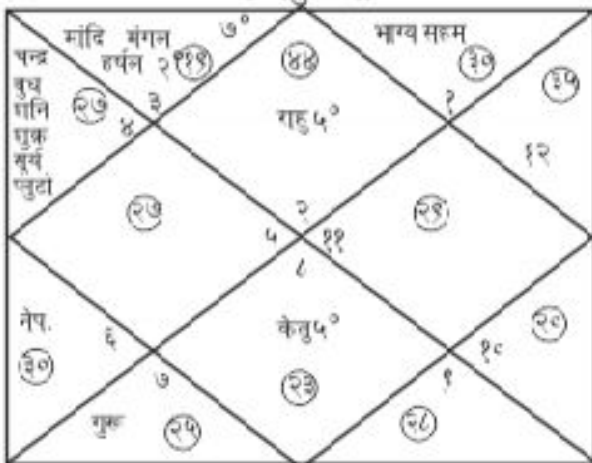
अक्टूबर १९६२ में उच्च राशि की मंगल तथा शनि सातवे घर में थे । उस समय भी भारत-चीन के मध्य युद्ध हुआ था । अब पुनः २०२० में हालात ऐसे ही बन रहे हैं । राहू वृषभ राशि में आएगा क्योंकि भारत में आंतरिक अशांति को बढ़ावा देगा । देश में साम्प्रदायिकता का जहर घोला जाएगा । नवांश चार्ट में मंगल पुनः १२वें घर में होगा जहां से वह छठे घर तथा सातवें घर को देखेगा जिससे गुप्त षडयंत्र होने का पता चलता है । यह षडयंत्र भारत के खिलाफ दो देशों द्वारा रचा जाएगा । दशमांश चार्ट में मंगल लग्न में ४थे घर के स्वामी बृहस्पति के साथ है जो कि गंभीर स्थिति को दर्शाता है ।

२०२० में भारत-पाकिस्तान के बीच सम्पूर्ण युद्ध हो सकता है जिसमें चीन भी शामिल होगा । भारत की कुंडली में चंद्रना की महादशा चल रही है जोकि तीसरे घर का स्वामी है ।

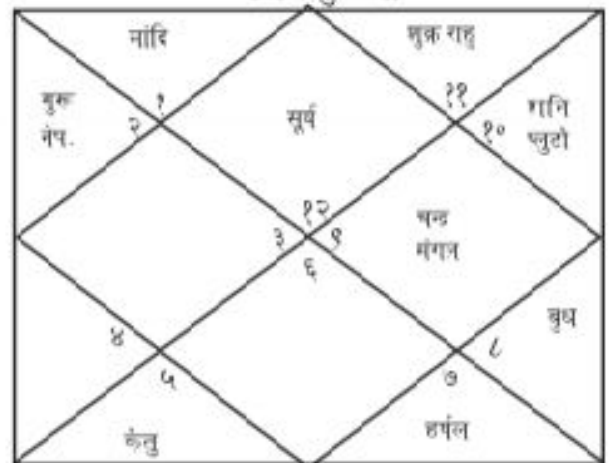
चंद्रमा कुंडली में शनि, शुक्र, बुध व सूर्य के साथ तीसरे घर में हैं । वहां से यह ७वें घर को देख रहे हैं । पाकिस्तान को सातवें घर शुक्र की महादशा चल रही है जिससे यह भारत के साथ तो उलझता रहेगा परन्तु साथ ही बलूचिस्तान में भी विद्रोह की स्थिति से इसे निपटना होगा । बलूचिस्तान के लोगों को भारत के अलावा अमरीका से भी सहानुभूति मिलेगी ।

२०२० में भारत-पाक सीमाओं पर दोनों देशों के मध्य तनाव की स्थिति बनी रहेगी । २०१६ से २०२० तक के कुंडली चार्टों को देखने से पता चलता है कि ग्रहों की स्थिति दोनों देशों को आपस में उलझाती रहेगी ।

जन्मकुंडली



नक्षत्र कुंडली



ભારત ૧૪-૫/૦૮/૧૯૪૭

ગ્રહ	રાશિ	ડીગ્રી	નક્ષત્ર	નવમાંશ	અવસ્થા
લગ્ન	વૃષભ	૦૭-૪૩-૪૦	કૃતિકા ૪	ઝ-કૃસ્ટાંશ	વૃધા
સૂર્ય	કર્ક	૨૭-૫૯-૧૯	આશ્લેષા ૪	ઊગાંશ	બાલ્યા
ચન્દ્ર	કર્ક	૦૩-૫૯-૦૬	પુષ્ય ૧	ભૂપાંશ	મૃતા
મંગલ	મિથુન	૦૭-૨૭-૨૨	આદ્રા ૧	કૃપાંશ	કુમાર
બુધ	કર્ક	૧૩-૪૦-૩૨	પુષ્ય ૪	દરિદ્રાંશ	યુવા
ગુરુ	તુલા	૨૫-૫૨-૩૬	વિશાખા ૨	પાપાંશ	મૃતા
શુક્ર	કર્ક	૨૨-૩૩-૪૨	આશ્લેષા ૨	પાપાંશ	કુમાર
શનિ	કર્ક	૨૦-૨૮-૧૪	આશ્લેષા ૨	પાપાંશ	કુમાર
રાહુ	વૃષભ	૦૫-૦૪-૨૨	કૃતિકા ૩	ઊગાંશ	મૃતા
કેતુ	વૃશ્ચિક	૦૫-૦૪-૨૨	અનુરાધા ૧	નૃપાંશ	મૃતા
હર્ષલ	મિથુન	૦૨-૦૩-૬૨	મૃગ ૩	અભ્યાંશ	બાલ્યા
નેપ.	કન્યા	૧૫-૪૨-૨૬	હસ્ત ૨	ભાગ્યાંશ	યુવા
પ્લુટો	કર્ક	૨૦-૦૬-૨૯	આશ્લેષા ૨	પાપાંશ	કુમાર

વિશોત્તરી મહાદશા

શનિ	૧૫-૮-૧૯૪૭ સે ૯-૩-૧૯૯૫	ચન્દ્ર	૧૦-૯-૨૦૧૫ સે ૯-૯-૨૦૨૫
બુધ	૯-૯-૧૯૬૫ સે ૩-૯-૧૯૮૨	મંગલ	૯-૯-૨૦૨૫ સે ૯-૯-૨૦૩૨
કેતુ	૯-૯-૧૯૮૨ સે ૩-૯-૧૯૮૯	રાહુ	૯-૯-૨૦૩૨ સે ૯-૯-૨૦૫૦
શુક્ર	૯-૯-૧૯૮૯ સે ૯-૩-૨૦૦૯	ગુરુ	૯-૯-૨૦૫૦ સે ૩-૯-૨૦૬૬
સૂર્ય	૯-૯-૨૦૦૯ સે ૧૦-૯-૨૦૧૫		

યુદ્ધ કે લિષ ૩-૬-૭ ભાવ

યુદ્ધ નેં વિજય ૧૧વાં ભાવ

કાલસપંયોગ પરંતુ સવ ગ્રહ કેતુ કી તરફ બુધ ઓર નેપ્યુન યુવાવસ્થા

શુભગ્રહ સૂર્ય, બુધ, ચન્દ્ર

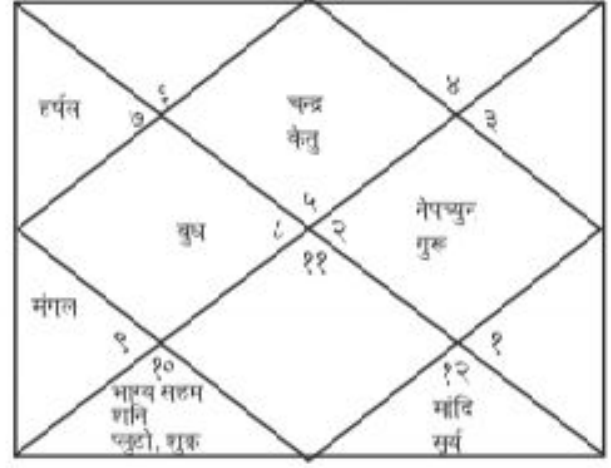
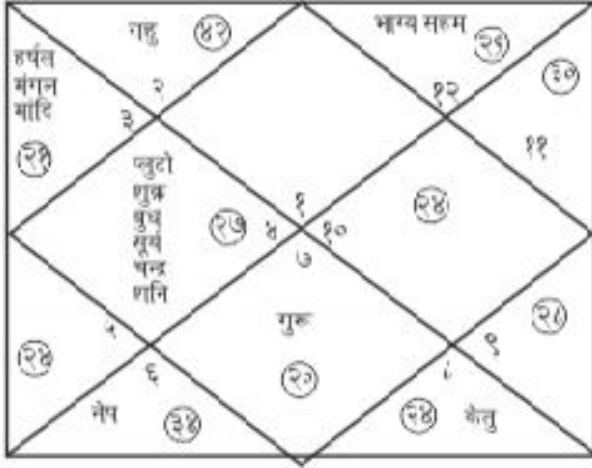
અશુભગ્રહ રાહુ, કેતુ, ગુરુ લેકિન કેતુ નૃપાંશમેં

ભાવમધ્ય મંગલ

યોગકારક શનિ

ચન્દ્ર, મંગલ, સૂર્ય, ગુરુ, હર્ષલ, નેપ્યુન પલ્કર નવમાંશ મેં

પાકિસ્તાન દિનાંક : ૧૪-૮-૧૯૪૭ ૨૩.૦૦ (વક્ત) કરાચી (જગહ)



ભારત ૧૪-૫/૦૮/૧૯૪૭

ગ્રહ	રાશિ	ડીગ્રી	નક્ષત્ર	નવમાંશ	અવસ્થા
લગ્ન	મેષ	૧૫-૨૨-૪૫	ભરણી ૧	નૃપાંશ	યુવા
સૂર્ય	કર્ક	૨૭-૫૮-૦૭	આશ્લેષા ૪	ઊગ્રાંશ	બાલ્યા
ચન્દ્ર	કર્ક	૦૩-૪૦-૧૪	પુષ્ય ૧	ભૂપાંશ	મૃતા
મંગલ	મિથુન	૦૭-૨૬-૩૨	આર્દ્રા ૧	કૃપાંશ	કુમાર
બુધ	કર્ક	૧૩-૩૮-૧૬	પુષ્ય ૪	દરિદ્રાંશ	યુવા
ગુરુ	તુલા	૨૫-૫૨-૨૯	વિશાખા ૨	પાપાંશ	મૃતા
શુક્ર અસ્ત	કર્ક	૨૨-૩૨-૦૯	આશ્લેષા ૨	પાપાંશ	કુમાર
શનિ અસ્ત	કર્ક	૨૦-૨૮-૦૪	આશ્લેષા ૨	પાપાંશ	કુમાર
રાહુ	વૃષભ	૦૫-૦૪-૨૬	કૃતિકા ૩	ઉગ્રાંશ	મૃતા
કેતુ	વૃશ્ચિક	૦૫-૦૪-૨૬	અનુરાધા ૧	નૃપાંશ	મૃતા
હર્ષલ	મિથુન	૦૨-૦૩-૦૯	મૃગ ૩	અભ્યાંશ	બાલ્યા
નેપચ્યુન	કન્યા	૧૫-૪૨-૨૪	હસ્ત ૨	ભોગ્યાંશ	યુવા
પ્લુટો	કર્ક	૨૦-૦૬-૨૬	આશ્લેષા ૨	પાપાંશ	કુમાર

વિશોત્તરી મહાદશા

૧૪-૮-૧૯૪૭ સે ૨૦-૨-૧૯૬૬
૨૦-૨-૧૯૬૬ સે ૨૦-૨-૧૯૮૩
૨૦-૨-૧૯૮૩ સે ૨૦-૨-૧૯૯૦
૨૦-૨-૧૯૯૦ સે ૨૦-૨-૨૦૧૦

શનિ
બુધ
કેતુ
શુક્ર

૨૦-૨-૨૦૧૦ સે ૨૦-૨-૨૦૧૬
૨૦-૨-૨૦૧૬ સે ૨૦-૨-૨૦૨૬
૨૦-૨-૨૦૨૬ સે ૧૯-૨-૨૦૩૩
૧૯-૨-૨૦૩૩ સે ૨૦-૨-૨૦૫૧
૨૦-૨-૨૦૫૧ સે ૨૦-૨-૨૦૬૭

સૂર્ય
ચન્દ્ર
મંગલ
રાહુ
ગુરુ

આજસુ માલસ હંમેશા પોતાના નસીબનો વાંક કાઢતો રહે છે.

२६ फरवरी २०१९ भारतीय हवाईदलने पाकिस्तानके बालाकोटपे बोम्ब गिराके आतंकी संगठन जैसे ए. मोहमद के मथक का सफाया कर डाला । उसके बाद पाकिस्तान वायु सेनाका प्रहार भारतीय पाइलट अभिनंदन वर्धमानकी मरदानगी, पाकिस्तान सेनाद्वारा हिरासत और मुक्ति इस्लामी देशोंकी परिसरमें पाकिस्तानकी नाराजगी के बावजूद भारत को मिला सन्मान वगैरह जैसी घटनाके पीछे नंबर ३ उसका स्वामी गुरुकी अमीद्रष्टी २०१९ का टोटल ३ याने ये वर्ष गुरुका प्रभाववाला है । भारत और पाकिस्तान दोनोंने आजादी की ७१वीं वर्षगांठ मनाली है और अभी ७२वां चल रहा है. ७२ का टोटल ९ याने मंगल, ये मंगल भारतके लिये ज्यादा प्रभावशाली नहीं है लेकिन पाकिस्तानके लिये अशुभ है और वो १३ अगस्त २०२० तक भुगतना पड़ेगा । भारत-पाक के लिये पहली लड़ाई २० अगस्त १९४७ रोजाना शुरू होकर १३ अगस्त १९४८ को खत्म हुई । १९४७ का टोटल ३ याने गुरु जो भारत को ज्यादा अनुकूल था ऐसी १९६५ टोटल ३ में भी गुरु का प्रभाव था जो भारतके लिये फायदेमंद रहा । १९७१ जिसका टोटल ९ में मंगलका प्रभाव था जो भारत के लिये ज्यादा प्रभावशाली नहीं था लेकिन पाक के लिये अशुभ था ये युद्ध ३ दिसम्बर १९७१ से १६ दिसम्बर १९७१ यानि गुरु का प्रभाव था जिनमें भारत को लाभ मिला । चौथा कारगीलका युद्ध १९९९ टोटल १ याने सूर्य का प्रभाव २६ मई से २६ जुलै १९९९ ये पिरियड ग्रहोंकी द्रष्टीसे दोनो देशोंके लिये समान था इसलिये भारत को भी नुकसान भुगतना पडा ।

२०१९ भारत के लिये शुभ है इमरानखान ५-१०-१९५२ में जन्म हुआ वर्तमान उम्र ६७ यानी टोटल ४ हर्षल जो गुरु का दुश्मन है इसलिये उसकी मुश्किली कम नहीं होनेवाली हर्षल ऐसा ग्रह है जो अचानक नकारात्मक परिणाम देता है । इसलिये अक्टुबर २०१९ तक निराशाजनक बनावोंके लिये तैयार रहना पड़ेगा उसके बाद रहत मिलेगी ।

ड्राईव्हर और गार्ड दोनों के लिये अच्छा तालमेल ना हो तो ट्रेन के संचालनमें गडबड आती है । वो फोर्मुला के हिसाबसे गुरु-हर्षलका शत्रुभावतले इमरानखान गलत निर्णय ले जिसका भुगतान पाकिस्तानको करना पडे ।

१९६० में जन्म लिया पाकिस्तानका सेनापती कपरलाजवा. कपरबाजवा का जन्मांक ५ याने बुध जिनका गुरु के साथ संबंध नहीं है । बुध गुरु को सम मानता है और गुरु बुधको दुश्मन मानता है इसलिये युद्ध इमरान, बाजवा और पाकिस्तान तीनों के लिये दुःसाहस पुरवार होगा और भारत जो नीति अपनायेगी वो लाभदायी साबित होगी ।

अस्तु ।

संकलन - डो. हरिलाल मालदे

VEDIC JYOTISH SANSTHAN**RESULT****VEDIC JYOTISH PRAVESH**

No.	Name of the Student	Class	Marks
1	MEHUL M BHATT	DISTINCTION	84
2	RITA N DHOLAKIA	DISTINCTION	82
3	PIYUSH R RAVAL	DISTINCTION	78
4	HITENDRA V GOHIL	DISTINCTION	77
5	LEENA A SHARMA	DISTINCTION	77
6	SONAL P THADESWAR	DISTINCTION	76
7	DEEPA M SOLANKI	FIRST	73
8	VIDYA U SHINDE	FIRST	73
9	DHARMESH J MEHTA	FIRST	72
10	SONAL J VORA	FIRST	72
11	HETAL R SHAH	FIRST	71
12	REENA H GOHIL	FIRST	70
13	SWTEA V SHAH	FIRST	70
14	YATIN D PARIKH	FIRST	69
15	SATYAM N DIVECHA	FIRST	68
16	JAYSHRI A CHUNAWALA	FIRST	67
17	LATA P SHAH	FIRST	67
18	VEENA V DUBAL	FIRST	67
19	JIPSY D RAJGOR	FIRST	66
20	LATA J LAD	FIRST	65
21	BHAVANA M MAKWANA	FIRST	64
22	CHETAN H PAREKH	FIRST	64
23	HARSHA P MAKWANA	FIRST	64
24	NEETA B PATEL	FIRST	64
25	ALKA J UPADHYAY	FIRST	63
26	RAHUL N YADAV	FIRST	63
27	SANJAY N JOGI	FIRST	63
28	SHARVARI A TALASHILKAR	FIRST	63
29	DEENA M MEHTA	FIRST	62
30	NEETA V THAKKAR	FIRST	62
31	ROHAN P SHETTY	FIRST	62
32	VISHNU C PANCHAL	FIRST	62
33	ALKA R SETA	SECOND	60
34	AMEE M BHATT	SECOND	60
35	NINA S KASARE	SECOND	60
36	PRATIK C JOSHI	SECOND	60

જીવનમાં સુવાસ અને પ્રભુમાં વિશ્વાસ - આ સૂત્રને જો આપણે જીવનમાં ચરિતાર્થ કરી શકીએ તો જીવન ધન્ય બની શકે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN**RESULT****VEDIC JYOTISH PRAVESH**

No.	Name of the Student	Class	Marks
37	MANISHA C NAIK	4SECOND	59
38	SWARNA PAHUJA	SECOND	59
39	TEJPAL H GUPTA	SECOND	59
40	BIJAL D JETHWA	SECOND	58
41	ANAGHA A DANI	SECOND	57
42	FRASANT Y BHATHENA	4SECOND	57
43	SANDEEP M CHAURASIA	SECOND	57
44	YASMIN S MAKANI	SECOND	57
45	MOHINI D RATHOD	SECOND	56
46	MEENA N MANIAR	SECOND	55
47	FRASANT S FANCHAL	SECOND	55
48	VIKRAM M THAKKAR	SECOND	54
49	JAGRUTI H JARIWALA	SECOND	53
50	AMIT P SHARMA	SECOND	52
51	BANKIM R PARIKH	SECOND	51
52	BHAVNA H JOGI	SECOND	51
53	AMAR K POPAT	SECOND	50
54	ANIL J MEHTA	SECOND	50
55	FRAMOD M RAVAL	SECOND	50
56	RASHMI B VED	SECOND	50
57	REENA N CHHEDA	SECOND	50
58	KETAN M SHROFF	SECOND	49
59	ANOOP S GORADIA	SECOND	48
60	BHARATKUMAR K WAGHELA	SECOND	48
61	USHA R SHAH	SECOND	48
62	BIBHUTI N CHAUDHARI	SECOND	47
63	LALIT C HINDOCHA	SECOND	47
64	NITIN N MAKWANA	SECOND	47
65	RAVINDRA K MEHTA	SECOND	47
66	GHANSHYAM M JOSHI	SECOND	46
67	MANSI P SHUKLA	SECOND	45
68	SATYAVIJAY P SARMALKAR	SECOND	45
69	JAYA M WALA	SECOND	43
70	SUBHASH N KOTHARI	SECOND	41
71	KALPANA D CHAVDA	PASS	40
72	DEEPAK N GUNDIGARA	PASS	36
73	RUMA B CHAUDHARI	PASS	35

ગૃહસ્થી એક તપોવન છે, જેમાં સંયમ, સેવા અને સહિષ્ણુતાની સાધના કરવી પડે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN**RESULT****VEDIC HAST REKHA VIGNYATA**

No.	Name of the Student	Class	Marks
1	SONAL P THADESWAR	DISTINCTION	92
2	LATA J LAD	DISTINCTION	91
3	DEEPA M SOLANKI	DISTINCTION	90
4	JAGRUTI H JARIWALA	DISTINCTION	89
5	JIPSY D RAJGCR	DISTINCTION	88
6	AMEE M BHATT	DISTINCTION	86
7	MEENA N MANIAR	DISTINCTION	86
8	VIDYA U SHINDE	DISTINCTION	86
9	JAYSHRI A CHUNAWALA	DISTINCTION	85
10	LATA P SHAH	DISTINCTION	83
11	REENA N CHHEDA	DISTINCTION	83
12	LEENA A SHARMA	DISTINCTION	82
13	MEHUL M BHATT	DISTINCTION	82
14	YASMIN S MAKANI	DISTINCTION	82
15	DHARMESH J MEHTA	DISTINCTION	81
16	HETAL R SHAH	DISTINCTION	80
17	NEETA V THAKKAR	DISTINCTION	79
18	BHAVANA M MAKWANA	DISTINCTION	78
19	SANJAY N JOGI	DISTINCTION	78
20	YATIN D PARIKH	DISTINCTION	78
21	MANSI P SHUKLA	DISTINCTION	77
22	RAHUL N YADAV	DISTINCTION	76
23	ALKA J UPADHYAY	FIRST	75
24	PRASANT Y BHATHENA	FIRST	75
25	PRATIK C JOSHI	FIRST	75
26	SATYAM N DIVECHA	FIRST	75
27	VIKRAM M THAKKAR	FIRST	75
28	BIJAL D JETHWA	FIRST	74
29	HITENDRA V GOHIL	FIRST	74
30	MANISHA C NAIK	FIRST	74
31	ROHAN P SHETTY	FIRST	74
32	CHETAN H PAREKH	FIRST	73
33	REENA H GOHIL	FIRST	73
34	HARSHA P MAKWANA	FIRST	72
35	ALKA R SETA	FIRST	70

આત્મવિશ્વાસ, આત્મસન્માન અને આત્મસંયમ આ ત્રણ વસ્તુઓ જ જીવનને પરમ શક્તિ બનાવે છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN**RESULT****VEDIC HAST REKHA VIGNYATA**

No.	Name of the Student	Class	Marks
36	AMAR K POPAT	FIRST	70
37	AMIT P SHARMA	FIRST	70
38	ANAGHA A DANI	FIRST	70
39	SWTEA V SHAH	FIRST	70
40	TEJPAL H GUPTA	FIRST	70
41	VEENA V DUBAL	FIRST	70
42	FRASANT S FANCHAL	FIRST	70
43	FRAMOD M RAVAL	FIRST	69
44	BIBHUTI N CHAUDHARI	FIRST	68
45	NEETA B PATEL	FIRST	68
46	FIYUSH R RAVAL	FIRST	68
47	RITA N DHOLAKIA	FIRST	65
48	SONAL J VORA	FIRST	64
49	BHAVNA H JOGI	FIRST	63
50	DEENA M MEHTA	FIRST	63
51	RAVINDRA K MEHTA	SECOND	58
52	SANDEEP M CHAURASIA	SECOND	57
53	ANIL J MEHTA	SECOND	56
54	NITIN N MAKWANA	SECOND	56
55	RASHMI B VED	SECOND	55
56	NINA S KASARE	SECOND	54
57	SATYAVIJAY P SARMALKAR	SECOND	53
58	USHA R SHAH	SECOND	53
59	LALIT C HINDOCHA	SECOND	52
60	ANOOP S GORADIA	SECOND	52
61	MOHINI D RATHOD	SECOND	51
62	VISHNU C PANCHAL	SECOND	50
63	BANKIM R PARIKH	SECOND	49
64	JAYA M WALA	SECOND	49
65	GHANSHYAM M JOSHI	SECOND	48
66	KETAN M SHROFF	SECOND	48
67	BHARATKUMAR K WAGHELA	SECOND	41
68	DEEPAK N GUNDIGARA	PASS	39
69	SUBHASH N KOTHARI	PASS	37
70	RUMA B CHAUDHARI	PASS	36

અંધ અનુકરણ કરવાથી આત્મવિકાસને બદલે આત્મ-સંકોચ થાય છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN**RESULT****VEDIC VASTU PRAVESH**

No.	Name of the Student	Class	Marks
1	LEENA J CHOKSHI	DISTINCTION	76
2	AMIT P SHARMA	FIRST	74
3	RAVINDRA K MEHTA	FIRST	74
4	HARSHA P MAKWANA	FIRST	73
5	DHARMESH J MEHTA	FIRST	72
6	RITA N DHOLAKIA	FIRST	71
7	ROHAN P SHETTY	FIRST	71
8	VIDYA U SHINDE	FIRST	70
9	KALINDI M BANG	FIRST	69
10	SWTEA V SHAH	FIRST	69
11	KAUSHIKA H BHAGAT	FIRST	68
12	FURNIMA N GANDHI	FIRST	68
13	DEEPA M SOLANKI	FIRST	67
14	JIPSY D RAJGOR	FIRST	67
15	SONAL P THADESWAR	FIRST	67
16	VISHNU C FANCHAL	FIRST	67
17	REENA H GOHIL	FIRST	66
18	MEHUL M BHATT	FIRST	66
19	ANAGHA A DANI	FIRST	66
20	KAVITA H KOTAK	FIRST	65
21	LALIT C HINDOCHA	FIRST	64
22	RAHUL N YADAV	FIRST	64
23	RIYA P SHAH	FIRST	64
24	YACHIKA J MAKWANA	FIRST	64
25	YASMIN S MAKANI	FIRST	64
26	LEENA A SHARMA	FIRST	63
27	LEENA C FURIA	FIRST	63
28	FIYUSH R RAVAL	FIRST	63
29	AMEE M BHATT	FIRST	62
30	KALPANA D CHAVDA	FIRST	62
31	LATA P SHAH	FIRST	62
32	RASHMI B VED	FIRST	62
33	SANJAY N JOGI	FIRST	62
34	SHEEL J SANGHRAJKA	FIRST	62
35	BIBHUTI N CHAUDHARI	FIRST	61
36	REENA N CHHEDA	SECOND	59

શ્રદ્ધા અને વિશ્વાસ સાથે પોતાના કાર્યને વાળગી રહેનારને વહેલી તકે કે મોડી, સુંદર તક સાંપડે જ છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN**RESULT****VEDIC VASTU PRAVESH**

No.	Name of the Student	Class	Marks
37	JAGRUTI H JARIWALA	SECOND	58
38	MUKESH L SHAH	SECOND	58
39	FRASANT Y BHATHENA	SECOND	58
40	RUMA B CHAUDHARI	SECOND	58
41	USHA R SHAH	SECOND	58
42	HITENDRA V GOHIL	SECOND	56
43	NEETA B PATEL	SECOND	53
44	BHAVANA M MAKWANA	SECOND	52
45	JASMINA C SHAH	SECOND	52
46	FRASANT S PANCHAL	SECOND	52
47	BHARATKUMAR K WAGHELA	SECOND	45
48	TEJPAL H GUPTA	SECOND	44
49	JAYA M WALA	PASS	40

VEDIC JYOTISH BHUSHAN

No.	Name of the Student	Class	Marks
1	VAISHALI S ZAVERI	DISTINCTION	92
2	ANURADHA G AGGARWAL	DISTINCTION	86
3	MANISHA K AMRUTE	DISTINCTION	82
4	HEENA C PAREKH	DISTINCTION	81
5	SARIKA S KOTHARI	DISTINCTION	78
6	MITAL D KOTAK	DISTINCTION	78
7	KAMINI S MISTRY	DISTINCTION	77
8	BHAVNA H GANDHI	DISTINCTION	76
9	URMILA R BHATT	DISTINCTION	76
10	ARTI B JETHMALANI	FIRST	75
11	SUNITA R RAJBHAR	FIRST	75
12	ANUPAMA H JANI	FIRST	73
13	NAYNA S MEHTA	FIRST	70
14	DAMYANTI V RAWAT	FIRST	70
15	FARTH V PANDYA	FIRST	70
16	HEMAL Y SANGANI	FIRST	69
17	SEEMA S TIWARI	FIRST	68
18	SACHIN P NAIK	FIRST	67
19	DHARMESH A THAKKAR	FIRST	67
20	KAVITA R CHNEJA	FIRST	65

જે અન્યાય કરે છે તે અન્યાય સહન કરવાવાળા કરતાં પણ વધારે દુર્દશામાં પડે છે - વધારે દુર્દશા ભોગવે છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN**RESULT****VEDIC JYOTISH BHUSHAN**

No.	Name of the Student	Class	Marks
21	RAJESH C MAURYA	FIRST	62
22	KALPESH A SHAH	FIRST	61
23	REKHA T SHUKLA	SECOND	58
24	REKHA R SURTI	SECOND	57
25	FANKAJ N SONI	SECOND	56
26	DIVAYA A SHARMA	SECOND	52
27	KISHOR B PATWA	SECOND	50
28	FRAKASH P SHAH	SECOND	49
29	ANNIE K DOSHI	SECOND	49
30	ALPA M THAKKAR	SECOND	48
31	KAUSHIK R VANJARA	SECOND	46
32	HETAL R BHATT	SECOND	46
33	FARESH B DAMANIA	SECOND	42
34	SMITA R SHAH	SECOND	42
35	SUNIL K BHATT	PASS	40
36	RONAK C TRIVEDI	PASS	36

VEDIC JYOTISH MARTAND

No.	Name of the Student	Class	Marks
1	ANJANA A PALEJA	FIRST	72
2	FALLVI K SANISHVARA	FIRST	67
3	FOOJA P MEHTA	FIRST	66
4	GEETA R BHADORIA	FIRST	65
5	AMAR S UAPDHYAY	FIRST	64
6	VANDNA K PAAKHRIJA	FIRST	63
7	KUSHAM M AGRAWAL	FIRST	62
8	ANITA G SAVALA	FIRST	62
9	HARSHA P SURU	FIRST	62
10	ALPA M SHAH	FIRST	62
11	JIGNESH D SUKL	FIRST	62
12	HETAL A FLOADIA	FIRST	61
13	SAVITA J VAGADIA	FIRST	61
14	CHETANA C SONI	SECOND	60
15	SONAL M RAITHATTHA	SECOND	59
16	SARLA A GOHIL	SECOND	59
17	SONAL S KAMDAR	SECOND	59

સલાહ અને મદદ... કોઈને આપી હોય તો ભૂલી જવી, પણ જે લીધી હોય તો ક્યારેય ન ભૂલવી.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN**RESULT****VEDIC JYOTISH MARTAND**

No.	Name of the Student	Class	Marks
18	HIRAL S SANGHVI	SECOND	58
19	SNEHAL H VINDHARA	SECOND	58
20	VINOD S SHARMA	SECOND	57
21	FALGUNI H RAJGOR	SECOND	55
22	JYOTI H GADA	SECOND	54
23	RAJESH C JOSHI	SECOND	54
24	BOSKY C SURTI	SECOND	54
25	BHARTI N UPADHYAY	SECOND	52
26	SUSHMA M ANGRE	SECOND	51
27	GRISHMA R PANCHAL	SECOND	50
28	INDIRA J RATHOD	SECOND	48
29	SHILPA M ALUR	SECOND	47
30	FURNIMA B RAVAL	SECOND	46
31	MEERA S MANJHI	SECOND	45
32	DEVANG BALVANT MODI	SECOND	44
33	CHETAN K PATEL	SECOND	43
34	KIRAN A VAYCHAL	SECOND	41
35	VIMAL V PAREKH	PASS	40
36	FARESH V SHINDE	PASS	32

VEDIC VASTU BHUSHAN

No.	Name of the Student	Class	Marks
1	ANURADHA G AGGARWAL	DISTINCTION	85
2	KAMINI S MISTRY	DISTINCTION	83
3	HEENA C PAREKH	DISTINCTION	78
4	HEMAL Y SANGANI	FIRST	75
5	SARIKA S KOTHARI	FIRST	74
6	BHAVNA H GANDHI	FIRST	72
7	DAMYANTI V RAWAT	FIRST	69
8	PARTH V PANDYA	FIRST	69
9	URMILA R BHATT	FIRST	69
10	KALPESH A SHAH	FIRST	68
11	ANUPAMA H JANI	FIRST	67
12	SUNITA R RAJBHAR	FIRST	67
13	KISHOR B PATWA	FIRST	66
14	MANISHA K AMRUTE	FIRST	64

तमारी आंख सारी हशे तो दुनिया तमने गमशे अने तमारी जुल सारी हशे तो दुनियाने तमे गमशे.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN**RESULT****VEDIC VASTU BHUSHAN**

No.	Name of the Student	Class	Marks
15	NEHA J GORAIYA	FIRST	64
16	HETAL R BHATT	FIRST	63
17	KAUSHIK R VANJARA	FIRST	62
18	KAVITA R CHNEJA	FIRST	61
19	RAJESH S MEHTA	FIRST	61
20	REKHA R SURTI	FIRST	61
21	ALPA M THAKKAR	SECOND	58
22	RAJESH C MAURYA	SECOND	58
23	HARENDRA J TANNA	SECOND	57
24	SMITA R SHAH	SECOND	57
25	SACHIN P NAIK	SECOND	55
26	SANJAY J VORA	SECOND	54
27	SUNIL K BHATT	SECOND	54
28	MAHESH I GANDHI	PASS	40

VEDIC SWARGYAN GNYATA

No.	Name of the Student	Class	Marks
1	HEENA C PAREKH	DISTINCTION	82
2	REKHA T SHUKLA	DISTINCTION	80
3	MITAL D KOTAK	DISTINCTION	79
4	URMILA R BHATT	DISTINCTION	78
5	SARIKA S KOTHARI	DISTINCTION	77
6	SEEMA S TIWARI	DISTINCTION	76
7	HEMAL Y SANGANI	FIRST	75
8	BHAVNA H GANDHI	FIRST	73
9	MANISHA K AMRUTE	FIRST	73
10	KALPESH A SHAH	FIRST	71
11	FARTH V PANDYA	FIRST	70
12	ANUPAMA H JANI	FIRST	70
13	ANURADHA G AGGARWAL	FIRST	70
14	FANKAJ N SONI	FIRST	70
15	SACHIN P NAIK	FIRST	70
16	DAMYANTI V RAWAT	FIRST	69
17	KAMINI S MISTRY	FIRST	68
18	ALPA M THAKKAR	FIRST	68
19	DIVAYA A SHARMA	FIRST	68

ધાસ અને વિશ્વાસ એકજ વાર તુટે છે, ધાસ તૂટવાથી જીવનું મૃત્યુ થાય છે અને વિશ્વાસ તુટવાથી જીવનનું.

RESULT**VEDIC SWARGYAN GNYATA**

No.	Name of the Student	Class	Marks
20	REKHA R SURTI	FIRST	68
21	SUNITA R RAJBHAR	FIRST	67
22	FARESH B DAMANIA	FIRST	66
23	HARENDRA J TANNA	FIRST	66
24	HETAL R BHATT	FIRST	66
25	FRAKASH P SHAH	FIRST	66
26	KISHOR B PATWA	FIRST	65
27	SUNIL K BHATT	FIRST	65
28	NEHA J GORAIYA	FIRST	64
29	KAVITA R CHNEJA	FIRST	63
30	SANJAY J VORA	FIRST	62
31	SMITA R SHAH	SECOND	59
32	ANNIE K DOSHI	SECOND	56
33	DHARMESH A THAKKAR	SECOND	49
34	RAJESH C MAURYA	SECOND	48
35	KAUSHIK R VANJARA	SECOND	47

**विशुक्री चक्र****आज्जा चक्र****सहस्रभार चक्र**

સારું કામ કરવા માટે ધન કરતાં પણ વધુ સરળ હૃદય અને સંકલ્પની જરૂર છે.

अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस समारोह



આકાશ દર્શન - ૨૦૧૯

સરકારના ઈલેક્શનમાં અને વર્લ્ડ કપના ટેન્શનમાં સમય ઝડપી ગતિથી ગયો. પણ હર વર્ષની જેમ, આ વર્ષે પણ આપણી વૈદિક જ્યોતિષ સંસ્થાનનો આકાશ દર્શન કાર્યક્રમ "Super Hit" રહ્યો.

તા. ૩૦ માર્ચ ૨૦૧૯ એ ઉચિટ, વાડા સ્થળે આકાશ દર્શનના કાર્યક્રમનું આયોજન કરવામાં આવ્યું, જેમાં ૨૦૦ જેટલા જ્યોતિષ જુઝાસુઓએ કાર્યક્રમમાં જોડાવાનો લાહવો લીધો.

નેહરૂ પ્લાનેટોરિયમમાંથી આવેલા ખગોળ શાસ્ત્રીઓએ જ્યોતિષ જુઝાસુ અને તેમનાં પરિવારજનોને સંપૂર્ણ રાત્રિ દરમિયાન અવકાશની યાત્રા કરાવી. અવકાશમાં સ્થિત ગ્રહોનું નિરિક્ષણ, પરાક્રમી મંગળ ગ્રહથી થયું. જેને ટેલિસ્કોપની મદદથી પોતાની નજીક અને સ્પષ્ટ જોઈ ત્યાં ઉપસ્થિત સહુ આનંદિત થયા. દૃશ્ય-શ્રાવ્યના માધ્યમ દ્વારા અવકાશ ઘટનાઓ અને વિવિધ ખગોળીય રચનાઓની માહિતી ખગોળ શાસ્ત્રીઓ દ્વારા આપવામાં આવી.

ખુલ્લા અવકાશની નીચે બેસીને અવકાશમાં સ્થિત ગ્રહો, ઉપગ્રહો, રાશિઓ, નક્ષત્રો, સપ્તર્ષિ તથા ધ્રુવનો તારો વગેરે જોવાનો લાભ બધાએ લીધો.

તારામંડળના મહાકાય કદ માટે જાણીતા એવા ગુરૂ ગ્રહને સહુએ ટેલિસ્કોપની મદદ વડે નિહાળ્યો. તથા પૃથ્વી પરથી નરી આંખે જોઈ શકાય એવા શીતળતાના પ્રતિક ચંદ્ર અને સુંદરતાના પ્રતિક શુક્ર ગ્રહને પોતાની આંખ સમક્ષ જોઈ લોકો આનંદવિભોર થયા.

સંસ્થાના અધ્યાપકો દ્વારા જ્યોતિષ અને વાસ્તુશાસ્ત્રના વિષયો પર રસપ્રદ પ્રવચનોએ લોકોને માહિતગાર કર્યાં. અધ્યાપકોએ શાસ્ત્રને લગતી વિવિધ માહિતીઓથી લોકોને પરિચિત કર્યાં, તથા શાસ્ત્રો પ્રત્યેની ઘણી મુંઝવણો દૂર કરી. સ્વાસ્થ્યનું મહત્વ, આત્માની સમજણ અને ધ્યાન, તથા શરીરમાં સમાયેલા સાત ચક્રની વિશિષ્ટતાનું વર્ણન અધ્યાપક દ્વારા કરવામાં આવ્યું.

સંપૂર્ણ રાત્રિ દરમિયાન ચાલી રહેલા નિઃશુલ્ક કાર્યક્રમમાં ચા-કોફી, અલ્પહાર તથા રાત્રિ ભોજનની વ્યવસ્થા પણ સંસ્થા દ્વારા કરવામાં આવી, જેનો આનંદ સહુએ લીધો.

બ્રહ્મ મુહુર્તમાં ઝૂંકારના નાદે ત્યાં ઉપસ્થિત સહુમાં સકારાત્મક ઊર્જા અને શક્તિનો સંચાર કર્યો. કાર્યક્રમમાં સહભાગી થયેલા બાળકો, તેમના માતા-પિતા તથા પરિવારજનોએ આકાશ દર્શનના કાર્યક્રમની ખૂબ મજા લીધી. અંતે સવાર થતા સૂર્યના દર્શન કરી, મુખ પર શાંતિ અને ઉલ્લાસલઈ સહુએ ઘર તરફ પ્રયાણ કર્યું.

વૈદિક જ્યોતિષ સંસ્થા દ્વારા યોજાતો કાર્યક્રમ એક અવિસ્મરણીય, અનેરો અનુભવ છે અને જે છેલ્લા દસ વર્ષથી એજ ઉત્સાહ અને ઉમંગ સાથે યોજાવામાં આવે છે અને આવા કાર્યક્રમમાં સહભાગી થવું એ એક ગર્વની વાત છે.

કાર્યક્રમને સફળતાપૂર્વક પાર પાડવાનો શ્રેય ત્યાં ઉપસ્થિત નાના-મોટા સહુને જાય છે. તથા કાર્યક્રમના પાયા હેઠળ કામ કરનારી વ્યવસ્થાપક સમિતીનો વૈદિક જ્યોતિષ સંસ્થાન ખરા હૃદયથી આભાર વ્યક્ત કરે છે.

કાર્યક્રમમાં જોડાયેલા જ્યોતિષ જુઝાસુઓના આનંદ અને ઉલ્લાસનું વર્ણન આ એક પાનાના લેખ સાથે કરવું અઘરું છે કારણ કે તે અવિસ્મરણીય અને અદ્ભુત છે.

વૈદિક જ્યોતિષ સંસ્થાન દ્વારા યોજાતા આવા નિઃશુલ્ક કાર્યક્રમો સમાજમાં જ્યોતિષ અને વાસ્તુ જેવા શાસ્ત્રોની ગેરસમજણ દૂર કરવામાં મહત્વનો ભાગ ભજવે છે તથા આપણા પ્રાચીન શાસ્ત્રોને ટકાવી રાખવામાં મદદરૂપ છે. સમાજના કલ્યાણ માટે કામ કરતી સંસ્થામાં જોડાવું અને કાર્યક્રમમાં સહભાગી થવું એ ગર્વની વાત છે.

॥ હરિ ઝૂં ॥

- ઝંખના દવે

જ્ઞાનનું ઘામંડ સહુથી અજ્ઞાનતા છે અને પોતાની અજ્ઞાનતાની સીમાને જાણવું એજ સાચું જ્ઞાન છે.

✦ આકાશ દર્શન ૨૦૧૯ ✦



✦ गुरु पूर्णिमा महोत्सव २०१८ ✦

